भारत की लोक कथाऐं–1

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Bharat Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of India-1)
Cover Page picture : Qutub Meenar, Delhi, India
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of India

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

भारत की लोक कथाऐं–1

इस सीरीज़ में, यानी “देश विदेश की लोक कथाऐं” नाम की सीरीज़ में, मेरा भारत की लोक कथाऐं प्रकाशित करने का कोई इरादा नहीं था। पर मुझे पता चला कि अपने देश भारत की भी बहुत सारी सामान्य लोक कथाऐं हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। सो इस दिशा में भी मैंने ध्यान देना शुरू किया। पर अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस प्रोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है।

दुनियाँ के सात महाद्वीपों में से एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा है। इसमें रूस देश इसको क्षेत्रफल में बड़ा बनाता है और चीन और भारत जैसे देश इसको जनसंख्या में बड़ा बनाते हैं। भारत देश की जनसंख्या चीन देश से दूसरे नम्बर पर आती है। भारत में भी इतने सारे तरह के लोग रहते हैं कि कहते हैं कि यहाँ हर सौ मील की दूरी पर खाना पीना. रहन सहन, भाषा आदि बदल जाते हैं, फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या।

भारत की लोक कथाओं का हम यह पहला संकलन प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में हम तुम्हारे लिये इस देश की कुछ बहुत ही सामान्य और लोकप्रिय लोक कथाऐं प्रस्तुत कर रहे हैं। इनमें से कई लोक कथाऐं शायद तुम लोगों ने सुनी भी होंगी पढ़ी भी होंगी। अगर इस तरीके से नहीं सुनी या पढ़ी होंगी तो किसी और तरीके से सुनी पढ़ी होंगी। ये लोक कथाऐं भारत के किसी एक प्रान्त की लोक कथाऐं नहीं हैं बल्कि सामान्यतया पूरे भारत में कही सुनी पढ़ी जाने वाली लोक कथाऐं हैं।

तो लो पढ़ो ये लोक कथाऐं भारत की। ये इतनी सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 कुँए का चीता[1]

एक बार एक चीता जंगल में आया और चिल्लाया — "मैं बहुत भूखा हूँ, मुझे बहुत भूख लगी है।" यह सुन कर जंगल में रहने वाले तो सारे जानवर काँप गये।

चीता गुर्राया — "डरते क्यों हो। अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम लोगों को इस तरह से न खाऊँ तो तुम लोग खाने के लिये मुझे एक जानवर रोज भेजोगे। और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम सबको खा जाऊँगा।"

सब जानवरों ने आपस में बात की कि जो यह चीता कहता है हमें वह कर देना चाहिये नहीं तो यह हम सबको खा जायेगा। पर सबसे पहले किस जानवर को चीते के पास खाने के लिये भेजा जाये।

हिरन बोला — "मुझे नहीं।"

बकरी बोली — "मुझे नहीं।"

भेड़िया बोला — "मुझे नहीं।"

खरगोश बोला — "मैं जाऊँगा चीते के पास। और तुम लोग देखोगे कि चीता हममें से किसी को नहीं खायेगा।"

[1] The Tiger in the Well – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=163
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[This story is very common and is told and heard in many countries in many flavors.]

कह कर वह कूद कर थोड़ी दूर तक गया और बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा जब तक कि वह पसीने से लथपथ नहीं हो गया। फिर वह चीते के पास दौड़ गया जहाँ वह अपने खाने के लिये किसी जानवर के आने का इन्तजार कर रहा था।

खरगोश चीते से बोला — "चीते जी चीते जी। मुझे बहुत अफसोस है कि मुझे आने में कुछ देर हो गयी। हुआ क्या कि मुझे रास्ते में एक दूसरा चीता मिल गया सो उस चीते से किसी तरह अपने आपको छुड़ा कर मुझे आपके पास आना पड़ा।

वह मुझे खाना चाहता था पर मैंने कहा कि तुम मुझे नहीं खा सकते क्योंकि मैं तो आपका खाना हूँ। बड़ी मुश्किल से किसी तरह मैं उससे जान बचा कर भागा आ रहा हूँ।"

चीता बोला — "दूसरा चीता? कौन सा दूसरा चीता? यहाँ कोई और चीता भी रहता है क्या?"

खरगोश बोला — "वह दूसरा चीता तो बहुत बड़ा था चीते जी। आपसे भी बहुत बड़ा। पर अब तो मैं उससे पीछा छुड़ा कर आ ही गया हूँ सो अब आप मुझे खा सकते हैं।"

चीते ने पूछा — "क्या वह चीता मुझसे भी बड़ा है?"

खरगोश फिर बोला — "जी हाँ सरकार, वह तो आपसे भी बड़ा है। वह मुझे खाना चाहता था पर मुझे उसे बहुत समझाना पड़ा कि मैं तो आपका खाना हूँ। अब आप मुझे जल्दी से खा लीजिये नहीं तो अगर वह यहाँ भी आ गया तो... ।"

चीता कुछ सोच कर बोला — “अगर तुम मुझे उस दूसरे चीते को दिखा दो तो मैं तुम्हें ज़िन्दा छोड़ दूँगा।”

खरगोश बोला — “चलिये मैं अभी आपको उसके पास ले चलता हूँ। अभी तो वह वहीं होगा जहाँ मैं उसे छोड़ कर आया था।”

और यह कह कर वह उसको एक कुँए पर ले गया।

फिर बोला — “आप इस कुँए में झाँक कर देखिये तो आपको वह दूसरा चीता जरूर दिखायी दे जायेगा।”

चीते ने उस कुँए में झाँका तो उस कुँए की तली में उसको एक चीता दिखायी दिया। कम से कम उसको ऐसा लगा कि उस कुँए में एक चीता था।

जंगल के चीते ने पूछा — “तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

कुँए में से एक आवाज आयी — “तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

“यह मेरा जंगल है।”

“यह मेरा जंगल है।”

“नहीं, यह तुम्हारा नहीं मेरा जंगल है।”

“नही, यह तुम्हारा नहीं मेरा जंगल है।”

“मैं तुम्हें खा जाऊँगा।”

“मैं तुम्हें खा जाऊँगा।”

इस तरह जंगल का चीता ऊपर से चिल्लाता रहा और उसकी अपनी आवाज कुँए में से गूँज गूँज कर उसके पास तक वापस आती रही।

उसके ये जवाब उसको गुस्सा दिलाते रहे। जब उसको बहुत गुस्सा आ गया तो वह कुँए वाले चीते को खाने के लिये कुँए में कूद पड़ा और मर गया।

खरगोश खुशी खुशी कूदता हुआ यह खबर जंगल के दूसरे जानवरों को सुनाने चला आया। चीते के मरने पर जंगल में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं और खरगोश की बहुत तारीफ की गयी।

2 अन्धे और हाथी[2]

एक बार हिन्दुस्तान में छह अन्धे लोग रहते थे। हालाँकि वे सब अन्धे थे पर अपनी उम्र के हिसाब से वे सब बहुत अक्लमन्द थे।

बहुत सारे लोग उनसे अपनी परेशानियों का हल निकलवाने के लिये और सलाह लेने के लिये आते थे और उनकी अक्लमन्दी का फायदा उठा कर जाते थे।

दूसरे लोगों को तो वे बहुत ही शान्त लगते थे पर कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन अकेले में वे अपनी अक्लमन्दी के बारे में आपस में बहस न करते हों।

वे बात करते थे और बहस करते थे, वे बहस करते थे और फिर बात करते थे जब तक कि वे लोगों के पूछे हुए सवालों के जवाब पर एक राय नहीं हो जाते थे।

---

[2] The Blind Men and the Elephant – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=18
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
John Godfrey Saxe wrote the poem "The Blind Man and the Elephant" in the 1800's and made it famous. This folktale is based on Indian and Chinese folktales. The poem is in the public domain and able to be used freely. It is interesting to research the poem further and see variations of the story that date back to the Han Dynasty in China from 202 BC - 220 AD. Check out the following site for more information on the history of this delightful tale:
http://www.noogenesis.com/pineapple/blind_men_elephant.html
[This story is very common to tell and to be heard in India. There this story is from Panchtantra. You may read some of the Panchtantra stories in English at
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-panchtantra/index-panchtantra.htm]

एक दिन सुबह सुबह जब तक लोग उनकी सलाह माँगने के लिये उनके पास नहीं आये थे वे एक जंगल के रास्ते पर बात करते हुए चले जा रहे थे।

उनमें से एक आदमी बोला — "मुझे किसी हाथी की आवाज सुनायी दे रही है। हम लोग इन जंगली जानवरों के बारे में कई बार बात करते रहे हैं पर हम कभी इस बात पर एक राय नहीं हुए कि ये लगते कैसे हैं। चलो चल कर आज उसको छू कर देखते हैं और फिर देखते हैं कि कौन सही है और कौन गलत।"

कह कर वे आगे चलते रहे जब तक कि उनको यह नहीं लगा कि वे हाथी के काफी पास तक पहुँच गये हैं।

हाथी बहुत ही खतरनाक जानवर होते हैं क्योंकि जब वे आदमी को सूँघ लेते हैं तो वे बेचारे परेशान हो कर डर जाते हैं। वे अक्सर लोगों पर हमला कर बैठते हैं और उनको कुचल कर मार देते हैं।

अब क्योंकि इन अन्धे लोगों ने कभी हाथी की ताकत और साइज़ को देखा नहीं था इसलिये ये बड़ी शान्ति से चलते हुए उसके पास तक पहुँच गये।

वह हाथी भी तब तक बिल्कुल चुपचाप खड़ा रहा जब तक कि उन लोगों ने उसको छुआ नहीं और उससे कुछ सीख नहीं लिया।

पहला आदमी बहुत लम्बा था सो जब वह उसके छूने के लिये आगे बढ़ा तो वह गिरने लगा। गिरते गिरते उसके हाथ हाथी के एक तरफ जा लगे।

उसने अपने हाथ उसके शरीर पर ऊपर से नीचे और इधर से उधर फिराये और सब तरफ से उसने उसको एकसार सख्त ही पाया। कहीं कहीं उसको कीचड़ भी महसूस हुई।

सन्तुष्ट हो कर वह बोला — "अब मेरी समझ में आ गया कि हाथी दीवार जैसा होता है।"

जब दूसरे अन्धे आदमी के हाथ हाथी से छुए तो उसको हाथी बिल्कुल ही अलग लगा। असल में वह हाथी के अगले वाले हिस्से के सामने खड़ा था।

जैसे ही उसने उसको छुआ तो हाथी ने उसको देखने के लिये अपना मुँह थोड़ा सा उसकी तरफ घुमाया और उस आदमी के हाथ में उसकी सूँड़ आ गयी।

उस आदमी ने उसकी सूँड़ की गोल चिकनी सतह महसूस की। उसने उसको फिर अपने दोनों हाथों के घेरे में ले कर देखा तो ऊपर से तो वह बहुत मोटी थी सो उसके हाथों के घेरे में नहीं आयी पर नीचे जाते जाते वह पतली हो गयी और उसके हाथों के घेरे में आ गयी।

नीचे जा कर वह गोल हो कर खत्म हो रही थी तो वह चिल्लाया — "ओह, यह हाथी तो भाले की तरह से है।"

तीसरा आदमी उसी रास्ते पर चला जा रहा था जिस पर हाथी चल रहा था। जब उसको लगा कि वह हाथी के पास आ गया है सो उसने भी उसको छूने के लिये अपने हाथ बढ़ाये।

उसके छूते ही हाथी ने भी उसको देखना चाहा तो उसने भी अपनी सूँड़ से उसको छुआ। उस आदमी के हाथ हाथी की सूँड़ के चारों तरफ लिपट गये तो हाथी ने भी अपनी सूँड़ इधर उधर हिलायी। इससे उसकी सूँड़ आदमी के हाथों को मलने लगी।

उस आदमी ने पीछे हटना चाहा तो हाथी ने अपनी सूँड़ से उसके गालों को छू लिया। वह बोला — "मुझे लगता है कि हाथी तो साँप जैसा है।"

चौथा आदमी लम्बाई में छोटा था सो वह केवल हाथी की टाँगों तक ही पहुँच पाया। उसने उसके घुटने छुए और उनके चारों तरफ हाथ फिराये तो उसको लगा कि वे तो गोल और बहुत खुरदरे थे।

वह अपने हाथ घुटनों से नीचे जमीन तक ले गया फिर उनको ऊपर तक ले गया जहाँ वे उसके शरीर से जुड़ते थे। कुछ सोच कर वह बोला — "मेरे ख्याल से तो हाथी पेड़ जैसा है।"

पाँचवाँ अन्धा आदमी इन सब लोगों की बातें सुन रहा था और अब तक बिल्कुल चुपचाप खड़ा था। उसने हाथी को अभी तक छुआ भी नहीं था।

अचानक उसने अपने चेहरे पर हवा का बहुत ही मामूली सा झोंका महसूस किया। इसके साथ ही उसको अपने चेहरे के सामने कुछ हिलता सा भी सुनायी दिया।

उसने हाथ बढ़ा कर उस हिलती हुई चीज़ को पकड़ने की कोशिश की तो उसके हाथ में हाथी का कान आ गया। वह तो

बहुत ही पतला था। इतना पतला कि उसके अँगूठे और उँगली के बीच में आ रहा था और वह उसको दबा भी सकता था।

पर वह ऊपर से ले कर नीचे तक और दाँये से ले कर बाँये तक बड़ा इतना था कि उससे काफी हवा आ रही थी। जब वह उस को पकड़ने की कोशिश कर रहा था कि हाथी उसको इधर उधर हिलाता रहा और इससे उसको हवा लगती रही।

यह सोच कर वह बोला — "लगता है कि हाथी पंखे जैसा है।"

छठा अन्धा आदमी हाथी को पूरा पार कर गया। अपने दोस्तों की बात सुन सुन कर उसको हाथी की शक्ल का कुछ कुछ अन्दाजा लग गया था।

वह चलता चलता हाथी के पीछे की तरफ आ गया। तभी हाथी ने अपनी पूँछ हिलायी जो उस आदमी की नाक पर जा कर लगी।

उस आदमी ने तुरन्त ही अपने हाथ आगे बढ़ाये और उसकी पूँछ पकड़ ली। वह लम्बी और पतली थी और उसके किनारे पर बालों का एक गुच्छा था।

जब उसने हाथी की पूँछ खींची तो पीछे से हाथी की हवा निकल गयी। उस आदमी ने हवा में सूँघा और बुरा सा चेहरा बना कर बोला — "हालाँकि यह कहना तो ठीक नहीं लगता पर मुझे तो हाथी एक बदबूदार रस्सी जैसा लगता है।"

जब सब लोग अपना अपना तजुर्बा ले कर घर वापस आ गये तो हाथी की शक्ल के ऊपर बहुत दिनों तक बहस चलती रही।

हर आदमी यही सोचता था कि हाथी के बारे में वह जो कुछ जानता था वही सही था जबकि सभी लोग गलत थे।

यही अक्ल के साथ भी होता है कि सबसे ज़्यादा अक्ल वाले लोग भी कभी कभी केवल कहीं कहीं सही होते हैं और ज़्यादातर गलत होते हैं।
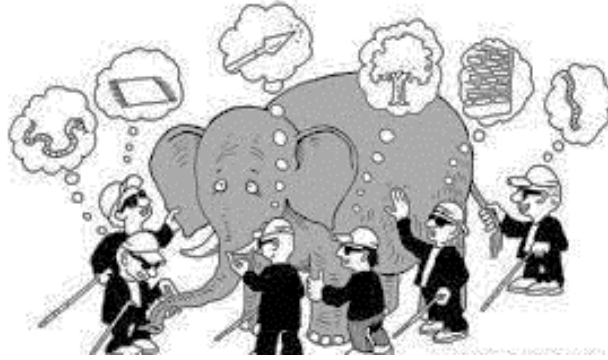
3 बड़ी खरगोश जो भाग गयी[3]

एक बार एक बहुत ही डरपोक मिस बड़ी खरगोश[4] थी। उसको हमेशा ही यह डर लगा रहता था कि उसका कुछ बुरा हो जायेगा। वह हमेशा कहा करती थी कि "अगर आसमान गिर पड़े तो मेरा क्या होगा?"

इस बात को वह इतनी ज़्यादा बार कहा करती थी कि उसको अब यह विश्वास होने लगा था कि आसमान वाकई उसके सिर पर गिर पड़ेगा।

एक दिन वह हरी हरी घास खा रही थी कि एक बड़ा सा फल एक ज़ोर की आवाज के साथ पेड़ से नीचे जमीन पर गिर गया।

एक तो वह बेचारी पहले से ही बहुत परेशान सी थी पर इस फल के गिरने पर तो वह बहुत ही परेशान हो गयी और उसने सिर उठा कर आसमान की तरफ देखा तो उसके मुँह से निकला — "अरे, यह तो आसमान गिर रहा है।"

---

[3] The Hare That Ran Away – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=67
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
This story can be credited to storyteller Marie Shedlock. This version was adapted from "The Hare That Ran Away" in the book "Eastern Stories and Legends" by Marie Shedlock, Copyright 1920. In Ms. Shedlock's version of the story, and in earlier versions, the hare is worried that the "earth is falling in" rather than that the "sky is falling." Perhaps shifting plate tectonics and earthquakes in India where the story originated caused the story to be originally be told with the earth falling in.

[4] Hare is a rabbit like animal but it is a bit bigger in size. See its picture above.

वह वहॉ से जितनी तेज़ भाग सकती थी भाग ली और अपने भाई बड़े खरगोश के घर पहुॅच गयी।

भाई बड़े खरगोश ने पूछा — "अरे तुम कहॉ भागी जा रही हो बहिन बड़ी खरगोश?"

मिस बड़ी खरगोश बोली — "मेरे पास रुकने और बात करने का समय नहीं है भैया आसमान गिर रहा है और मैं दूर भाग रही हूॅ।"

भाई बड़े खरगोश ने उसको भाग कर जाते हुए देख कर दोहराया — "आसमान गिर रहा है?" कह कर वह यह सोच कर हॅसा कि वह कितनी बेवकूफ थी।

वहीं पास में खड़े एक छोटे से खरगोश ने बड़े खरगोश से पूछा — "तुमने क्या कहा?"

बड़ा खरगोश बोला — "मैंने कहा कि आसमान गिर रहा है।" और फिर उसने उस छोटे खरगोश को यह समझाने की कोशिश की कि वह मिस खरगोश कितनी बेवकूफ थी जो यह कह रही थी।

पर तब तक तो बहुत देर हो चुकी थी। छोटे खरगोश ने तो मिस खरगोश को डर कर भागते हुए पहले से ही देख लिया था और अब उसने बड़े भाई को भी यह कहते सुन लिया कि आसमान गिर रहा है। सो वह भी वहॉ से भाग लिया और जो कोई खरगोश उसको रास्ते में मिलता गया उन सबसे भी वह यही कहता गया कि "भागो भागो, आसमान गिर रहा है, आसमान गिर रहा है।

यह सुन कर एक एक कर के वे सारे खरगोश यह कहते हुए इधर उधर भागने लगे कि "आसमान गिर रहा है, आसमान गिर रहा है।"

बड़े बड़े जानवर तो बस यह देख रहे थे कि इतने सारे खरगोश चिल्लाते हुए भागे जा रहे थे कि "आसमान गिर रहा है। आसमान गिर रहा है।"

जल्दी ही वे बड़े जानवर भी यही चिल्लाते हुए भागने लगे। पहले हिरन, फिर भेड़ और फिर हाथी। हर जानवर यही चिल्लाता भागा जा रहा था "आसमान गिर रहा है। आसमान गिर रहा है।"

जानवरों की भीड़ भागते भागते एक अक्लमन्द बूढ़े शेर के पास से गुजरी तो शेर गरजा — "रुक जाओ। बहुत शोर मचा लिया तुम लोगों ने। क्या बात है यह सब क्या हो रहा है?"

हाथी बोला — "आसमान गिर रहा है।"

शेर ने पूछा — "तुमको कैसे पता?"

हाथी बोला — "मैंने चीते के मुँह से सुना।"

जब चीते से पूछा गया कि उसने यह कहाँ से सुना तो वह बोला — "मैंने ऊँट के मुँह से सुना।"

ऊँट बोला — "मैंने जंगली सूअर के मुँह से सुना जिसने भेड़ के मुँह से सुना। भेड़ ने हिरन से सुना और हिरन ने भागते हुए हजारों खरगोशों से सुना।"

खरगोशों ने एक छोटे खरगोश की तरफ इशारा कर दिया कि उन्होंने तो यह उसके मुँह से सुना।

छोटे खरगोश ने कहा कि उसने अपने बड़े भाई से सुना था।

बड़े भाई ने उन सबको वह बता दिया जो कुछ हुआ था। फिर बोला — "मैंने बहिन बड़ी खरगोश को यह कहते सुना तो जरूर था कि आसमान गिर रहा है पर साथ में छोटे खरगोश को यह भी समझाने की कोशिश की कि वह मिस खरगोश कितनी बेवकूफ थी। पर उसने तो मेरी पूरी बात ही नहीं सुनी और यह अफवाह उड़ा दी।"

शेर ने मिस बड़ी खरगोश से कहा — "अब यह बात तुम्हारे ऊपर आ कर पड़ती है। अब तुम बताओ कि तुमने किससे सुना?"

मिस बड़ी खरगोश बोली — "मैंने यह किसी से सुना नहीं बल्कि मैंने तो खुद आसमान को गिरते हुए देखा।"

शेर ने पूछा — "तुमने आसमान को गिरते हुए देखा? कहाँ?"

"पेड़ के पास।"

"आओ मेरे साथ। चलो हम साथ साथ देखेंगे कि वहाँ क्या गिरा?"

"मैं नहीं जाती मुझे डर लगता है।"

तब शेर ने मिस बड़ी खरगोश को उठा कर अपनी पीठ पर रखा और बोला — "चलो हम दोनों साथ साथ चलेंगे और देखेंगे कि आसमान कहाँ गिरा है। तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा।"

फिर वह उस पेड़ के पास गया जिस पेड़ से फल टूट कर गिरा था और उसे उस मिस बड़ी खरगोश को दिखाया कि किस तरह पेड़ से केवल एक फल गिरा था जिसकी केवल आवाज से वह डर गयी थी। आसमान नहीं गिरा था।

शेर बोला — "अब जो मैं कहता हूँ उसे मेरे बाद दोहराओ "आसमान नहीं गिर रहा है।"

मिस बड़ी खरगोश ने दोहराया — "आसमान नहीं गिर रहा है।"

शेर मिस बड़ी खरगोश को अपनी पीठ पर बिठाये वापस जानवरों की भीड़ की तरफ मुड़ा और मिस बड़ी खरगोश से बोला — "एक बार फिर कहो "आसमान नहीं गिर रहा है।"

मिस बड़ी खरगोश फिर बोली — "आसमान नहीं गिर रहा है।"

बस उसके बाद एक एक कर के फिर सब जानवर गाने लगे — "आसमान नहीं गिर रहा है, आसमान नहीं गिर रहा है।"

और यही गाते गाते वे सब अपने घरों को जाने लगे।

और आसमान नहीं गिरा।

4 गीदड़ और मगर[5]

एक छोटा गीदड़ शैलफिश[6] खाने का बड़ा शौकीन था, खास कर के केंकड़ों का और दूसरे समुद्री सीपी जानवरों का।

एक बार उसने बिना कुछ देखे हुए अपना पंजा नदी में एक शैलफिश पकड़ने के लिये रखा – जो तुमको तो कभी नहीं करना चाहिये। तो ज़रा सोचो तो कि क्या हुआ....?

एक मगर उस समय नदी के किनारे कीचड़ में बैठा हुआ था। उसकी ऑखें कीचड़ से ढकी हुई थीं पर उसने अपनी जीभ पर कुछ महसूस किया सो "फटाक"। मगर ने गीदड़ का पंजा अपने जबड़े में दबा लिया।

अब गीदड़ को पता चल गया कि मगर अपना शिकार कैसे पकड़ता है। वह पहले उसको पकड़ता है, फिर वह उसको नदी में खींचता है, फिर वह उसको कीचड़ के पानी में घुमा घुमा कर वहीं डुबो देता है और जो कुछ भी वह पकड़ लेता है वह वही खा लेता है।

---

[5] The Jackal and the Alligator – a folktale from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=197
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[6] Shellfish – popular name for certain edible mollusks, for example, oysters, clams, and scallops etc

गीदड़ को अब बहुत जल्दी सोचना था कि वह उससे कैसे बचे नहीं तो वह मगर का शिकार बन जाता।

सो उसने हॅसना शुरू किया — "बूढ़ा मगर बहुत होशियार नहीं है। मुझे बहुत खुशी है कि मगर ने वह डंडी पकड़ ली है जो मैंने अपने पंजे की जगह पानी में डाली थी। मुझे उम्मीद है कि मगर को अपने मुॅह में लकड़ी के फॉसें बहुत अच्छी लगेंगी।"

मगर नदी के किनारे दूर कीचड़ में छिपा हुआ था सो वह यह नहीं देख पाया कि उसने क्या पकड़ा है।

गीदड़ की बात सुन कर मगर को यह तो पता चल गया कि निश्चित रूप से उसको लकड़ी की फॉसें नहीं खानी सो उसने अपना मुॅह खोल दिया और गीदड़ उसके मुॅह में से निकल गया।

मगर के मुॅह में से निकल कर गीदड़ फिर हॅस दिया — "ओ मिस्टर मगर, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद जो तुमने मुझे अपने मुॅह में से बाहर जाने दिया। तुम तो बहुत ही दयालु हो।"

यह सुन कर मगर तो अपने आपे से बाहर हो गया और गीदड़ वहॉ से जितनी जल्दी भाग सकता था भाग गया। मगर ने आगे मुॅह कर के उसको पकड़ना भी चाहा पर वह उसको पकड़ नहीं पाया।

इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि कई बार उसने अपनी पूॅछ पानी में फटकारी।

उसके बाद गीदड़ फिर एक हफ्ते तक नदी पर नहीं आया। पर उसका मन फिर से शैलफिश खाने को करने लगा। तो उसको तो बस नदी पर जाना था और खाने के लिये एक शैलफिश ढूँढनी थी।

सो वह फिर नदी के किनारे आया और नदी के किनारे पर चारों तरफ देखा पर उसको कोई ऐसा दिखायी नहीं दिया जो बूढ़े मगर जैसा दिखायी देता हो।

पर फिर भी वह कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। सो गीदड़ अपने आपसे ही ज़ोर से बोला — "जब मुझे किनारे पर कोई केंकड़ा दिखायी नहीं देता या मुझे वे पानी में से बाहर की तरफ झाँकते दिखायी नहीं देते तब उनको पकड़ने के लिये मैं अपना पंजा पानी में डालता हूँ।"

उस समय वह बूढ़ा मगर नदी की तली में कीचड़ में छिपा हुआ था। उसने सोचा — "अगर मैं ज़रा सी अपनी नाक पानी के बाहर निकाल लूँ तो वह केंकड़े जैसी लगेगी। फिर जब उसको पकड़ने के लिये गीदड़ अपना पंजा पानी में रखेगा तो मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

यह सोच कर मगर ने अपने मुँह का अगला हिस्सा बस ज़रा सा ही पानी के बाहर निकाला और गीदड़ के पानी में पंजा रखने का इन्तजार करने लगा।

गीदड़ ने भी यह सब देख लिया और बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहाँ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और जाना पड़ेगा।"

कह कर वह फिर हँसा और बोला — "मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और फिर जितनी तेज़ी से वह वहाँ से भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं सका। इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने फिर कई बार अपनी पूँछ पानी में फटकारी।

उसके बाद गीदड़ फिर दो हफ्ते तक वहाँ नहीं आया। पर दो हफ्ते बाद फिर उसको नदी के किनारे की शैलफिश खाने की इच्छा हो आयी। असल में वे खाने में इतनी स्वादिष्ट होती थीं कि उससे रुका नहीं गया और वह फिर नदी के किनारे पहुँच गया उनको खाने के लिये।

उसने फिर नदी के किनारे इधर उधर देखा पर उसको वहाँ मगर जैसा कोई दिखायी नहीं दिया पर अब उसने यह सीख लिया था कि अब उसे कोई खतरा मोल नहीं लेना।

सो गीदड़ फिर अपने आपसे ज़ोर से बोला — "जब मैं किनारे पर कोई केंकड़ा नहीं देखता या उनको पानी में से बाहर झाँकते नहीं देखता तब मैं उनको पानी के अन्दर से बुलबुले बनाते देखता हूँ।

वे बुलबुले मुझे यह बताते हैं कि वे रसीले केंकड़े कहाँ हैं। फिर मैं अपना पंजा पानी में डाल कर उनको पकड़ लेता हूँ और बस उन्हें खा जाता हूँ।"

वह बूढ़ा मगर उस समय भी नदी की तली में कीचड़ में छिपा हुआ था। उसने सोचा — "अगर मैं अपनी नाक से थोड़े से बुलबुले पानी में बना दूँ तो वह केंकड़े जैसे लगेंगे।

फिर जब गीदड़ उनको पकड़ने के लिये अपना पंजा पानी में रखेगा तो मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

यही सोच कर मगर ने अपनी नाक से पानी में बुलबुले बनाने शुरू कर दिये – पौप, पौप, पौप।

छोटे गीदड़ ने उन बुलबुलों को देखा तो बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहाँ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और जाना पड़ेगा। अब इसके बाद मैं यहाँ नहीं आऊँगा।"

कह कर वह फिर हँसा और बोला — "और हाँ मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और फिर जितनी तेज़ी से वहाँ से वह भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं पाया। इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने फिर कई बार

अपनी पूँछ पानी में फटकारी और इस बार तो अपना मुँह भी कई बार खोला और बन्द किया और पैर भी पटके।

उसके बाद गीदड़ उस नदी के किनारे फिर नहीं गया हालाँकि उसकी केंकड़े खाने की बहुत इच्छा हो रही थी।

अब उसने एक बागीचा ढूँढ लिया था जहाँ जंगली अंजीर के पेड़ लगे हुए थे। उन पेड़ों की अंजीरें बहुत ही स्वादिष्ट और मीठी थीं सो वह उस बागीचे में पेड़ों से गिरी हुई अंजीरें खाने के लिये रोज जाने लगा।

बूढ़े मगर को भी यह पता चल गया कि छोटा गीदड़ अब नदी पर नहीं आता बल्कि अपना खाना खाने बागीचे जाने लगा है तो उसने भी उसी बगीचे में जाने का निश्चय किया कि वह भी वहीं जा कर उस छोटे गीदड़ के आने का इन्तजार करेगा।

उसको उस गीदड़ को जरूर खाना था चाहे उसको उसे आखीर में ही क्यों न खाना पड़े। सो वह नदी में से बाहर निकला और बागीचे की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर उसने अंजीर का सबसे बड़ा पेड़ ढूँढा और उसके नीचे अंजीरों का एक बहुत बड़ा ढेर बनाया और उसके पीछे छिप कर बैठ गया।

रोज की तरह गीदड़ उस दिन भी वहाँ आया पर अब तक वह होशियार रहना सीख गया था सो जब उसने अंजीरों का एक बहुत

बड़ा ढेर देखा तो उसने सोचा कि यह ढेर तो मगर के छिपने के लिये एक बहुत ही अच्छी जगह हो सकती है।

सो वह ज़ोर से बोला — "छोटी छोटी अंजीरें जो मुझे सबसे अच्छी लगती हैं। ये वह वाली अंजीरें होती हैं जो मोटी, पकी हुई और रसीली होती हैं और जो जब हवा उनको इधर उधर हिला कर गिराती है तो हवा से वे अपने आप पेड़ से गिर जाती हैं। ये ढेर में पड़ी अंजीरें तो ठीक नहीं हैं खराब हैं।"

मगर ने सोचा — "मुझे थोड़ा सा हिलना पड़ेगा ताकि ऐसा लगे कि हवा इन अंजीरों को हिला रही है। जब वह छोटा गीदड़ इन अंजीरों को हिलते देखेगा तो इनको खाने आयेगा तब मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

सो मगर थोड़ा सा हिला जिससे वे अंजीरें इधर उधर उड़ कर गिरनी शुरू हुईं।

छोटे गीदड़ ने उन अंजीरों को इधर उधर गिरते हुए देखा तो बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहाँ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और ही जाना पड़ेगा।"

वह फिर अपनी हँसी हँसा और बोला — "और हाँ मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और यह कह कर फिर जितनी तेज़ी से वह वहाँ से भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं पाया। इस बात से वह फिर इतना गुस्सा हुआ कि उसने कई बार अपनी पूँछ फटकारी, कई बार अपना मुँह खोला और बन्द किया, कई बार पैर भी पटके और इस बार तो अपनी आँखें भी घुमायीं पर कुछ नहीं हुआ।

पर मगर आज इतना गुस्सा और भूखा था कि वह गीदड़ का और इन्तजार नहीं कर सका। वह उसके घर तक पहुँच गया। उसने अपने बड़े शरीर से गीदड़ के घर के छोटे से दरवाजे में घुसने की पूरी कोशिश की।

जब वह उसके घर के अन्दर पहुँच गया तो वह घूमा और दरवाजे की तरफ मुँह कर के अपना बड़ा सा मुँह खोल कर गीदड़ के घर आने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर बाद गीदड़ घर आ गया पर वह जानता था कि कहीं जाने से पहले इधर उधर देखना चाहिये सो उसने अपने घर में घुसने से पहले अपने घर के सामने की जमीन देखी।

उसको लगा कि उसके ऊपर से कोई भारी सी चीज़ घिसट कर उसके घर के अन्दर तक चली गयी है।

फिर उसने अपना दरवाजा देखा तो उसने देखा कि उसका दरवाजा भी दोनों तरफ से कुछ टूटा हुआ था। इससे उसको लगा कि कोई काफी बड़ी चीज़ उसके अन्दर से हो कर गयी थी। उसने सोचा कि यकीनन ही मगर उसके घर के अन्दर है।

गीदड़ ज़ोर से चिल्लाया — "अरे बड़ी अजीब सी बात है। जब भी मैं घर आता हूँ तो मेरा घर मुझसे बोलता है। मेरा स्वागत करता है पर आज इसे क्या हुआ? अरे ओ घर, रोज की तरह तुम मुझसे हलो क्यों नहीं बोलते?

तुम तो हमेशा ही यह कहते हो "हलो छोटे गीदड़। इस घर में स्वागत है तुम्हारा।" और इससे मुझे लगता कि यहाँ सब ठीक है और मैं अन्दर आ जाता हूँ। पर आज तुम मुझसे बोले ही नहीं सो मुझे लगता है कि मेरे घर के साथ कुछ गड़बड़ है।"

बूढ़े मगर ने सोचा — "मुझे इस घर की तरह से बात करने का बहाना करना चाहिये ताकि छोटा गीदड़ घर के अन्दर आ सके।"

सो वह बड़ी मीठी सी आवाज में बोला — "हलो छोटे गीदड़। इस घर में स्वागत है तुम्हारा।"

यह सुन कर तो छोटा गीदड़ बहुत ही डर गया। अब उसको पूरा विश्वास हो गया था कि घर के अन्दर वह मगर ही था। उसको यह भी पता चल गया कि वह मगर उसको खाये बिना नहीं रहेगा।

छोटे गीदड़ ने सोचा — "अबकी बार मुझे इस मगर का खात्मा कर ही देना चाहिये इससे पहले कि यह मेरा खात्मा करे।

सो वह चिल्ला कर बोला — "मुझसे बात करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद ओ मेरे छोटे से घर। मुझे तुम्हारी आवाज सुन कर बहुत खुशी हुई।

मैं अभी अन्दर आता हूँ। मैं ज़रा आग जलाने के लिये थोड़ी सी लकड़ी ले आऊँ ताकि मैं अपना खाना पका सकूँ। फिर मैं अपने दोस्तों को भी खाने के लिये बुलाऊँगा।"

यह सुन कर मगर ने सोचा — "वाह यह तो बड़ा ही अच्छा रहेगा। गीदड़ के साथ साथ मुझे उसके दोस्त भी खाने के लिये मिलेंगे।" ऐसा सोच कर उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और शाम के खाने का इन्तजार करने लगा।

उधर छोटा गीदड़ वहाँ से जंगल चला गया। उसने बहुत सारी जलाने वाली लकड़ी इकट्ठी की और ला कर अपने दरवाजे पर और घर के चारों तरफ उनका ढेर लगा दिया।

फिर उनमें उसने आग लगा दी। जब उन लकड़ियों ने आग पकड़ ली तब वह अपनी हँसी हँसा और बोला — "मुझे छोड़ देने के लिये धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।"

आग जलती रही जब तक कि उसने मगर को पूरी तरह भून कर नहीं रख दिया। उसके बाद छोटे गीदड़ ने अपने दोस्तों को बुलाया और मगर की दावत की। अब वह नदी पर शैलफ़िश और बागीचे में अंजीर खाने के लिये आजाद था।

5 शेर बनाने वाले[7]

बहुत पहले की बात है कि एक गाँव में चार ब्राह्मण बालक रहते थे। वे आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे और सभी बहुत अक्लमन्द थे। पर जिस तरीके से उनकी अक्लमन्दी उनके बर्ताव से झलकती थी वह सबकी अलग अलग थी।

उनमें से तीन दोस्त तो बहुत पढ़े लिखे थे। उनको जो कुछ पढ़ने को मिल जाता वे वही पढ़ लेते और आपस में कई बातों पर बहस करते। पर उनके पास दुनियाँदारी की अक्ल की बहुत कमी थी।

चौथे दोस्त के पास स्कूल की पढ़ाई तो ज़्यादा नहीं थी पर उसके पास सामान्य ज्ञान[8] बहुत था। जब वह छोटा था तभी से उसको काम करना पड़ा था इसलिये न तो वह स्कूल जा सका और न ही वह ज़्यादा पढ़ लिख सका।

पर पढ़ाई लिखाई और अक्लमन्दी किसी की क्या सहायता कर सकती है जहाँ लोग बहुत गरीब हों और जहाँ लोग पैसा न कमा सकते हों।

---

[7] The Lion Makers – a story from Panchtantra from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=69
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
Intelligence and education is baseless without common sense. This is the subject matter of this story. [Other Panchtantra stories can be read in English at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-panchtantra/index-panchtantra.htm]

[8] Translated for the words "Common Sense"

सो उन लोगों ने दूर देश में अपनी किस्मत आजमाने की सोची और वे एक लम्बे सफर पर निकल पड़े।

कुछ दूर जाने के बाद सबसे बड़े दोस्त ने उस चौथे दोस्त की तरफ देखते हुए कहा — "हममें से एक हमारे जैसा नहीं है। वह हमारे जैसा पढ़ा लिखा नहीं है उसके पास तो केवल सामान्य ज्ञान ही है। बिना पढ़ाई लिखाई के कोई आदमी अमीर नहीं बन सकता। मुझे नहीं लगता कि हमको अपनी कमाई उसके साथ बॉटनी चाहिये।"

दूसरे दोस्त ने पहले दोस्त की तरफ देखा और बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। हमारा यह दोस्त पढ़ा लिखा नहीं है। सो बजाय इसके कि हम अपनी अक्लमन्दी से कमायी हुई कमाई इसके साथ बॉटें हमको इसे घर भेज देन चाहिये।"

तीसरा दोस्त बोला — "नहीं नहीं। दोस्तों से बर्ताव करने का यह कोई तरीका नहीं है। हम लोग बचपन से ही एक साथ रहे हैं। इसलिये हम आज भी इसको अपने साथ ही रखेंगे और अपनी कमाई में से बराबर का हिस्सा इसको देंगे।"

काफी बहस के बाद पहले दो दोस्त इस बात पर राजी हो गये कि वे अपने चौथे दोस्त को घर वापस नहीं भेजेंगे और उन्होंने उस चौथे दोस्त को भी अपने साथ ही रखा।

चलते चलते वे एक ऐसी जगह आये जहॉ एक मरे हुए शेर की हड्डियॉ पड़ी हुई थीं।

पहला दोस्त बोला — “यही समय है जब हम अपने बे पढ़े लिखे दोस्त को इस बात का सबूत दे सकते हैं कि हम कितना जानते हैं। ये किसी मरे हुए जानवर की हड्डियाँ हैं। देखते हैं कि जो कुछ हमने सीखा है उससे हम इसको ज़िन्दा कर सकते हैं या नहीं।”

वह फिर बोला — “मुझे मालूम है कि हड्डियों को किस तरह जोड़ कर उसका ढाँचा बनाया जाता है।”

इतना कह कर उसने वहाँ पड़ी हड्डियों को जोड़ कर उसका ढाँचा बना दिया।

दूसरा दोस्त भी अपनी पढ़ाई दिखाने में पीछे नहीं रहना चाहता था सो बोला — “मैं इस हड्डी के ढाँचे के ऊपर माँस चढ़ा सकता हूँ और उसके ऊपर खाल चढ़ा सकता हूँ।”

इतना कह कर उसने उस ढाँचे के ऊपर माँस और खाल चढ़ा दी और उसमें खून दौड़ा दिया। अब वह शेर बन गया था। जैसे ही उसने यह किया तो तीसरा दोस्त बोला कि मैं इसमें जान डाल सकता हूँ।

जैसे ही तीसरा दोस्त यह बोला तो चौथा दोस्त बोला — “दोस्तो, मैं मानता हूँ कि तुम लोगों ने किताबों और स्कूल में मुझसे बहुत ज़्यादा पढ़ा लिखा और सीखा है पर मेरा सामान्य ज्ञान यह कहता है कि हमें इस शेर को ज़िन्दा नहीं करना चाहिये।

मेरा विश्वास है कि इसको ज़िन्दा करने में हम लोगों की कोई अक्लमन्दी नहीं हैं। अगर यह वाकई ज़िन्दा हो गया तो यह हमको खाना चाहेगा। क्या तुम लोग यह चाहते हो कि हम लोग शेर का शिकार बनें?"

यह सुन कर पहले तीन दोस्त नाराज हो गये। वे बोले — "यह जानते हुए भी हमने तुमको अपने साथ आने दिया कि तुम हम सब में सबसे कम पढ़े लिखे हो। तुम बहुत ही कम जानते हो फिर भी तुम यह दावा कर रहे हो कि तुम हमसे ज़्यादा जानते हो?"

चौथा दोस्त बोला — "मैंने वही कहा जो मेरे सामान्य ज्ञान ने मुझसे कहा। पर अगर तुम लोग इसी बात पर अड़े हुए हो कि तुम लोगों को इसको ज़िन्दा करना है तो ज़रा रुको पहिले मैं ज़रा पेड़ पर चढ़ जाऊँ।"

कह कर वह चौथा दोस्त तुरन्त ही पास में लगे एक पेड़ पर चढ़ा गया।

जब वह चौथा दोस्त पेड़ पर चढ़ गया तो तीसरे दोस्त ने उस शेर के शरीर में आत्मा डाल दी। जैसे ही शेर के शरीर में आत्मा पड़ी उसने साँस लेना शुरू किया और ज़ोर से दहाड़ मारी और उन तीनों दोस्तों को खा लिया जो जमीन पर खड़े थे।

भरे पेट शेर का पेड़ पर चढ़ना मुश्किल था सो वह चौथे दोस्त को नहीं खा सका। वह चौथा दोस्त जो बे पढ़ा लिखा था केवल

अपने सामान्य ज्ञान की सहायता से बच कर अपने गॉव वापस लौट आया।

6 दोस्ती का जादू[9]

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक झील के किनारे चार बहुत अच्छे दोस्त रहते थे – चूहा, कौआ, कछुआ और हिरन।

रोज वे उस झील पर पानी पीने के लिये आया करते थे और रोज वे एक दूसरे को अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाया करते थे।

एक दिन हिरन वहाँ पानी पीने नहीं आया तो चूहा, कौआ और कछुआ तीनों उसके बारे में चिन्ता करने लगे।

कौआ बोला — "आज सुबह मैंने जंगल में एक शिकारी देखा था। हो सकता है कि हिरन उसी से घायल हो गया हो।"

चूहा बोला — "तो ऐसा करो कि तुम जंगल के ऊपर उड़ो और हमारे दोस्त हिरन को ढूँढने की कोशिश करो।"

सो कौआ जंगल के ऊपर उड़ चला। कुछ पल बाद ही उसने हिरन को रस्सी से बने एक जाल में फँसा देखा।

वह तुरन्त ही वापस अपने दोस्तों के पास उनकी सहायता लेने के लिये आया और उनको बताया कि हिरन तो रस्सी से बने एक जाल में फँसा पड़ा है। अब उसको उस जाल से छुड़ाना है।

सारे जानवर वहाँ पहुँच गये जहाँ हिरन फँसा पड़ा था। चूहे ने अपने तेज़ दाँतों से हिरन के जाल को काटना शुरू कर दिया।

---

[9] The Magic of Friendship – a story from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=226
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

कौए ने अपनी चोंच से रस्सियों के उन टुकड़ों को हटाना शुरू कर दिया। और कछुए ने हिरन से बातें करना शुरू कर दिया ताकि वह परेशान न हो।

हिरन ने पूछा — "तुम लोग यहाँ क्यों आये हो?"

कछुआ बोला — "दोस्त लोगों को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिये। हम तुम्हारे दोस्त हैं और हम तुमको शिकारी के जाल से आजाद कराने के लिये आये हैं।"

उसी समय शिकारी अपना जाल देखने के लिये वहाँ आया तो कछुआ चिल्लाया — "चलो यहाँ से जल्दी भागो।"

कौआ वहाँ से तुरन्त ही उड़ गया। हिरन का जाल कट चुका था सो वह भी अपने रास्ते भाग गया। चूहा पास की झाड़ियों में जा कर छिप गया। पर कछुए ने अपना एक पैर उठा कर जमीन पर रखा ही था कि शिकारी वहाँ आ गया।

शिकारी बोला — "अरे मेरा जाल तो खाली है। पर चलो कुछ न होने से तो एक कछुआ ही अच्छा है। आज मैं कछुए का ही सूप बना कर खाऊँगा।"

कह कर उसने कछुए के पैर बाँधे ताकि वह भाग न सके, उसको उठाया और उसको ले कर घर चल दिया।

हिरन बोला — "अब हम क्या करें? तुम सब लोगों ने मेरी सहायता की अब हम सबको मिल कर कछुए की सहायता करनी चाहिये।"

सो हिरन भाग कर शिकारी के आगे हो लिया। वह उसके रास्ते में जा कर ऐसे लेट गया जैसे मर गया हो।

कौआ भी उड़ा और उड़ कर शिकारी के आगे निकल गया और हिरन के सिर पर जा कर बैठ गया।

शिकारी ने रास्ते में मरा हुआ हिरन पड़ा देखा तो कछुए को जमीन पर रख दिया और हिरन को लेने चल दिया।

जैसे ही शिकारी ने कछुए को जमीन पर रखा चूहा दौड़ कर कछुए के पास गया और जिस रस्सी से शिकारी ने उसके पैर बाँध रखे थे उसे काट दिया।

कछुआ और चूहा रास्ते पर से हट कर जंगल में जा कर छिप गये। उधर कौआ हिरन के ऊपर से उड़ गया और हिरन भी शिकारी से बच कर उठ कर भाग लिया।

चारों दोस्त फिर से झील के किनारे पानी पीने के लिये मिले और वहाँ जा कर अपने पुराने दोस्तों को अपने बचने की कहानी सुनायी।

हिरन के भाग जाने के बाद शिकारी कछुए को लेने पहुँचा पर कछुआ तो वहाँ से कभी का जा चुका था।

उसने कहा — "लगता है यहाँ तो कोई जादू काम कर रहा है। आज जंगल में भी मुझे केवल कछुआ ही मिल पाया औ यहाँ से तो वह भी भाग गया।"

और यह कहते हुए वह कोई और शिकार पकड़ने जंगल की तरफ चला गया।

शिकारी का कहना ठीक था। उस दिन जंगल में वाकई कोई जादू काम कर रहा था और वह था दोस्ती का जादू।

7 बन्दर और मगर[10]

मगर की पत्नी चिल्लायी — "देखो देखो, मुझे एक बन्दर दिखायी दे रहा है। मुझे उसका कलेजा खाना है। मुझे जब तक अच्छा नहीं लगेगा जब तक तुम मुझे एक बन्दर ला कर नहीं दोगे।"

मगर अपनी पत्नी को खुश देखना चाहता था सो वह नदी में तैर गया और एक बन्दर को देखा जो नदी के किनारे बैठा था।

उसने बन्दर से कहा — "मैं एक ऐसे टापू को जानता हूँ जहाँ बहुत मीठे मीठे आम होते हैं।"

बन्दर ने मगर की मीठी मीठी आवाज सुनी तो वह बोला — "मुझे तो आम बहुत अच्छे लगते हैं। कहाँ हैं वे? मुझे उनको देखना है। क्या वे पके हुए हैं?

मैं उनको छूना चाहता हूँ। क्या वे सख्त हैं या मुलायम? क्या उनकी खुशबू बहुत अच्छी है? क्या वे मीठे हैं या खट्टे? मुझे दिखाओ कि वे कहाँ हैं।"

---

[10] The Monkey and the Crocodile – a story from Panchtantra, from India, Asia.
Adapted from the Web Site :
http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=148
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[My Note: This story is very common in the whole India and is heard and told in several flavors in other countries too. This flavor is quite different from the one which is very popular there.]

मगर मुस्कुराया और बोला — “आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उस टापू पर लिये चलता हूँ।” बन्दर मगर की पीठ पर बैठ गया और मगर पानी में तैर गया।

अचानक मगर पानी के अन्दर जाने लगा। जब बन्दर के शरीर को पानी ने छुआ तो वह घबरा कर बोला — “यह तुम क्या कर रहे हो?”

मगर बोला — “मेरी पत्नी तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है इसलिये मैं तुमको उसके पास ले जा रहा हूँ।”

बन्दर बोला — “ज़रा रुको। तुमको तो मुझसे यह बात पहले ही कह देनी चाहिये थी कि तुमको मेरा कलेजा चाहिये। उसको तो मैं पेड़ पर अपने घर में ही छोड़ आया हूँ। अगर तुम मुझे मेरे घर वापस ले चलो तो मैं उसको तुम्हारे लिये ले कर आता हूँ।”

मगर इतना होशियार नहीं था कि वह बन्दर की बात समझ सकता सो वह किनारे की तरफ लौट पड़ा। वहाँ पहुँच कर वह बोला — “तुम जल्दी अपना कलेजा ले कर आओ तब तक मैं यहाँ तुम्हारा इन्तजार करता हूँ।”

मगर के किनारे पर पहुँचते ही बन्दर उसकी पीठ से कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और बोला — “अब तुमको बहुत देर तक इन्तजार करना पड़ेगा। मेरा कलेजा तो मेरे शरीर के अन्दर है और वह वहीं रहेगा। मुझे अफसोस है कि मैं उसको बाहर निकाल कर तुम्हें नहीं दे सकता।”

मगर बेचारा अपने घर वापस लौट गया।

बाद में बन्दर उन नारंगी आमों के बारे में सोचता रहा कि वे आम कैसे होंगे। उसने कुछ भूरे पत्थर नदी में से निकले देखे तो उनके ऊपर से कूदता हुआ वह उस टापू पर चला गया।

आम बहुत रसीले थे। वह उनको तब तक खाता रहा जब तक कि उसका खूब पेट नहीं भर गया।

जब वह आम खा कर लौट रहा था तो उसने मगर को एक पत्थर पर लेटे हुए देखा। अब वह अपने घर कैसे वापस जाये क्योंकि उसको तो उस पत्थर के ऊपर से हो कर जाना था सो उसको एक तरकीब सूझी।

वह बोला — "हलो पत्थर।"

बन्दर ने पत्थर के जवाब का इन्तजार किया पर उसको कुछ सुनायी नहीं दिया।

बन्दर फिर बोला — "जब मैं तुमसे बात करता हूँ तो तुम मुझ से हलो कहते हो। आज क्या हुआ?"

मगर ने बन्दर की आवाज सुनी तो उसने सोचा — "अगर मैं उसका उसके सवाल का जवाब नहीं दूँगा तो उसको पता चल जायेगा कि मैं यहाँ हूँ और फिर वह मुझसे बच कर भाग जायेगा।

फिर मैं उसको अपनी पत्नी के लिये पकड़ नहीं पाऊँगा और मुझे तो उसको पकड़ना ही है इसलिये मुझे इसको जवाब तो देना ही चाहिये।"

सो उसने जवाब दिया — “हलो बन्दर।”

बन्दर बोला — “मगर तुम बिल्कुल भी होशियार नहीं हो। तुम्हें मालूम नहीं कि पत्थर बात नहीं किया करते।”

मगर बोला — “पर मैं कम से कम इतना होशियार हूँ कि तुम को पकड़ सकूँ। अब तुम मुझसे बच कर घर नहीं जा सकते।”

बन्दर बोला — “शायद तुम ठीक कहते हो। ठीक है मैं अपने आप ही तुम्हारे मुँह में आ जाता हूँ। तुम अपना मुँह खोलो और मैं तुम्हारे मुँह में कूद जाता हूँ।”

यह सुन कर मगर ने अपना मुँह खोल दिया। पर शायद तुम्हें पता होगा कि जब मगर अपना मुँह खोलता है तो वह अपनी आँखें बन्द कर लेता है।

बस जब मगर ने अपना मुँह खोला तो अपनी आँखें बन्द कर लीं और बन्दर उसकी नाक पर पैर रख कर नदी के उस पार पहुँच गया।

जब तुम जंगल में होते हो तो तुम बन्दर की हँसी और बातें अभी भी सुन सकते हो कि बहुत साल पहले उसने मगर को कैसे बेवकूफ बनाया।

इसके अलावा तुम मगरों को भी देख सकते हो कि वे किस तरह नदी के किनारे बन्दर का कलेजा खाने के लिये उसको पकड़ने की कोशिश में बैठे रहते हैं।
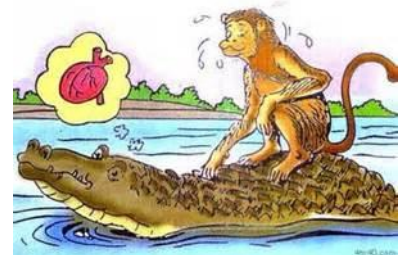
8 बैल जो शर्त जीत गया[11]

बहुत पहले की बात है कि एक किसान के पास एक बहुत ही ताकतवर बैल था। वह उसको बहुत प्यार करता था।

उसने उस बैल को जन्म से ही पाला पोसा था। वह उसको अपने हाथ से ही खाना खिलाता था, अपने हाथ से ही उसको नहलाता था और उसका सारा काम वह अपने हाथ से ही करता था।

उसने उसको खेत पर काम करना सिखाया। जब वे चावल के खेतों में काम करते थे और जब वे भारी बोझा बाजार ले जाते थे तो वह अपने साथ साथ उसके लिये भी गाता था।

बैल सोचता था कि "मेरा मालिक मेरे लिये बहुत ही दयालु है। वह मुझे बहुत अच्छी तरह से रखता है इसलिये मुझे भी उसके लिये कुछ करना चाहिये।"

सो उस रात बैल ने वह किया जो उसने पहले कभी नहीं किया था।

वह ज़ोर से बोला — "मालिक, कल फलॉ अमीर आदमी के पास जाना जबकि वह बाजार में दूसरों के सामने खड़ा हो और उसको कहना कि 'मैं एक हजार चॉदी के सिक्के दॉव पर लगाता हूँ

[11] Ox Who Won the Bet – a story from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=233
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

कि मेरा ताकतवर बैल पत्थर से भरी हुई सौ गाड़ियाँ खींच सकता है।"

अगले दिन वह किसान उस अमीर आदमी के पास गया और उससे पूछा — "क्या तुम किसी ऐसे आदमी को जानते हो जिसके पास बहुत ताकतवर बैल हो?"

वह अमीर आदमी बोला — "मेरे बैल इस देश में सबसे ज़्यादा ताकतवर हैं।"

किसान ने पूछा — "क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा बैल भी है जो पत्थर से भरी **100** गाड़ियाँ खींच सकता हो?"

अमीर आदमी बोला — "कोई भी बैल इतना बड़ा बोझ नहीं खींच सकता।"

किसान बोला — "मेरे पास एक बहुत ही ताकतवर बैल है। मैं एक हजार चाँदी के सिक्के दाँव पर लगाता हूँ अगर वह इतना भारी बोझा खींच दे तो।"

शर्त लग गयी।

किसान अपना बैल लाने के लिये अपने घर गया। आस पास के सारे गाँवों के लोग इस मुकाबले को देखने के लिये आये हुए थे। उस अमीर आदमी ने सौ गाड़ियाँ पत्थर से भर कर एक दूसरे से बाँध कर खड़ी की हुई थीं।

किसान ने अपने बैल को पहली गाड़ी से जोत दिया और चिल्लाना शुरू किया — "आ मेरे आलसी बैल खींच, यह गाड़ी खींच। चल ओ गधे।" और उसने बैल को एक डंडी मारी।

पर बैल हिल कर नहीं दिया। वह किसान की तरफ देखता रहा। किसान पहले कभी उससे इतने खराब तरीके नहीं बोला था। सो बैल ने सोचा कि अब वह उसकी सहायता नहीं करेगा।

सो किसान शर्त हार गया और उसको उस अमीर आदमी को एक हजार चॉदी के सिक्के देने पड़ गये।

उस रात किसान ने अपने बैल से कहा — "आज तुम्हारी वजह से मैं अपनी एक हजार चॉदी के सिक्कों की शर्त हार गया।"

बैल बोला — "तुमने मुझे हमेशा से अच्छे तरीके से रखा पर आज तुमने मुझे दूसरों के सामने मारा और मेरी बेइज़्ज़ती की इसी लिये मैंने तुम्हारी वे गाड़ियॉ नहीं खींचीं।"

किसान बोला — "मुझे इसका बहुत अफसोस है। अमीर आदमी अपने बैलों से इसी तरह से बात करता है सो मुझे लगा कि शायद मुझे भी ऐसे ही बोलना चाहिये। पर मैं गलती पर था। मैंने तुम्हारे साथ सचमुच ही बहुत बुरा बर्ताव किया मुझे इसका फल तो मिलना ही चाहिये था। मुझे माफ कर दो।"

बैल बोला — "चलो माफ किया। अब तुम कल उस अमीर आदमी के पास फिर जाना और अबकी बार उससे दो हजार चॉदी

के सिक्कों की शर्त लगाना कि मैं पत्थर भरी दो सौ गाड़ियाँ खींच सकता हूँ।"

अगले दिन उस किसान ने उस बैल के गले में फूलों की एक डाली और उसको बाजार ले गया। उसने उस अमीर आदमी से फिर कहा – "मैं दो हजार चाँदी के सिक्कों की शर्त लगाता हूँ कि मेरा बैल पत्थरों से भरी दो सौ गाड़ियाँ खींचेगा।"

वह आदमी उसकी पहले दिन की हार याद कर के हँसा पर फिर उसकी शर्त मान गया। यह मुकाबला देखने के लिये जल्दी ही फिर से भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी।

बैल को गाड़ी में जोता गया तो किसान बोला – "चल मेरे सुन्दर ताकतवर बैल। खींच इन गाड़ियों को और लोगों को दिखा दे कि तू मेरे लिये क्या कर सकता है।"

बैल ने किसान की तरफ देखा और उसने गाड़ियों को खींचना शुरू किया। जल्दी ही वह बोझा चलने लगा और जल्दी ही आखिरी गाड़ी वहाँ आ कर खड़ी हो गयी जहाँ पहली गाड़ी खड़ी हुई थी।

भीड़ ने ताली बजायी और उस अमीर आदमी ने उसको दो हजार चाँदी के सिक्के दे दिये।

किसान और बैल खुशी खुशी घर चले गये। इस तरह बैल ने अपने अच्छे मालिक की सहायता की और यह सिखाया कि सभी से सबको अच्छा बर्ताव करना चाहिये।
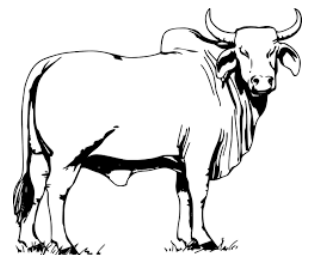
9 लड़ने वाले बटेर[12]

यह बहुत पहले की बात है कि एक चिड़िया पकड़ने वाला बटेर[13] पकड़ कर अपने परिवार का गुजारा करता था। रोज वह उनको पकड़ने के लिये जमीन पर दाने बिखेरता था।

पास की झाड़ियों से बहुत सारे बटेर दाना चुगने के लिये वहॉ आ जाते। वह उन सबको एक साथ पकड़ने के लिये एक जाल फेंकता। उनको पकड़ कर वह उन्हें बाजार में लोगों को खाने के लिये बेच देता।

एक बार एक बहुत ही होशियार बटेर ने अपने साथियों को बुलाया और उनसे कहा कि किसी तरह से उस चिड़िया पकड़ने वाले को हमको पकड़ने से रोकना चाहिये।

हमारे बहुत सारे दोस्त और परिवार के लोग पहले ही पकड़े जा चुके हैं। अब आगे यह सब और नहीं होना चाहिये।

अगली बार जब वह चिड़िया पकड़ने वाला तुम लोगों के ऊपर अपना जाल फेंके तब तुम लोग अपने अपने सिर उस जाल के छेदों के बाहर निकाल लेना। उसके बाद तुम लोग एक साथ उस जाल

---

[12] The Quarreling Quails – a story from Jaatak Tales of India, Asia.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=232
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[13] Translated for the word "Quail". See its picture above.

को ले कर पास के जंगल में उड़ जाना। वहाँ जा कर उस जाल को किसी काँटे वाली झाड़ी पर छोड़ देना और अपने आपको आजाद कर लेना।"

सारे बटेरों को यह प्लान ब्हुत अच्छा लगा। वे सब इस बात पर राजी हो गये कि एक साथ काम करने का विचार बहुत अच्छा था।

अगले दिन उस चिड़िया पकड़ने वाले ने रोज की तरह दाना फेंका। रोज की तरह बहुत सारे बटेर वहाँ दाना चुगने आ पहुँचे।

कुछ देर बाद उसने उन चिड़ियों को पकड़ने के लिये उनके ऊपर अपना जाल फेंका तो बहुत सारे बटेरों ने अपना सिर उस जाल के छेदों में से बाहर निकाल लिया और उस जाल को ले उड़े।

चिड़िया पकड़ने वाले का तो यह देख कर आश्चर्य से मुँह खुला रह गया कि किस तरीके से एक साथ काम कर के वे सारे बटेर उसके जाल से आजाद हो गये थे।

वहाँ से उड़ कर उन्होंने वह जाल एक काँटे वाली झाड़ी पर फेंक दिया और सब अपने अपने घरों को उड़ गये।

उस चिड़िया पकड़ने वाले को अपना जाल उस काँटे वाली झाड़ी से बाहर निकालने में ही सारी शाम लग गयी। उस रात वह बिना कुछ लिये ही घर चला गया। आज उसके पास अगले दिन बेचने के लिये भी कुछ नहीं था।

अब रोज यही होता। वह चिड़िया पकड़ने वाला रोज दाना फेंकता, बटेर रोज दाना चुगने आते, वह रोज उन पर अपना जाल फेंकता पर बटेर उसके छेदों में से सिर बाहर निकाल कर जाल ले कर उड़ जाते। उड़ कर वे जाल झाड़ी में उसी कॉटों वाली झाड़ी में फेंक देते और फिर अपने अपने घरों को उड़ जाते।

एक दिन चिड़िया पकड़ने वाले ने सोचा कि ऐसा इसलिये हो रहा है क्योंकि ये सारे बटेर एक साथ मिल कर काम कर रहे हैं। अगर मैं इनमें आपस में लड़ाई करवा दूॅ तो मैं इनको पकड़ने में कामयाब हो जाऊॅगा।

सो उसने एक नयी तरकीब लगायी। अगले दिन उसने अपना दाना बजाय जमीन पर फैला कर डालने के जमीन पर एक छोटा सा ढेर बना कर रख दिया और एक तरफ बैठ कर बटेरों का इन्तजार करने लगा।

रोज की तरह बटेर वहॉ दाना खाने आ गये पर क्योंकि दाना ढेर में रखा था इसलिये वे एक दूसरे को धक्का दे कर ही दाना खा सकते थे। सो वे एक दूसरे को धक्का दे रहे थे और सबसे पहले दाना खाने की कोशिश कर रहे थे।

एक बटेर बोला – "तूने मुझे धक्का क्यों दिया?"

दूसरा बटेर बोला – "पहले तूने मेरे पैर पर पैर रखा।"

पहला बटेर बोला — "मैंने तुम्हारे पैर के ऊपर पैर रखा तो मगर तुम्हारे पैर पर पैर रखने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं तो केवल दाना लेने की कोशिश कर रहा था।"

इसी तरह उन दोनों बटेरों में लड़ाई चल रही थी कि धीरे धीरे दूसरो बटेरों ने भी उन दोनों बटेरों की लड़ाई में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। कोई किसी की तरफ से बोल रहा था तो कोई किसी की तरफ से।

जब तक वे लड़ते रहे तब तक वह चिड़ियाँ पकड़ने वाला इन्तजार करता रहा। फिर अचानक ही मौका देख कर उसने उन सबके ऊपर जाल फेंक दिया।

एक बटेर बोला — "अपना सिर जाल के छेद में से निकालो और फिर हम उड़ते हैं।" उसके दोस्तों ने भी यही कहा।

पर दूसरा बटेर बोला — "पहले तुम उड़ो। हम सारे लोग ही इस जाल को क्यों उठायें? तुम पहले इस जाल का भारी हिस्सा उठा कर ऊपर उड़ो उसके बाद हम उड़ेंगे।"

अब आधे बटेर तो बिना दूसरे बटेरों की सहायता के उस सारे जाल को ले कर उड़ नहीं सकते थे सो वे उस जाल को ले कर उड़ नहीं पाये।

और यही तो वह चिड़िया पकड़ने वाला चाहता था कि वे उसके जाल को ले कर न उड़ पायें और वह उनको पकड़ ले।

बस जब वे बटेर नहीं उड़ पाये तो उसने बटेरों से भरा अपना जाल इकट्ठा किया और सारे बटेरों को ले कर घर चला गया। अगले दिन वह उन सब बटेरों को बाजार में बेच आया।

इस तरह से आपस में फूट डलवा कर चिड़िया पकड़ने वाले ने बटेर पकड़े।

फूट पड़ने से एकता की ताकत कम हो जाती है इसलिये ताकतवर बनने के लिये आपस में भेद होते हुए भी एक हो कर रहना चाहिये तभी दूसरों से बचा जा सकता है।

एकता में बहुत ताकत होती है।[14]

[14] There is a saying in English also "Divide and rule."

10 बातूनी कछुआ[15]

एक बार एक बहुत ही बातूनी कछुआ था। उसको बात करने का बहुत शौक था। वह चुप रहता ही नहीं था।

वह अपने दोस्तों से बात करता था। वह अजनबियों से बात करता था। वह तो सबसे बात करता था। वह सुबह को बात करता था। वह दोपहर को बात करता था। वह शाम को बात करता था। वह चॉद में बैठे आदमी से बात करता था। वह हर समय हर किसी से हर तरह की बात करता था।

एक दिन उसने दूर रहने वाली दो बतखों से बात की तो वे बतखें बोलीं — "तुम हमारे घर आओ न। हम लोग एक बहुत ही सुन्दर झील में रहती हैं जिसके चारों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर पहाड़ हैं। तुम उन्हें देखोगे तो वे तुम्हें अच्छे लगेंगे।"

कछुआ बोला — "काश मैं तुम्हारे साथ जा सकता। मैं तुम्हारा घर देखना बहुत पसन्द करता। वहॉ हम लोग अच्छी तरह से बात भी कर सकते हैं। पर जैसा कि तुम जानती हो मैं उड़ नहीं सकता।"

---

[15] The Turtle Who Could Not Stop Talking – a story from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=199
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[I have heard a similar story in my childhood too. It is given in the Book "Mere Bachapan Ki Kahaniyan" written by Sushma Gupta in Hindi language under the title "Baatoonee Kachhuaa".]

बतखें बोलीं — "कोई बात नहीं। हम तुमको उठा कर ले जायेंगे। पर तुम हमसे वायदा करो कि तुम रास्ते में बोलोगे नहीं और अपना मुँह भी बन्द रखोगे। क्या तुम लम्बी उड़ान में इतनी देर तक चुप रह सकते हो?"

कछुआ बोला — "हाँ हाँ, मैं चुप रह सकता हूँ। मैं चुप रहने में बहुत होशियार हूँ।"

बतखें बोलीं — "तब ठीक है। हम तुमको कल अपने घर ले जायेंगे।"

पर यह तो सच नहीं था। कछुआ तो चुप रह ही नहीं सकता था। वह अपने दोस्तों से बात करता था। वह अजनबियों से बात करता था। वह तो सबसे बात करता था।

वह सुबह को बात करता था, वह दोपहर को बात करता था, वह शाम को बात करता था, वह चाँद में बैठे आदमी से बात करता था। वह हर समय हर किसी से हर तरह की बात करता था।

पर वे बेचारी बतखें तो उस कछुए को ठीक से जानती नहीं थीं जितना कि उसके दोस्त उसे जानते थे।

सो अगले दिन वे बतखें एक बड़ी सी डंडी ले कर वहाँ आयीं और कछुए से बोलीं — "देखो कछुए तुम इस डंडी को कस कर अपने मुँह में पकड़ लो। हम दो लोग इसके दोनों सिरे अपने पंजों में कस कर पकड़ लेंगे और फिर तुमको उड़ा कर ले जायेंगे।

इस बीच में तुम अपना मुँह बिल्कुल नहीं खोलना नहीं तो तुम नीचे गिर जाओगे।"

कछुए ने उनको फिर विश्वास दिलाया कि इस उड़ान के दौरान वह अपना मुँह बिल्कुल बन्द रखेगा।
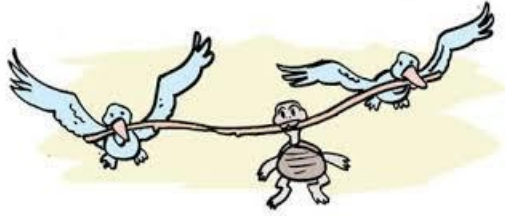
फिर उसने उस डंडी को अपने मुँह में कस कर पकड़ लिया। उधर दो बतखों ने उस डंडी को दोनों सिरों से पकड़ लिया और उसको ले कर उड़ चलीं।

जल्दी ही वे आसमान में ऊँचे पहुँच गयीं। कछुए ने भी उस डंडी को कस कर पकड़े हुआ था। कछुए ने सब कुछ जब ऊपर से देखा तो वह उसके बारे में कुछ कहना चाह रहा था कि नीचे कैसा लग रहा है पर बतखों की बात याद कर के चुप ही रहा।

बतखें उस गाँव के ऊपर से भी उड़ीं जहाँ वह कछुआ रहता था। उस गाँव को देख कर कछुआ चिल्ला कर अपने सब गाँव वालों को यह बताना चाहता था कि वह आसमान में उड़ कर एक लम्बे सफर पर जा रहा था। पर फिर बतखों की बात याद कर के फिर चुप रह गया।

पर उसको ऊपर उड़ता देख कर नीचे से बच्चे चिल्ला दिये — "देखो, ज़रा इस उड़ते हुए कछुए को देखो। यह तो अपने ही गाँव का कछुआ लगता है।"

एक दूसरा छोटा लड़का बोला — "नहीं नहीं, यह हमारे गॉव का कछुआ नहीं हो सकता। वह तो बहुत बातूनी है। हमारे गॉव वाला कछुआ तो हवा में उड़ने पर इतनी देर तक डंडी पकड़े पकड़े चुप रह ही नहीं सकता।"

कछुए ने यह सब सुन लिया तो वह वहीं से चिल्लाया — "मैं अपना बात करना बन्द कर सकता हूँ। तुम क्या समझते हो मुझे।" पर वह अपनी बात तो कह ही नहीं सका।

उसने यह कहने के लिये जैसे ही अपना मुँह खोला कि वह नीचे गिर पड़ा। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह नदी के किनारे कीचड़ के एक बड़े से गड्ढे में गिरा इसलिये उसे ज़्यादा चोट नहीं आयी वरना वह मर भी सकता था।

बच्चे भागे भागे यह देखने के लिये आये कि कछुए को कहीं चोट तो नहीं लग गयी पर उनको तो कछुआ कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

कछुए को मालूम था कि उसने वहॉ बात की जहॉ उसको चुप रहना चाहिये था सो शर्म के मारे वह उस कीचड़ के गड्ढे में ही धॅस गया और जाड़े भर सोता रहा।

जब वह अगले वसन्त में उठा तभी बच्चों ने उसे देखा कि उस के ऊपर के खोल में तो सब जगह दरारें पड़ गयी हैं और अब वह इतना बोलता भी नहीं है जितना वह पहले बोलता था।

अब वह चुप रहना सीख गया था। शायद ऊपर से गिर कर उसने अपना सबक सीख लिया था कि हर समय बोलना अच्छा नहीं होता।

11 एक पैसे में सब[16]

एक बार की बात है कि एक घाटी में एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था। उसके एक ही बेटा था पर वह अपने उस अकेले बेटे से कुछ परेशान सा रहता था।

असल में उसका वह बेटा बहुत ही बेवकूफ सा था और कोई अक्ल का काम करना तो दूर कुछ और भी नहीं करता धरता था।

पर उसकी मॉ उसको बहुत प्यार करती थी। वह उसके लिये अच्छा ही अच्छा सोचती थी और अगर वह कोई गलत काम भी करता था तो उसकी गलती के लिये वह कोई न कोई बहाना ढूँढ कर उसे बचा लेती थी।

धीरे धीरे वह लड़का बड़ा हो गया और अब शादी के लायक हो गया। उसकी मॉ ने अपने पति से कहा कि अब बेटा बड़ा हो गया है सो वह उसके लिये कोई अच्छी सी लड़की ढूँढ कर उसकी शादी कर दे।

---

[16] All For a Paisa – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://www.storiestogrowby.org/story/all-for-a-paisa/
[My Note: This story with the same title in an extended form is given in the book “Folk-Tales of Kashmir”, by James Hinton Knowles. This book is available in Hindi as “Kashmir Ki Lok Kathayen” by Sushma Gupta under the Series “Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-11”.

पर वह सौदागर अपने बेटे की बेवकूफियों पर इतना शर्मिन्दा रहता था कि उसने अपने मन में यह निश्चय कर रखा था कि वह उसकी शादी कभी नहीं करेगा।

उधर उसकी माँ उसकी शादी की बहुत चिन्ता कर रही थी। वह तो बहुत दिनों से उसकी शादी का सपना देख रही थी कि कब मेरा बेटा बड़ा होगा और कब मैं उसकी शादी करूँगी।

और अब उसका बेटा सारी उम्र कुँआरा बैठा रहे यह तो वह सोच भी नहीं सकती थी और न वह इसके लिये तैयार ही थी।

सो उसने अपने बेटे की शादी के लिये बहुत कोशिशें कीं। उसने अपने पति को उसकी अक्लमन्दी के कई लक्षण बताये कई अक्लमन्दी के काम बताये ताकि उसका पति उसकी शादी कर दे पर शादी करने की बजाय वह उसकी इन बातों से और ज़्यादा चिड़चिड़ा होता गया।

एक दिन जब उसकी पत्नी अपने बेटे की तारीफ किये जा रही थी तो वह चिड़चिड़ा हो कर अपनी पत्नी से बोला — "देखो तुम मुझसे यह सब कितनी बार कह चुकी हो पर तुमने इसे मुझे साबित कर के कभी नहीं दिखाया।

क्योंकि मुझे तुम्हारी बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं है कि जो कुछ तुम कह रही हो उसमें ज़रा सा भी सच है। माँऐं अन्धी होती हैं। खैर तुम्हारी सन्तुष्टि को लिये मैं उस बेवकूफ को एक मौका और देता हूँ।

तुम उसको बुलाओ और उसको यह पैसा दो और उससे कहो कि वह बाजार जाये और इस एक पैसे से कोई एक चीज़ ऐसी खरीद कर लाये जो खाने की भी हो और पीने की भी हो और चबाने की भी हो। उसको बागीचे में भी बोया जा सके और उसको गाय को भी खिलाया जा सके।"

माँ को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि अब कम से कम उसके बेटे को अपने आपको साबित करने का मौका तो मिलेगा। सो तुरन्त ही उसने अपने बेटे को बुलाया उसे पैसा दिया और उसके पिता की सारी बात उसको समझा दी।

बेटे ने भी उससे पैसा लिया और बाजार चल दिया। बाजार जाते हुए रास्ते में एक नदी पड़ती थी।

जब वह नदी के पास पहुँचा तो वह डर गया और सोचने लगा कि इस एक पैसे से वह ऐसा क्या खरीद सकता है जो खाने का भी हो और पीने का भी हो और चबाने वाला भी हो। बागीचे में बोने वाला भी हो और साथ में गाय के खाने वाला भी हो। जैसा कि उसकी माँ ने कहा था।

यह तो बड़ा नामुमकिन सा काम है। यह सोच कर वह वहीं उदास सा खड़ा रह गया।

किस्मत से उसी समय वहाँ से एक लोहार की बेटी जा रही थी। उसने देखा कि नदी के किनारे एक लड़का उदास खड़ा है। उसने

उसको वहाँ इस तरह खड़े देख कर उससे पूछा कि क्या बात है वह इतना उदास क्यों खड़ा है।

उसने उस लड़की को वह सब बताया जो उसकी माँ ने उससे कहा था। वह लड़की बहुत होशियार थी। वह बोली — "मैं तुमको बताती हूँ कि तुम क्या खरीदो। तुम जा कर एक पैसे का तरबूज खरीद लो।"

"तरबूज?"

"हाँ तरबूज।"

वह आगे बोली देखो तरबूज तुम्हारी माँ की सब शर्तों को पूरा करेगा। वह खाने की चीज़ भी है और वह पीने की चीज़ भी है और वह चबाने की चीज़ भी है। वह जमीन में बोने के लिये भी कुछ देगा और साथ में वह गाय के खाने के लिये भी कुछ देगा।

तुम बाजार जा कर यह खरीद कर ले जा कर अपनी माँ को दे देना मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी इस खरीद से बहुत खुश होंगी।

सो उसने ऐसा ही किया। जब उसकी माँ ने अपने बेटे की अक्लमन्दी देखी तो वह तो बहुत खुश हुई। वह तुरन्त ही अपने पति के पास दौड़ी दौड़ी गयी और उस तरबूज को दिखा कर बोली देखो यह मेरे बेटे का काम है।

इत्तफाक से उनका बेटा भी वहीं अपनी मॉ के पीछे ही खड़ा था। वह तुरन्त ही अपनी मॉ के कान में फुसफुसाया "मॉ असल में उस लोहार की लड़की ने मुझे यह सलाह दी थी।"

मॉ बोली "चुप रह।"

खैर वह सौदागर अपने बेटे की अक्लमन्दी देख कर बहुत खुश हुआ कि वह उसकी पहेली का हल सोच सका।

लोहार के परिवार को शाम के खाने पर घर बुलाया गया। दोनों के माता पिता अपने बच्चों को लिये बहुत खुश थे। इस तरह उस लोहार की बेटी की शादी उस सौदागर के बेटे से हो गयी।

उसके बाद से वह लड़का एक मेहनती पति बन गया और वे दोनों खुशी खुशी रहे।

12 हाथी और चूहों का राजा[17]

एक बार की बात है कि भारत के एक गाँव में एक बहुत बड़ा भूचाल आया। सब गाँव वाले वह जगह छोड़ कर चले गये और चूहे उनके खाली किये घरों में चले गये। कई सालों तक चूहे अपने नये घरों में बहुत खुश थे।

पर जब हाथी वहाँ आये तो वहाँ सब कुछ बदल गया।

उस गाँव के पास ही एक झील थी। असल में हाथी कई सालों से उस झील से पानी पीते और उसमें नहाते चले आ रहे थे। जब उस गाँव में आदमी लोग रहते थे तब वे उस गाँव के चारों तरफ से हो कर जो एक तंग रास्ता जाता था वह रास्ता इस्तेमाल करते थे।

पर अब जबसे लोग वहाँ से चले गये थे तबसे वह छोटा वाला रास्ता इस्तेमाल करने लगे थे। और यह रास्ता गाँव के बीच वाली सड़क से हो कर जाता था।

उनके इस सड़क को इस्तेमाल करने से चूहे बहुत परेशान थे। क्योंकि उनमें से बहुत सारे चूहे जब सड़क पार कर रहे होते थे तो उनके पैरों तले आ कर कुचल कर मर जाते थे।

---

[17] The Elephants and the King of Mice – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/storytelling?rec_id=70
Adapted by Mike Lockett from Panchtantra Stories.
[It is similar to the story of "Sher Aur Chhoti Chuhiya" in "My Childhood Stories" in which a tiny mice helps the lion to free from the net of a hunter.]

हाथी जब उस झील पर जाते थे तो बड़े बड़े झुंडों में एक दूसरे से मिलते हुए और बात करते हुए जाया करते थे।

क्योंकि वे सब आपस में बातें करते जाते थे तो उनके सिर ऊपर की तरफ होते थे। इसलिये उनको वे चूहे दिखायी ही नहीं पड़ते थे और वे बेचारे उनके पैरों तले कुचल कर मारे जाते थे।

हालाँकि इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी पर फिर भी वे बेचारे क्या करते क्योंकि उनको पता ही नहीं होता था। कहाँ इतना बड़ा हाथी और कहाँ बेचारा छोटा सा चूहा।

चूहों के राजा को पता था कि उन चूहों का मरना केवल एक एक्सीडैन्ट ही होता था हाथियों को उनको मारने का कोई इरादा नहीं था पर फिर भी चूहे तो मरते ही थे। और इस तरह से चूहों की गिनती रोज ब रोज कम होती जा रही थी।

वह इन चूहों की मौत को रोकना चाहता था सो एक दिन उसने हाथियों से इस बारे में बात करने का इरादा किया ताकि ऐसी मौतें और न हों।

चूहों का राजा हाथियों के पास पहुँचा और उनके सरदार से बोला — "ओ हाथियों के सरदार, हम आपके झील जाने की जरूरत को समझते हैं कि आपको वहाँ पानी पीने और नहाने के लिये जाना होता है। पर इससे हमारे बहुत सारे लोग मारे जाते हैं।

मैं आपसे यह प्रार्थना करने आया हूँ कि अगर आप और आपके बड़े और ताकतवर दोस्त झील जाने के लिये कोई दूसरा

रास्ता ले लें तो बहुत सारी ज़िन्दगियाँ बच जायेंगी। इसके बदले में शायद हम किसी दिन आपकी कोई सहायता कर सकें।"

हाथियों का सरदार यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "ओ चूहों के राजा तुम तो हमारे जितने बड़े हाथियों के लिये कुछ भी करने के लिये कितने छोटे हो। पर हम भी कोई बेरहम जानवर नहीं हैं। अगर हमसे किसी को कोई नुकसान पहुँचा हो तो हमें बहुत दुख है।

हम तुम्हारी प्रार्थना की इज़्ज़त करते हैं सो झील जाने के लिये हम कोई दूसरा रास्ता ले लेंगे ताकि हम तुम लोगों को कोई नुकसान न पहुँचा सकें।"

चूहों के राजा ने हाथियों के सरदार को उसकी दया के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया। उसके बाद हाथियों के झुंड उधर से फिर कभी नहीं गुजरे।

इस बात को कुछ समय गुजर गया कि एक बार कुछ हाथी शिकारियों के जाल में फँस गये। वे उनके जाल में बुरी तरह से उलझ गये थे। उन्होंने उस जाल में से निकलने की बहुत कोशिश की पर वे किसी तरह भी न निकल सके।

जाल में फँसे हुए उन हाथियों में एक उन हाथियों का सरदार भी था जिससे चूहों के राजा ने उनका झील पर जाने के रास्ते को बदलने की प्रार्थना की थी। उसको उस समय चूहे के राजा का किया हुआ वायदा याद आया।

उसने उन हाथियों में से एक हाथी को बुलाया जो जाल में नहीं फँसे थे और उससे कहा कि वह झील के पास वाले गाँव में जाये और चूहों के राजा से जा कर कहे कि अब हमको उसकी सहायता की जरूरत है। अब वह अपना वायदा निभाये।

वह हाथी तुरन्त ही भागा भागा गाँव गया और चूहों के राजा को जा कर बताया कि उसके साथियों के साथ क्या हुआ था।

हाथियों की हालत के बारे में सुन कर चूहों के राजा ने अपने सब चूहों को बुलाया और कहा — "हमने जो हाथियों के सरदार से उनका रास्ता बदलने की प्रार्थना की थी उसके सुनने का बदला चुकाने का समय आ गया है। चलो हमें उनकी सहायता के लिये जल्दी से चलना चाहिये।"

सारे चूहे उस हाथी के पीछे पीछे चल दिये और वहाँ आये जहाँ उस हाथी के साथी जाल में फँसे हुए थे। सारे चूहों ने मिल कर जल्दी से उस जाल की रस्सियाँ काट दीं और उन सब हाथियों को आजाद कर दिया।

हाथियों ने चूहों को अपनी आजादी के लिये धन्यवाद दिया। हाथियों के सरदार ने कहा — "मुझे अपनी उस बात को कहने का बहुत अफसोस है जब मैंने तुमसे कहा था कि तुम मेरे जितने बड़े जानवर की क्या सहायता करोगे तुम तो बहुत छोटे से हो। उस समय मैं गलत था। आगे से मैं कभी किसी की शक्ल या साइज़ देख कर उसकी ताकत को नहीं जाँचूँगा।"

13 राजा और बेवकूफ बन्दर[18]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक राजा एक जंगल के पास अपने महल में रहता था। उसका महल जंगल के इतना पास था कि वह अपने महल से बन्दरों की बातें सुन सकता था।

जब वह बन्दरों की तरफ देखता तो उसे बहुत खुशी होती और बहुत अच्छा लगता।

एक दिन उसने सोचा कि वह एक बन्दर पालेगा सो उसने अपने शिकारियों को कहा कि वह एक बन्दर को पकड़ कर उसके पास महल ले कर आयें। वह उसको महल में रखेगा।

राजा के सलाहकार ने राजा से कई बार कहा कि बन्दर को महल में रखना कोई अच्छा विचार नहीं है। उसने कहा — "बन्दर एक जंगली जानवर होता है और किसी भी जंगली जानवर को महल में रखना खतरे से खाली नहीं।"

पर राजा की समझ में नहीं आया। अब राजा तो महल का मालिक था। उसका हुक्म तो हुक्म था। उसने हुक्म दे दिया था तो दे दिया था। उसको किसी सलाहकार की राय की जरूरत नहीं थी।

---

[18] The King and the Foolish Monkey – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=249
Adapted from a tale from Panchtanra by Mike Lockett.

राजा का शिकारी एक बन्दर पकड़ कर ले आया। महल में काम करने वालों से राजा ने कहा कि यह बन्दर उसका शाही बन्दर है। यह महल में कहीं भी आ जा सकता है और जो चाहे कर सकता है। कोई उसको रोके टोके नहीं।

पर वह बन्दर कोई सीखा हुआ बन्दर तो था नहीं सो महल में वह बहुत सारी बेवकूफी के काम किया करता था।

राजा का हुक्म मान कर कोई न तो उसको कुछ कहता था और न ही कोई उसको रोकता टोकता था। उनमें से कोई भी राजा का हुक्म टाल नहीं सकता था। वह बन्दर राजा के सोने के कमरे में भी जा सकता था।

एक दिन राजा ने कुछ देर के लिये सोने का सोचा जबकि बन्दर उसकी पहरेदारी कर रहा था। राजा सो गया। तभी एक मक्खी राजा के कमरे में आयी और राजा की छाती पर आ कर बैठ गयी।

अब बन्दर तो राजा की पहरेदारी कर रहा था सो अपना फर्ज निभाने के लिये बन्दर ने मक्खी को उड़ाने की कोशिश की तो उस समय तो मक्खी उड़ गयी पर वह फिर से वापस आ कर राजा के ऊपर बैठ गयी।

बन्दर ने उसको फिर उड़ाने की कोशिश की तो वह फिर उड़ तो गयी पर वह फिर वापस आ गयी। इस बार वह राजा के सिर पर आ कर बैठ गयी।

इस बात से बन्दर बहुत नाराज हुआ। उसने किसी ऐसी चीज़ को ढूँढने के लिये इधर उधर देखा जिससे वह उसको मार सके। वहीं पास में राजा का राजदंड[19] रखा हुआ था। उसकी नजर राजा के दंड पर पड़ी।

राजा का यह दंड सोने का बना था और उसमें जवाहरात जड़े हुए थे। राजा हमेशा उसको अपने पास इसलिये रखता था ताकि हर कोई यह जान ले कि वह ताकतवर था और सबका मालिक था।

पर अब तो वह दंड बन्दर के हाथ में था सो अब बन्दर ताकतवर था और सबका मालिक था। वह दंड उठा कर बन्दर ने उस मक्खी को भगाने के लिये उसके पीछे पीछे भागना शुरू किया।

वह बार बार उस दंड से मक्खी को मारने की कोशिश करता इसलिये वह उस दंड को कभी इस तरफ हिलाता तो कभी उस तरफ।

जब वह मक्खी राजा के सिर पर बैठी तो बन्दर ने वह दंड उधर की तरफ हिलाया तो मक्खी तो उड़ गयी। इस तरह दंड से मक्खी तो बच गयी पर राजा का सिर नहीं बच सका। वह दंड राजा के सिर पर जा कर लगा।

राजा के नौकरों को बाद में पता चला कि राजा के सिर पर तो एक बहुत बड़ी गॉठ पड़ गयी थी और उसके सिर से तो खून निकल रहा था। राजा ने तुरन्त ही बन्दर को जंगल वापस भेज दिया।

---

[19] Translated for the word "Scepter"

राजा के सिर की वह गॉठ फिर कभी गयी नहीं सो उसको अपने सिर के लिये नया ताज बनवाना पड़ा। उसने फिर अपने सलाहकार की सलाह सुनने का भी इरादा किया।

उसके बाद राजा के सलाहकार ने राजा से यह कभी नहीं कहा कि "मैंने तो आपसे यह पहले ही कहा था।" क्योंकि यह तो राजा से कहने की बात नहीं थी पर हॉ उसने यह जरूर कहा कि "बेवकूफ दोस्तों से बच कर रहना चाहिये सरकार। क्योंकि वे आपको आपके दुश्मनों से भी ज़्यादा नुकसान पहुॅचा सकते हैं।"

14 पंचतन्त्र की एक कहानी[20]

एक ब्राह्मण की यह कहानी पंचतन्त्र[21] की एक बहुत ही मशहूर कहानी है। पंचतन्त्र की कहानियाँ ईसा से पूर्व तीसरी सदी में लिखी गयी थीं और उससे भी पहले की कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं पर आधारित थीं।

यह बहुत पुरानी बात है कि भारत के एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत गरीब था क्योंकि उसको करने के लिये कोई काम ही नहीं मिल पाता था। अक्सर वह और उसका परिवार भूखा ही रह जाता।

एक दिन उसने कुछ काम ढूँढने के लिये गाँव छोड़ने का विचार कर लिया कि वह कहीं बाहर जा कर काम ढूँढेगा। सो अगले दिन अपनी पत्नी और बच्चों के जागने से पहले ही वह उठा और घर छोड़ कर चला गया।

---

[20] A Panchtanra Story – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://www.candlelightstories.com/2009/03/27/the-panchatantra-a-folktale-from-india/#more-926
Adapted from a tale from Panchtanra.

[21] Panchtantra stories are one of the oldest stories written by a Braahman for his three prince students to teach them knowledge and wisdom in the conduct that would ensure his worldly success. Originally they were written in Sanskrit. Later they were translated into many languages. The tales, primarily about animals, are organized into five books on such topics as winning friends, losing property and waging war.

उसको नहीं मालूम था कि वह कहाँ जाये और क्या करे वह तो बस चल पड़ा। वह सारा दिन चलता रहा और एक घने जंगल में आ पहुँचा।

वह थका हुआ था और भूखा और प्यासा भी था। उसने पानी पीने के लिये इधर उधर नजर डाली तो उसको एक कुँआ दिखायी दे गया। उसने उस कुँए में अन्दर झाँका तो उसने देखा कि उसमें तो एक चीता[22] एक बन्दर एक साँप और एक आदमी थे।

उस आदमी को देखते ही चीता चिल्लाया — "ओ भले आदमी मेहरबानी कर के मुझे बाहर निकालो ताकि मैं अपने परिवार के पास जा सकूँ।"

ब्राह्मण बोला — "पर तुम तो चीते हो मुझे तुमसे डर लगता है। मैं तुम्हें इस कुँए में से बाहर कैसे निकाल सकता हूँ। यह मैं कैसे जानूँ कि मेरे बाहर निकालते ही तुम मुझे खा नहीं जाओगे?"

चीता बोला — "ओ भले आदमी तुम मुझसे डरो नहीं। मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। बस मेहरबानी कर के तुम मुझ पर दया करो मेरी सहायता करो और मुझे इस कुँए में से बाहर निकालो।"

---

[22] Translated for the word "Jaguar". See its picture above.

ब्राह्मण ने सोचा शायद मैं इसकी सहायता कर सकता हूँ क्योंकि दूसरे पर दया करना तो हमेशा ही अच्छा होता है। सो उसने उस चीते को कुँए से बाहर निकाल लिया।

चीते ने बाहर आ कर ब्राह्मण को धन्यवाद दिया ओर बोला — "अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं कौन हूँ। मेरा नाम शेरसिंह है। तुम उधर वह पहाड़ देख रहे हो न मैं वहाँ एक गुफा में रहता हूँ। मुझे बहुत खुशी होगी अगर कभी तुम मेरे घर आओगे। हो सकता है कि मैं तुम्हारे उपकार का कुछ बदला चुका सकूँ।" यह कह कर चीता वहाँ से चला गया।

तभी उस ब्राह्मण ने सुना कि कुँए में से बन्दर उसको पुकार रहा था — "ओ पवित्र आदमी मेहरबानी कर के मुझे भी इस कुँए में से बाहर निकालो।" ब्राह्मण ने उसे भी कुँए में से बाहर निकाल दिया।

बन्दर ने भी ब्राह्मण को धन्यवाद दिया और बोला — "अगर कभी तुम्हें खाने की जरूरत पड़े तो बस तुम मेरे घर चले आना। मैं वहाँ उस बड़े से पहाड़ के नीचे रहता हूँ। मेरा नाम बालि है।" यह कह कर वह भी वहाँ से चला गया।

अब ब्राह्मण ने सुना कि साँप उसको पुकार रहा था — "मेरी भी सहायता करो ओ भले आदमी। भगवान तुम्हारा भला करे।"

ब्राह्मण बोला — "तुम्हारी सहायता? तुम तो साँप हो। बाहर निकलते ही अगर तुमने मुझे काट लिया तो।"

साँप बोला — “नहीं मैं तुम्हें कभी नहीं काटूँगा। तुम्हें मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। मेहरबानी कर के मुझे बचा लो शायद मैं तुम्हारे कभी काम आ जाऊँ।”

सो उस ब्राह्मण ने उसको भी कुँए से बाहर निकाल लिया।

कुँए से बाहर आ कर साँप बोला — “जनाब मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। अगर आप कभी भी किसी भी मुश्किल में पड़ जायें तो मुझे याद रखियेगा।

मेरा नाम नागेश है। बस मेरा नाम ले कर पुकार लीजियेगा “नागेश”। आप जहाँ भी होंगे मैं आपको ढूँढ लूँगा।” यह कह कर साँप भी वहाँ से चला गया।

लेकिन वहाँ से जाने से पहले तीनों जानवरों ने उस ब्राह्मण को उस आदमी के बारे में बताया जो कुँए में पड़ा था कि उसकी सहायता नहीं करना।

शेरसिंह ने कहा था — “अगर तुम उसकी सहायता करोगे तो बस तुम यह समझ लो कि तुम अपने आपको मुश्किल में डाल लोगे।”

जैसे ही वे सब वहाँ से चले गये तो उस आदमी ने भी ब्राह्मण से सहायता माँगी। उस आदमी ने चिल्लाना शुरू किया कि “मुझे भी बाहर निकालो। मुझे भी बाहर निकालो।”

ब्राह्मण दयावान था सो सब जानवरों के चेतावनी देने के बाद भी ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी और उसने उसको भी कुँए से बाहर निकाल लिया।

आदमी ने कुँए से बाहर निकल कर ब्राह्मण को धन्यवाद दिया और कहा — "मेरा नाम सेठ घनश्यामदास है। मैं एक सुनार हूँ और यही पास के शहर में रहता हूँ। अगर तुमको कभी भी किसी भी सहायता की जरूरत हो तो मेरे घर आने से हिचकिचाना नहीं।"

यह कह कर वह सुनार भी अपने घर चला गया और ब्राह्मण भी अपने रास्ते चल दिया।

पर उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी। उसको कहीं भी कोई भी काम नहीं मिल रहा था। आखिर उसने सोचा कि ऐसे कब तक चलेगा। वह कब तक इस तरह काम की खोज में घूमता रहेगा और भूखा मरता रहेगा उसको आत्महत्या कर लेनी चाहिये।

उसने सोचा कि वह किसी नदी में डूब कर आत्महत्या कर लेगा पर तभी उसको शेरसिंह चीता, बालि बन्दर, नागेश साँप और घनश्यामदास सुनार की याद आयी। तो उसको लगा कि उसको उनकी सहायता लेनी चाहिये।

वह सबसे पहले बालि बन्दर के पास गया। बन्दर उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसने उसका प्रेम से स्वागत किया और उसको बहुत ही स्वादिष्ट फल खाने को दिये।

ब्राह्मण ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया तो बन्दर बोला — "तुम्हारा यहॉ मेरे घर में हमेशा स्वागत है आदमी भाई।"

अब वह ब्राह्मण यह देखना चाहता था कि शेरसिंह चीता उसके साथ कैसा व्यवहार करता है सो बालि बन्दर से उसने शेरसिंह की गुफा का पता पूछा। बालि बन्दर ने उसको शेरसिंह की गुफा का रास्ता बता दिया।

जैसे ही शेरसिंह ने ब्राह्मण को अपनी गुफा की तरफ आते हुए देखा तो उसका स्वागत करने के लिये अपनी गुफा के बाहर तक आया और प्रेम से उसको अपनी गुफा में अन्दर तक ले गया।

शेरसिंह अपने जीवनदाता को भूला नहीं था। उसने उसको बहुत ही सुन्दर और कीमती जवाहरात से जड़ा गले का एक हार और कुछ और गहना दिया और दे कर बोला — "लो मेरी तरफ से तुम यह रखो एक छोटी सी निशानी मेरी कृतज्ञता और आदर की। इसे ले जाओ और अपनी ज़िन्दगी एक नये सिरे से शुरू करो।"

ब्राह्मण ने शेरसिंह को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दिया। उसने सोचा कि उसकी यह यात्रा आखिर उसके लिये कुछ खुशकिस्मती तो ले कर आयी।

अब वह इस गहने को अच्छे दाम पर बेच कर अपने घर वापस लौट जायेगा। उसकी पत्नी उसको देख कर कितनी खुश होगी।

जो पैसा उसको इस गहने को बेच कर मिलेगा उससे वह और उसका परिवार एक नयी ज़िन्दगी शुरू करेंगे और आराम से रह लेंगे। पर इस गहने को बेचने में कौन उसकी सहायता करेगा?

और तब याद आयी उसको सेठ घनश्यामदास सुनार की। क्या वह उसकी सहायता करेगा? उसको याद आयीं सब जानवरों की चेतावनियाँ भी कि इस आदमी की सहायता मत करना नहीं तो मुश्किल में पड़ जाओगे पर फिर भी वह उसके पास चल दिया।

सुनार भी उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उससे पूछा — "ब्राह्मण देवता बताइये कैसे आना हुआ। मैं आपके लिये क्या करूँ।"

ब्राह्मण बोला — "सेठ जी मुझे आपकी सहायता की जरूरत है। मेरे पास ये कुछ गहने हैं। मैं इनको बेचना चाहता हूँ। आप मुझे इनके बेचने में मेरी सहायता करें और इनके अच्छे पैसे दिलवा दें।"

सेठ घनश्यामदास ने उन गहनों को हाथ में ले कर उनको उलट पलट कर देखा और बोला — "मैं आपकी सहायता जरूर करूँगा ब्राह्मण देवता पर पहले मैं इनको किसी दूसरे सुनार को दिखा लूँ।

तब तक आप मेरा यहीं इन्तजार करें। यह कुछ मिठाई नमकीन खायें और मैं इनको एक दूसरे सुनार को दिखा कर बस अभी लौट कर आया।"

सुनार ने अपनी पत्नी को बुलाया और उससे उस ब्राह्मण की सेवा करने के लिये कहा। ब्राह्मण को अपनी पत्नी को सौंप कर वह वह गहना ले कर बाहर चला गया।

वहाँ से वह तुरन्त ही राजा के पास पहुँचा — "सरकार की जय हो। सरकार एक आदमी मेरे पास कुछ गहने ले कर आया है और मुझसे उनको बेचने के लिये कहता है।

पर ये गहने वह हैं जो मैंने राजकुमार के लिये बनाये थे जो अभी तक भी मिल नहीं पा रहे थे। जब मैंने ये गहने देखे तो मैंने इस आदमी को अपने घर में इन्तजार करने के लिये कहा और तुरन्त ही इन गहनों को दिखाने के लिये आपके पास दौड़ा आया।"

राजा चिल्लाया — "कौन है यह आदमी और कहाँ है वह? लगता है कि इस आदमी ने मेरे छोटे से बेटे को मार दिया है और उससे उसके जवाहरात छीन लिये हैं।"

"सरकार वह एक ब्राह्मण है और कृष्ण उसका नाम है। वह मेरे घर में बैठा हुआ है।"

राजा ने अपने सबसे भयानक सिपाहियों को बुलाया तो वे दौड़े चले आये। राजा ने उनको हुक्म दिया कि वे उस सुनार के घर जायें और उस आदमी को गिरफ्तार कर लें जो उस सुनार के घर में बैठा हुआ था। उसको गिरफ्तार कर के राज्य के तहखाने में डाल दें।

राजा के नौकर तुरन्त ही सुनार के घर गये और उस ब्राह्मण को पकड़ लिया। ब्राह्मण की तो कुछ समझ में ही नहीं आया कि यह सब हो क्या रहा था।

उसने चिल्ला कर सिपाहियों से पूछा — "यह सब तुम लोग क्या कर रहे हो और क्यों कर रहे हो? और मैंने क्या किया है मुझे कुछ बताओ तो सही।"

"तुमने हमारे राजकुमार का खून किया है और उसके जवाहरात चुराये हैं। इतने बड़े जुर्म के लिये तुम्हें मौत की सजा मिलेगी।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर भौंचक्का रह गया। इस समय उसको न तो बचने का ही कोई रास्ता दिखायी दे रहा था और न ही कोई वहाँ उसकी सहायता करने वाला था।

उसको गिरफ्तार कर के राजा के तहखाने में डाल दिया गया जहाँ वह अपनी सजा का इन्तजार करने लगा। तब उसे याद आये नागेश के शब्द। सो उसने नागेश को पुकारा।

यकायक नागेश जिसकी उसने कुँए से निकाल कर जान बचायी थी वहाँ जादू की तरह से तुरन्त ही प्रगट हो गया। वह बोला — "हे भगवान। तुम ऐसे कैसे गिरफ्तार हो गये?"

ब्राह्मण बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो नागेश। मुझे एक ऐसे जुर्म की मौत की सजा मिली है जो मैंने किया ही नहीं।"

नागेश बोला — “मेरे पास एक तरकीब है। मैं रानी के कमरे में घुस जाता हूँ और रानी को काट लेता हूँ। मेरे काटे से वह बेहोश हो जायेगी। वे लोग कितनी भी कोशिश कर लें पर वह बेहोश ही रहेगी।”

“फिर?”

“जब तक कि तुम अपना हाथ उसके माथे पर नहीं रखोगे मेरा जहर उसके शरीर में ही रहेगा और वह होश में नहीं आयेगी।”

सो उसने ब्राह्मण को वहीं छोड़ा और रानी के कमरे की तरफ चल दिया। वह उसके कमरे में घुस गया और उसे काट लिया। उसके काटते ही रानी बेहोश हो गयी।

यह दुख की खबर कि रानी को सॉप ने काट लिया सारे राज्य में फैल गयी। पास और दूर सब जगहों से हकीम वैद्य उसका इलाज करने के लिये आये पर उनकी किसी भी दवा ने उस पर कोई काम नहीं किया। कोई भी रानी को होश में नहीं ला सका।

आखिर राजा ने घोषणा की कि “जो कोई भी रानी को होश में लायेगा हम उसको बहुत सारा इनाम देंगे।” इनाम की घोषणा सुन कर और बहुत सारे लोग रानी को होश में लाने के लिये महल आये पर उनमें से भी कोई भी उसको होश में नहीं ला सका।

यह खबर तहखाने में पड़े ब्राह्मण के पास भी पहुँची तो उसने तहखाने के पहरेदारों से कहा “मैं रानी को ठीक कर सकता हूँ अगर मुझे एक मौका दिया जाये तो।”

तहखाने के पहरेदार उसको तुरन्त ही राजा के पास ले गये। राजा उसको तुरन्त ही रानी के पास ले गया।

रानी अपने बिस्तर पर बिल्कुल बेजान सी पड़ी हुई थी सॉप के जहर से नीली। सॉप के जहर ने उसके सारे शरीर को नीला कर दिया था।

ब्राह्मण जा कर रानी के सिर के पास बैठ गया और धीरे से उसके सिर पर अपना हाथ रखा तो लो रानी तो धीरे धीरे होश में आ गयी और उठ कर बैठी हो गयी। उसके शरीर का जहर निकल चुका था।

राज्य में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। राजा तो बहुत ही खुश था। उसके तो खुशी के मारे ऑसू निकल पड़े। उसने ब्राह्मण को गले लगा लिया और बहुत धन्यवाद दिया।

तब ब्राह्मण ने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी मुझे एक ऐसे जुर्म के लिये तहखाने में डाल दिया गया है जो मैंने किया ही नहीं।"

राजा ने पूछा — "तुम कहना क्या चाहते हो?"

ब्राह्मण ने तब उसको अपनी सारी कहानी बतायी। उसकी कहानी सुन कर राजा तो गुस्से से लाल पीला हो गया कि सुनार ने उस ब्राह्मण के साथ क्या किया था। उसने सुनार को गिरफ्तार करवा लिया।

राजा को उस ब्राह्मण के इस तरह से यानी बिना किसी कत्ल और चोरी के जुर्म के तहखाने में डालने के लिये बहुत अफसोस

हुआ। उसने एक हजार सोने के सिक्के दे कर उसको आदरपूर्वक विदा किया।

ब्राह्मण भी खुशी खुशी अपने घर चला गया और फिर सारी ज़िन्दगी अपने परिवार के साथ खुशी से रहा।

15 बिन बुलाया मेहमान[23]

यह लोक कथा भारत के आन्ध्र प्रदेश प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि आन्ध्र प्रदेश के एक गाँव में एक स्त्री रहती थी जिसका नाम था बुद्धिमती। बुद्धिमती का मतलब होता है एक स्त्री जो अक्लमन्द हो और बुद्धिमती अपने नाम के अनुसार ही वाकई में बहुत अक्लमन्द थी। कम से कम वह अपने पति विष्णुराव से तो हर हाल में ज़्यादा अक्लमन्द थी ही।

विष्णुराव ब्राह्मण था और एक पंडित का काम करता था। और सब गाँवों के पंडितों की तरह से वह भी अपने इस काम से बस इतना ही कमा पाता था कि अपने घर के खाने पीने का काम चला सके। पर कभी कभी वह इतना भी नहीं कमा पाता था।

फिर भी खुद गरीब होते हुए भी वह अपने दोस्तों को रिश्तेदारों जानने वालों को पड़ोसियों को और भी किसी को अपने घर बुलाना पसन्द करता था।

विष्णु राव को गली में भी कोई मिल जाता तो वह उसको खाना खिलाने के लिये अपने घर ले आता।

[23] Unwanted Guest – a folktale from AP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/folktale_andhra_pradesh_indian_folktale.htm

बहुत से लोग उसके इस स्वभाव का नाजायज़ फायदा उठाते। वे यह दिखाते कि वे भूखे हैं और वे उसके घर खाना खाने चले जाते।

एक बार उसके अच्छे दिनों में उसके पास बहुत अच्छा खाना था। अब क्योंकि उसके घर में बराबर कोई न कोई खाने के लिये आता रहता था तो बुद्धिमती को खुद को कई बार भूखे रह जाना पड़ जाता था। कभी कभी उसके बच्चों को भी भूखे रह जाना पड़ता था ताकि उसका मेहमान ठीक से खाना खा सके।

बुद्धिमती को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। उसने अपने पति विष्णुराव से कई बार इसके बारे में कहा भी कि वह अपने तरीके बदल ले पर उसकी प्रार्थना का उस पर कोई असर नहीं पड़ा सब बेकार गया।

रोज ही ऐसे बिन बुलाये मेहमान घर में आते रहे और बुद्धिमती हर रात इसका कोई हल खोजने में जाग जाग कर निकालती रही।

सोचते सोचते आखिर बुद्धिमती को एक विचार आया और उस विचार से वह इतनी खुश हो गयी कि उस रात वह सो ही नहीं सकी। बल्कि उससे तो अगले बिन बुलाये मेहमान के आने का इन्तजार भी मुश्किल से हो रहा था।

उसको बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। अगले दिन दोपहर को जब विष्णुराव काम से घर आया तो उसके साथ एक ब्राह्मण भी आया। दोनों भूखे थे सो दोनों को खाना चाहिये था।

बुद्धिमती मुस्कुरायी और बोली — "खाना तैयार है आप नहा लीजिये।"

यह सुन कर विष्णुराव को थोड़ा आश्चर्य हुआ कि उस दिन उसके बिन बुलाये मेहमान को घर लाने पर भी उसकी पत्नी ने कोई चूं चॉ नहीं की बल्कि वह कुछ खुश ही नजर आ रही थी।

वह खुश था कि उसकी पत्नी खुश थी। विष्णुराव ने अपने मेहमान के लिये एक चटाई बिछायी और नदी पर नहाने चला गया।

मेहमान चटाई पर बैठ गया। बुद्धिमती रसोईघर में जा कर कुछ बर्तन इधर उधर करने लगी। कुछ देर तक तो वह मेहमान रसोईघर में बर्तनों की खटपट की आवाजें सुनता रहा। फिर उसने देखा कि बुद्धिमती उसी कमरे में आयी जहॉ वह बैठा हुआ था।

आ कर उसने कमरे का एक कोना बुहारा और उसको गाय के गोबर से लीपा पोता। फिर वह एक मोटा सा डंडा ले कर आयी जैसा कि लोग कपड़े धोने के लिये इस्तेमाल करते हैं। उसको उसने एक कोने में खड़ा कर दिया।

फिर उसने उस डंडे के आगे मिट्टी का एक दिया जलाया। उसको चावल प्लानटेन[24] और फूल चढ़ाये। हाथ जोड़ कर उसने फिर उसको बहुत नीचे तक सिर

[24] Plantain is kind of banana except is much bigger than a banana found in Northern India. It is a tropical fruit and in India it is found mostly in Southern India. See its picture above.

नवाया और उस मेहमान को लगा कि उसने उसकी कुछ प्रार्थना भी की।

उस ब्राह्मण ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। उसको लगा कि बुद्धिमती वाकई पागल हो गयी है। उसने पूछा — "आप यह क्या कर रही हैं?"

बुद्धिमती ने अपना केवल एक हाथ हिला कर उसको चुप रहने को कहा और उस डंडे की पूजा जारी रखी। जब उसकी पूजा खत्म हो गयी तब वह ब्राह्मण की तरफ घूमी और बोली कि जब भी कभी उसका पति घर में कभी कोई मेहमान ले कर आता था तब वह हमेशा ही इस तरह से उस डंडे की पूजा करती थी।

यह सुन कर ब्राह्मण का दिल डूबने लगा। डूबते दिल से उसने इस अजीब रीति की वजह पूछी तो बुद्धिमती ने सीधे स्वभाव कहा कि वह ऐसा इसलिये करती थी कि भगवान उसके पति को माफ कर दें अगर उसका पति कभी मेहमान को मारे तो।

अब तो ब्राह्मण वहॉ से चौकन्ना हो कर उठ गया। बुद्धिमती ने उसको समझाना जारी रखा — "बात यह है कि मेरा पति कुछ सिरफिरा है। क्योंकि वह अपने मेहमानों को बहुत प्यार करता है इसलिये वह उनको बहुत तो नहीं मारता पर... ।"

मेहमान को आगे सुनने की जरूरत नहीं थी। तब तक तो मेहमान वहॉ से यह जा और वह जा। उसने अपने जूते अपने हाथ

में उठाये और दरवाजे की तरफ भाग लिया। वह अपने जूतों को पहनने में भी समय बरबाद नहीं करना चाहता था।

उधर विष्णुराव नदी से नहा कर तभी वापस आ रहा था। ब्राह्मण को अपने घर में से इस तरह से इस आश्चर्यजनक गति से भागते देख कर वह खुद आश्चर्यचकित रह गया। उसने आश्चर्य से अपनी पत्नी से पूछा — "भाग्यवान क्या हुआ? अपने मेहमान इस तरह से क्यों भागे जा रहे हैं?"

बुद्धिमती बोली — "हमारे मेहमान यह कपड़े धोने का डंडा माँग रहे थे। मैंने जब इसको उनको देने से मना किया तो वह कुछ नाराज हो गये।"

विष्णुराव ने अपना सिर पीट लिया और कहा कि उसने मेहमान को नाराज क्यों किया। विष्णुराव ने तुरन्त ही वह डंडा उठाया और उन ब्राह्मण को इन्तजार करने के लिये कहता हुआ उनके पीछे पीछे भागा।

विष्णुराव की आवाज सुन कर ब्राह्मण ने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि उसका मेजबान तो उसके पीछे डंडा ले कर भागा चला आ रहा है।

यह देख कर तो वह और भी तेज़ी से भाग लिया। कुछ ही मिनटों में वह विष्णुराव की आँखों से ओझल हो गया और विष्णुराव दुखी होता हुआ घर वापस लौट गया।

घर आ कर उसने बुद्धिमती को मेहमान को वह डंडा न देने के लिये बहुत डॉटा। पर फिर उसने खाना खाया और इस घटना के बारे में बिल्कुल ही भूल गया।

लेकिन वह ब्राह्मण इस घटना को नहीं भूला। उसने सारे गॉव में यह बात फैला दी कि वे खाना खाने के लिये विष्णुराव के घर कभी न जायें। अगर वे गये तो वह उनको डंडे से मारेगा। लोगों ने उसका विश्वास कर लिया।

फिर जब भी विष्णुराव ने किसी को खाना खाने के लिये अपने घर बुलाया तो उसने उसको उसके घर आने से मना कर दिया। इस तरह से बुद्धिमती ने बिन बुलाये मेहमानों से छुटकारा पाया।

16 पत्थर का शेर[25]

भारत के हिमाचल प्रदेश में एक जगह है लाहौलस्पिटी। यह एक रेगिस्तानी जगह है और एक ऊँची जगह पर स्थित है। यहाँ के अधिकतर लोग जानवर चराते हैं और गड्डी जनजाति के हैं।

गर्मियों में वे अपने जानवर चरा कर अपना काम चलाते हैं पर जाड़ा होने से पहले पहले वे नीचे की तरफ कुल्लू घाटी में आ जाते हैं।

जो लोग जाड़ों में वहाँ रह जाते हैं वे तो बस वहाँ अपने अपने घरों में ही बन्द रहते हैं। उस समय में वे ऊन साफ करते हैं धुनते हैं उसे कातते हैं और बुनते हैं। उसके वे शाल और दूसरे कपड़े बनाते हैं।

जब उनको समय मिलता है तो कहानियाँ भी कहते हैं। पत्थर का शेर उनकी कही गयी एक ऐसी ही कहानी है जिसको वे कहना बहुत पसन्द करते हैं। कहते हैं यह कहानी सौ साल पुरानी है।

एक बार की बात है कि वहाँ के पहाड़ों में एक गाँव था। असल में तो वह गाँव भी क्या था केवल पाँच सात झोंपड़ियाँ थीं जो पहाड़ी के एक तरफ बसी हुई थीं।

---

[25] Stone Lion – a folktale from HP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/the_stone_lion_indian_folktale.htm

इनमें से एक झोंपड़ी दूसरी झोंपड़ियों से थोड़ा हट कर थी। इसमें एक लड़का रहता था उसका नाम था रॉचें।

रॉचें उस झोंपड़ी में अकेला ही रहता था क्योंकि वह एक अनाथ बच्चा था। पर वह दिल से बहुत ही खुश स्वभाव का बच्चा था। उसका रंग सॉवला था। वह पतला दुबला था और उसकी ऑखें हमेशा हॅसती रहती थीं।

उसकी आवाज बहुत अच्छी थी। उसको गाना बहुत अच्छा लगता था सो जब वह पहाड़ी रास्तों पर ऊॅचे नीचे जाता तो वह ज़ोर से गाता जाता। लोग भी उसका गाना सुन कर खुश होते क्योंकि उसका गाना उनको भी अच्छा लगता था।

वहॉ पर केवल एक आदमी था जिसको उसका गाना अच्छा नहीं लगता था और वह था वॉगू। वह उस गॉव का सबसे बूढ़ा आदमी था। वह एक ऐसा आदमी था जो किसी को भी खुश नहीं देख सकता था।

उसको तो बस और पैसा और जमीन और और भेड़ें चाहिये थीं। उस गॉव में जो लोग रहते थे वे भी वॉगू को कुछ बहुत पसन्द नहीं करते थे।

रॉचें के गॉव के लोग गड्डी[26] कहलाते थे। वे भी केवल भेड़ें चरा कर ही अपना गुजारा करते थे। रॉचें के अपने पास भी तीस भेड़ें थीं। वह उनकी ऊन बेच कर अपना गुजारा करता था।

[26] Gaddi

कभी कभी जब उसको ज़्यादा पैसे की जरूरत होती तो वह अपनी एकाध भेड़ भी बेच देता।

उसके पास खाने के लिये काफी सत्तू[27] था, पहनने के लिये दो बहुत गर्म कमीजें थीं और सिर के ऊपर एक छत थी। उसको इससे ज़्यादा और कुछ चाहिये भी नहीं था।

सुबह सवेरे ही वह अपनी भेड़ें ले कर उनको चराने के लिये निकल जाता और ॲधेरा होने से पहले पहले घर आ जाता। घर आ कर वह उन भेड़ों को रात के लिये बन्द कर देता अपना सत्तू खाता कुछ देर गुनगुनाता और फिर सो जाता।

यह एक सादा सी पर बिना किसी सुविधा के कुछ मुश्किल की ज़िन्दगी थी। पर रॉचें अपनी इस ज़िन्दगी से बिल्कुल सन्तुष्ट था। रॉचे अपनी भेड़ों को गॉव के पास के एक मैदान में ही चराने के लिये ले जाता।

एक दिन उसको लगा कि उस मैदान की घास बहुत कम हो गयी है और उसकी भेड़ों का पेट नहीं भरता सो उसने सोचा कि इसलिये अब उसको किसी दूसरे घास के मैदान में जाना चाहिये।

सो अगले दिन वह कुछ और जल्दी उठा। उसने अपना डंडा उठाया और दोपहर को खाने के लिये सत्तू लिया। अपनी भेड़ों को

[27] Sattoo is made of barley or black gram, after roasting their grains and grinding them. People eat that powder after mixing some sugar and water.

इकट्ठा किया और अपनी ऊँची आवाज में गाते हुए उनको ले कर किसी दूसरे घास के मैदान की खोज में चल दिया।

करीब एक घंटा चलने के बाद बाद वह एक पहाड़ी पर चढ़ा तो वहॉ तो उसके सामने एक गहरी घाटी फैली पड़ी थी। उस घाटी में टूटी हुई पत्थर की दीवार के टुकड़े फैले पड़े थे। ऐसा लगता था कि वह पत्थर की दीवार किसी पुराने किले की रही होगी।

उस दीवार के चारों तरफ घास उगी हुई थी। वह इतनी हरी और चमकीली थी कि उसको देख कर रॉचें का दिल खुश हो गया। उसने अपनी भेड़ों के लिये एक नया घास का मैदान पा लिया था।

रॉचें ने अपनी भेड़ें वहॉ चरने के लिये छोड़ दीं और खुद इधर उधर घूमने के लिये निकल पड़ा। जब उसका दोपहर के खाने का समय हुआ तो वह उस घाटी के एक तरफ को चढ़ गया जहॉ बैठ कर वह खाना भी खा सकता और वहॉ से अपनी भेड़ों को भी ठीक से देख सकता।

वहॉ वह बैठने के लिये कोई ठीक सी जगह ढूँढ रहा था कि उसकी नजर किसी चीज़ पर पड़ी। कुछ कदम की दूरी पर उसको जमीन में से एक पीली सी चट्टान ऊपर को निकली दिखायी दी जिसमें एक शेर खुदा हुआ था।

वह शेर इतनी अच्छी तरह से खुदा हुआ था कि वह बिल्कुल ज़िन्दा लग रहा था। उसका मुँह तो बन्द था पर ऑखें पूरी की पूरी खुली हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह शेर उस घाटी का

रखवाला हो और सैंकड़ों साल से उस घाटी की रखवाली कर रहा हो।

रॉचें एक बहुत ही अच्छे स्वभाव का लड़का था। वह सब लोगों से बात करना पसन्द करता था। सो वह उस शेर के पास जा कर बैठ गया और उससे बात करने लगा।

उसने शेर की तरफ अपनी दोस्ती का हाथ बढ़ाया पर वह तो क्योंकि एक पत्थर का शेर था तो वह तो कुछ बोला नहीं। रॉचें ने इसकी तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया और अपना उससे परिचय करवाने में ही लगा रहा।

उसने उस पत्थर के शेर को अपने बारे में सब कुछ बता दिया। वह कहॉ रहता था। उसके माता पिता की मौत कैसे हुई। फिर कैसे वह अपना पेट पालने के लिये भेड़ें चराता था।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो उसने शेर के गले में बॉहें डाल दीं और वह जो सत्तू अपने खाने के लिये लाया था उसमें से उसने कुछ उसको खाने के लिये दिया।

रॉचें ने अपनी सत्तू की पोटली खोली और उसमें से थोड़ा सा सत्तू निकाल कर उसके सामने रख दिया। फिर उसने अपने हिस्से का सत्तू खाया और अपनी भेड़ों को देखने के लिये पहाड़ी के नीचे चला गया।

शाम ढलने से पहले उसने अपने दोस्त शेर से विदा ली अपनी भेड़ों को इकट्ठा किया और अपने घर चला गया।

आज रॉचें अपने आपसे बहुत खुश था क्योंकि उसको न केवल अपनी भेड़ों के लिये एक नया घास का मैदान ही मिल गया था बल्कि अपने लिये एक नया दोस्त भी मिल गया था।

अब वह उस घाटी में रोज पहुँच जाता। जब उसकी भेड़ें वहाँ पेट भर कर अपनी घास खाती रहतीं तो वह अपने नये दोस्त से दिल भर कर बातें करता।

जब उसके खाने का समय होता तो वह अपना सत्तू शेर के साथ जरूर बाँटता। उसको मालूम था कि शेर के हिस्से का सत्तू चिड़ियें खा जाती थीं न कि उसको शेर खाता था पर उसको यह जान कर बहुत ही सन्तुष्टि होती थी कि वह अपना खाना अपने दोस्त के साथ बाँट कर खाता था।

जब दिन खत्म हो जाता तो रॉचें शेर से विदा लेता अपनी भेड़ें इकट्ठी करता और गाता हुआ घर चला जाता।

इस तरह से तीन चार महीने बीत गये। अब मौसम बदलने लगा था। दिन अब पहले की तरह से गर्म नहीं रह गया था रातें भी कुछ ज़्यादा ही ठंडी होने लगी थीं। जाड़ा आता जा रहा था।

लाहौलस्पिटी में बहुत ही कड़ा जाड़ा पड़ता था सो अब लोग वहाँ से नीचे कुल्लू की घाटी में जाने की तैयारी कर रहे थे। सारे गाँव वाले एक साथ चले। उनकी भेड़ों का एक बहुत बड़ा झुंड बन गया था।

उनकी सुरक्षा उनकी बड़ी गिनती में ही थी। क्योंकि अगर वे एक साथ होते तो रास्ते के डाकुओं से बर्फ के तूफान से और जंगली जानवरों से एक साथ लड़ सकते थे।

जाड़ों की लम्बी रातें वे आग के चारों तरफ बैठ कर एक साथ गुजारते। एक आदमी पहरा देता जबकि दूसरे लोग बीच बीच में कुछ कुछ सो लेते।

पर रॉचें अपने इस नये दोस्त पत्थर के शेर से अलग होना नहीं चाहता था। पर वह दूसरों के साथ नीचे कुल्लू घाटी में जाने की महत्ता को भी समझता था सो आखिर उसने नीचे जाने का पक्का इरादा कर ही लिया।

अगली सुबह रॉचें अपने दोस्त पत्थर के शेर से मिलने के लिये गया तो उसने उसको बताया कि वह नीचे कुल्लू घाटी जा रहा है। उसको वहाँ जाना ही चाहिये नहीं तो अगर वह यहाँ रह गया तो जम कर मर जायेगा।

उसने शेर से यह भी पूछा कि जब वह वहाँ से चला जायेगा तो क्या वह उसको याद करेगा। रॉचें को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि उस शेर ने अपना मुँह खोल कर रॉचें को यह जवाब दिया कि वह रॉचें को उसके वहाँ से जाने के बाद वहुत याद करेगा।

उसबे रॉचे को यह भी बताया कि कुछ दिनों बाद वह भी वहॉ से हमेशा के लिये चला जायेगा। उसने कहा कि जाने से पहले वह उसको एक भेंट देना चाहता है।

रॉचे ने उससे मना भी किया कि उसके पास उसको जो कुछ चाहिये था वह सव कुछ था और उसको किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी यहॉ तक कि उसके पास बहुत सारी भेड़ें थीं, एक घर था और खाने के लिये सत्तू भी थे। और इसके अलावा उसको किसी और चीज़ की जरूरत भी क्या थी। उसको किसी और चीज़ की इच्छा भी नहीं थी।

पर फिर भी शेर ने उससे अगले दिन सुबह सवेरे ही अपने पास आने के लिये ज़ोर दिया और एक थैला भी लाने के लिये कहा।

उसने कहा कि वहॉ आने पर रॉचें को उसका मुॅह खुला हुआ मिलेगा। वह वहॉ आ कर उसके मुॅह के अन्दर हाथ डाले और उसको वहॉ जो कुछ भी मिले उस सबसे अपना थैला भर ले।

पर यह सब उसको सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही करना पड़ेगा क्योंकि जैसे ही सूरज उन पहाड़ियों के ऊपर झॉकने लगेगा तो उसका मुॅह बन्द हो जायेगा।

इस पर रॉचें हॅस पड़ा और बोला कि यह शेर उसको क्या दे सकता था। पर तब तक तो शेर का मुॅह बन्द हो चुका था। अब रॉचें के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी भेड़ें ले और अपने घर चला जाये।

अगले दिन सुबह सवेरे रॉचें बहुत गहरी नींद सोया हुआ था कि एक कौआ उसकी झोंपड़ी के ऊपर से उड़ा और बोला जिससे रॉचें की ऑख खुल गयी और वह अपने बिस्तर से उठ बैठा। उसने अपनी रजाई तो उतार कर फेंक दी और खिड़की के पास भागा गया।

उसने देखा कि पूर्व की तरफ वस अभी रोशनी चमकी ही थी। उसने सोचा कि उसका दोस्त उसका इन्तजार कर रहा होगा सो वह तुरन्त ही घाटी की तरफ दौड़ गया। वह जब तक वहॉ पहुॅचा उसकी सॉस फूल रही थी।

शेर ने जैसे ही रॉचें को देखा तो उससे पूछा कि क्या वह अपने साथ थैला लाया था। रॉचें ने एक लम्बी सॉस ली और कहा कि वह थैला लाना तो बिल्कुल ही भूल गया पर उसकी टोपी उसके पास थी।

उसने तुरन्त ही अपनी टोपी उतारी और शेर के मुॅह में बेहिचक अपना हाथ डाल दिया। जब उसने अपना हाथ उसके मुॅह में से बाहर निकाला तो उसके हाथ में बहुत सारे सोने के टुकड़े थे।

उसी समय सूरज सबसे ऊॅची पहाड़ी के ऊपर से झॉका और शेर का मुॅह कस कर बन्द हो गया। रॉचें ने शेर को धन्यवाद दिया अपनी टोपी को दूसरे हाथ से ढका और खुश खुश घर भाग लिया।

रॉचें अभी अपने गॉव में घुसा ही था कि उसको वॉगू मिल गया। वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये मैदान ले जा रहा था।

वॉगू ने सामने आ कर रॉचें का रास्ता रोक लिया और उससे पूछा कि वह इतनी सुबह सुबह कहॉ से आ रहा था।

फिर उसने रॉचे का हाथ उसकी टोपी पर से हटा दिया तो एक पल के लिये उसके नीचे से उसकी टोपी में रखे सोने के टुकड़े चमक उठे। वह रॉचें पर कूद पड़ा और उसको गर्दन से पकड़ लिया।

वॉगू ने उस पर डाका डालने का इलजाम लगाया और उससे सोने के बारे में पूछा कि वह इतना सारा सोना उसके पास कहॉ से आया। साथ में उसने यह भी कहा कि अगर उसने उसको यह नहीं बताया तो वह उसको गॉव के सरपंच के पास ले जायेगा।

सरपंच का नाम सुनते ही रॉचें कॉप गया। उसने वॉगू को सारी कहानी बता दी। उसने वॉगू को उस घाटी का रास्ता भी बता दिया जहॉ वह पत्थर का शेर खड़ा था। वॉगू यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

रॉचें वॉगू से यह सब कह कर अपने घर भाग गया और कुल्लू घाटी जाने के लिये अपना सामान बॉधने लगा।

उधर रॉचें कुल्लू घाटी में जाने के लिये अपना सामान बॉध रहा था इधर वॉगू उस पत्थर के शेर की घाटी की तरफ चल दिया।

अब वॉगू वहॉ रोज जाता और शेर के लिये बहुत बढ़िया बढ़िया मॅहगे मॅहगे खाने ले जाता जैसे याक के दूध का मक्खन जो इतना ताजा और सफेद होता जैसे ताजा पड़ी हुई बर्फ।

या फिर पहाड़ों की मधुमक्खियों के सुनहरे शहद की शीशी। या फिर ताजा भुने हुए अनाज का सत्तू और या फिर चमड़े की बोतल में भरा हुआ मखनी दूध।

वह ये सब ले जाता और उस शेर के सामने रख देता। फिर हाथ जोड़ कर उसके सामने नीचे तक सिर झुकाता और एक तरफ को खड़ा हो जाता।

कभी कभी वह शेर को बोल बोल कर उकसाता भी कि वह उसकी दी हुई चीज़ों को स्वीकर कर ले। वह उससे अपनी बेवकूफियों और अपनी अज्ञानता की माफी भी माँगता कि उसने उसको पहले यह सब क्यों नहीं दिया।

कभी कभी वह याक की पूँछ का पंखा भी बना कर ले जाता और शेर के पास खड़ा हो जाता और उसके ऊपर उड़ती हुई मक्खियाँ और मच्छर उड़ा कर उसकी चापलूसी करता। वह उससे बराबर बात करता रहता ताकि वह उसकी चापलूसी से खुश हो जाये।

पर उस पत्थर के शेर ने वाँगू के लिये कभी अपना मुँह नहीं खोला।

यह सब एक हफ्ते या कुछ और ज़्यादा दिनों तक चलता रहा। मौसम दिन ब दिन ठंडा होता जा रहा था। गाँव के लोग अपनी अपनी भेड़ों के साथ गाँव छोड़ चुके थे। पर वाँगू वहीं रहा।

उसके परिवार ने उससे बहुत कहा कि वह भी उनके साथ कुल्लू घाटी चले पर उसने जाने से मना कर दिया। आखिर वे उसको वहीं छोड़ कर उसके बिना ही चले गये।

अब वॉगू उस उजड़े गॉव में अकेला रह गया था। काले काले बादल आसमान में छाने लगे तो उसका धीरज छूटने लगा। अब उसको रॉचें ने जो उसको सारी कहानी सुनायी थी उस पर कुछ शक सा होने लगा। फिर भी उसने अपनी कोशिशें जारी रखीं।

आखिर वॉगू का धीरज काम आया और उसका अपने धीरज का फल मिला। एक दिन वॉगू ने शेर के सामने दलिये का कटोरा ले जा कर रखा और रोज की तरह से उसकी प्रार्थना की तो वह पत्थर का शेर एक बार फिर बोला।

उसने वॉगू को उसकी सेवाओं के लिये धन्यवाद दिया और उसको अगली सुबह आने के लिये कहा। उसने वॉगू से भी वही कहा जो उसने रॉचें से कहा था। वॉगू खुशी से नाचता हुआ घर चला गया।

घर जा कर उसने इधर उधर ढूँढ कर एक बहुत मजबूत सा थैला निकाला जिसे वह अनाज रखने के लिये इस्तेमाल करता था। उसे झाड़ पोंछ कर उसने साफ किया।

उस रात वह थैला अपने साथ ले कर सोया। पर उसको खुशी के मारे रात भर नींद नहीं आयी।

जब रात काफी बीत गयी तब वॉगू ने सोचा कि अगर वह वहॉ जल्दी पहुँच जायेगा तो वह शेर के मुँह से शायद ज़्यादा सोना इकट्ठा कर सकेगा सो वह काफी रात रहते ही वहॉ चल दिया।

उस समय सुबह के चार बजे होंगे जब वॉगू घाटी के लिये चला। उसने एक मोटा सा ऊनी शाल ओढ़ा एक ऐसी टोपी ओढ़ी जिससे उसकी ऑखों के सिवा उसका सारा चेहरा ढक गया।

एक हाथ में एक मोटा सा डंडा लिया और दूसरे हाथ में लालटेन ली। अपना थैला उसने अपने कन्धे से लटकाया और चल दिया।

बाहर बर्फीली हवा चल रही थी। आसमान में काले काले बादल छाये हुए थे। पर वॉगू को वहॉ जाने का रास्ता पता था। वह तो इसी घाटी में पैदा हुआ था और यहीं बड़ा हुआ था। उसकी तो सारी ज़िन्दगी यहीं बीती थी।

पहले तो वह ठीक दिशा में चलता रहा पर अचानक उसका पैर एक बड़े से पत्थर से टकराया तो वह उसकी ठोकर खा कर गिर पड़ा और पहाड़ी से नीचे की तरफ लुढ़क गया। उसको तो कोई चोट नहीं आयी पर उसकी लालटेन गिर कर चूर चूर हो गयी।

रात अभी भी बाकी थी सो चारों तरफ ॲधेरा ही ॲधेरा था। वॉगू बिना लालटेन के ही चलता जा रहा था इसलिये वह रास्ता खो गया।

जब सुबह हुई तो उसने देखा कि वह तो पत्थर के शेर की घाटी से कहीं बहुत दूर निकल आया है और बुरी तरह से खो गया है।

आज तक उसका पता नहीं चल सका कि वह कहाँ गया। अगर तुम्हें वह कहीं मिल जाये तो हमें जरूर बताना कि वह कहाँ है उसके परिवार वाले अभी तक उसे ढूँढ रहे हैं।।

17 स्वर्ग की यात्रा[28]

यह लोक कथा भारत देश के बिहार प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह कथा किसी को भी अच्छी लगेगी क्योंकि इसमें सब कुछ है – सच्चाई, धर्म, कल्पना, किस्मत और हॅसी।

बहुत पहले बिहार में लोग बहुत गरीब थे तो ऐसी लोक कथाऐं उनको हॅसाने के लिये बहुत अच्छी रहा करती थीं।

बिहार के एक गॉव में छज्जू नाम का एक किसान रहता था। उसके पास जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा था जिस पर वह मौसम की सब्जियॉ उगाया करता था जैसे बैंगन काशीफल फूल गोभी।

हालॉकि वह सब ज़्यादा तो नहीं होती थीं पर फिर भी छज्जू के लिये वे काफी होती थीं। वह अपने उस खेत पर मेहनत से काम करता था और चैन की नींद सोता था क्योंकि वह एक सन्तुष्ट आदमी था।

एक बार जाड़ों में छज्जू ने फूल गोभी की फसल उगायी जो बहुत ही अच्छी हुई। उसकी ताजा सफेद फूल गोभी की फसल की तारीफ करने के लिये लोग दूर पास सभी जगह से आये।

एक दिन छज्जू की पत्नी ने छज्जू से कहा कि उनकी फसल की तो सारे गॉव में चर्चा हो रही थी सो कुछ लोग उसको चुराने की भी

[28] A Trip to Heaven – a folktale from Bihar, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/33/folktale_bihar_indian_folktale.htm

कोशिश कर सकते थे तो उसको रात को उसकी पहरेदारी के लिये खेत में ही सोना चाहिये।

छज्जू को अपनी पत्नी का यह विचार बहुत अच्छा लगा सो उसने अपने खेत के ठीक बीच में बॉस का एक ऊँचा सा प्लेटफार्म बना लिया और उसके ऊपर पत्तों की एक छत बना ली। इस प्लेटफार्म के ऊपर उसने एक चादर बिछा ली और उसका बिस्तर तैयार हो गया।

उस शाम को जब परिवार ने खाना खा लिया छज्जू ने अपनी पत्नी और बच्चों को मकान में छोड़ा और अपने खेत में बने प्लेटफार्म की तरफ चल दिया और वहॉ जा कर उसके ऊपर चढ़ गया।

सारे दिन काम कर के वह थक गया था सो लेटते ही वह सो गया और सुबह होने तक सोता ही रहा। सुबह को वह वहॉ से घर लौट आया और फिर अपने दूसरे दिन का काम शुरू कर दिया।

अगले दिन भी जब वह वहॉ सोने गया तो वही हुआ जो पिछले दिन हुआ था। वह वहॉ गया तो जल्दी ही सो गया और सुबह तक सोता ही रहा।

तीसरे दिन जब वह फिर से अपने उस प्लेटफार्म पर सोने गया तो बीच रात में वह किसी चीज़ की आवाज से जाग गया। वह उठ कर बैठा हो गया तो उसने देखा कि चारों तरफ शान्त पड़ा था और

सारा गॉव सोया पड़ा था। यहॉ तक कि जंगल के गीदड़ भी शान्त थे।

छज्जू ने फिर चारों तरफ देखा तो कुछ देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने देखा कि एक चमकीला सफेद बादल आसमान से नीचे उतर रहा था।

छज्जू उस बादल को नीचे उतरता देखता रहा। वह सीधा उसके गोभी के खेत में आ कर उतर गया। उसमें से एक हाथी निकला पर उसने देखा कि वह कोई साधारण हाथी नहीं था। वह हलके सलेटी रंग का हाथी था और ऐसे चमक रहा था जैसे कोई चॉदी चमकती है।

हाथी ने अपनी सूँड़ फैलायी, एक गोभी का फूल उखाड़ा और बड़े तरीके से उसे अपने मुँह में रख लिया। फिर दूसरा फिर तीसरा। छज्जू बेचारा मजबूर सा उसको इस तरह से अपने खेत के गोभी के फूल खाते देखता रहा। उसने करीब करीब उसके बीस फूल खा लिये थे।

जब उसका पेट भर गया तो वह फिर से अपने बादल के अन्दर चला गया। बादल फिर से आसमान की तरफ उठा और छज्जू की ऑखों से ओझल हो गया।

बहुत देर तक छज्जू वहॉ बैठा बैठा उसके बारे में सोचता रहा। जब उसको कुछ होश आया तो वह यह सब अपनी पत्नी से कहने के लिये घर दौड़ा गया।

उसकी पत्नी तो गहरी नींद सो रही थी। छज्जू ने उसको ज़ोर से हिला कर जगाया और उसको सब कुछ बताया। पर वह उसका विश्वास क्यों करने लगी। उसने कहा कि तुम सपना देख रहे होगे।

अगली रात को छज्जू जागता ही रहा। यकीनन वह हाथी उस रात फिर आया। पिछली रात की तरह से उसने फिर पेट भर कर गोभी के फूल खाये और फिर अपने उसी रास्ते वापस चला गया जिस रास्ते से वह आया था।

यह देख कर छज्जू फिर से यह सब कहने के लिये अपने घर वापस दौड़ा गया। इस बार उसकी पत्नी ने उसका विश्वास कर लिया और बोली कि वह हाथी तो सीधे स्वर्ग से आया था। वह देवराज इन्द्र का हाथी था और उसका नाम ऐरावत[29] था।

छज्जू की तो यह सब सुन कर बोली ही नहीं निकली। उसकी पत्नी एक पंडित की बेटी थी और ऐसी बहुत सारी बातें जानती थी जो वह नहीं जानता था।

अचानक उसने छज्जू की बॉह पकड़ ली और उससे बोली कि अगली बार जब वह उसके देखे तो उसकी पूॅछ पकड़ ले। इस तरह से वह उसकी पूॅछ पकड़ कर स्वर्ग का एक चक्कर लगा सकेगा।

पहले तो उसको पत्नी की बात कुछ समझ में नहीं आयी पर फिर जब उसकी पत्नी ने उससे कई बार कहा तो ऐसा करने की उसने हिम्मत बटोर ली।

[29] Indra is the King of gods and Airaavat is the name of his elephant.

वह तो केवल इसी विचार से बहुत डरा हुआ था कि वह हाथी की पूँछ पकड़े पकड़े आसमान में उड़ेगा कैसे। पर किसी तरह से उसने हिम्मत कर ही ली।

सो अगली रात जब हाथी फिर से उसके खेत में आया और अपने बादल में ऊपर जाने लगा तो छज्जू भी उसकी पूँछ से लटका हुआ था।

छज्जू ने स्वर्ग में पूरे चौबीस घंटे गुजारे और उसका कितना बढ़िया समय गुजरा। स्वर्ग कितनी सुन्दर जगह थी। उसकी सड़कें चाँदी से जड़ी हुई थीं। वहाँ सोने के महल बने हुए थे।

जब वह चलते चलते थक गया तो बस उसने एक साफ नदी के ठंडे पानी में अपना चेहरा धो लिया और बस वह ताजा हो गया। उसकी सारी थकान मिट गयी।

वहाँ का वातावरण चिड़ियों की चहचहाहट से गूँज रहा था फूलों की खुशबू से महक रहा था। पर छज्जू को जो वहाँ सबसे ज़्यादा अच्छा लगा वह था वहाँ का रसोईघर।

स्वर्ग के रसोईघर के बीचोबीच गरमागरम हलवे का एक बहुत बड़ा बर्तन रखा था जिसमें से इलायची की खुशबू उड़ रही थी। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वहाँ उसको उसे लेने से कोई रोकने वाला भी नहीं था।

छज्जू उसी तरह से धरती पर वापस आ गया जैसे वह गया था यानी हाथी की पूँछ पकड़ कर। जब वह धरती पर वापस आ गया तो वह तो ऐसे चल रहा था जैसे वह अभी भी सपना देख रहा हो।

यह सब केवल वही नहीं था जो उसने वहाँ देखा था बल्कि वह हलवा था जो उसने वहाँ खाया था। अब तो वह सिवाय हलवे के और किसी चीज़ के बारे में सोच ही नहीं पा रहा था।

उस रात वह सो नहीं पाया। दिन निकल आया तो बजाय खेतों पर काम पर जाने के वह अपने घर के सामने बैठ गया। वहाँ से गाँव के कुछ दूसरे लोग अपने काम पर जा रहे थे। वे छज्जू को इस तरह बैठे बैठे सोते देख कर बोले — "अरे छज्जू। तुम सुबह सुबह यहाँ बैठे हुए क्यों सो रहे हो?

छज्जू बोला कि कल उसने बहुत सारा हलवा खा लिया था इसलिये उसको अभी भी नींद आ रही थी। लोग उसका यह जवाब सुन कर आश्चर्यचकित थे। कुछ और लोग वहाँ से निकले तो सब छज्जू के चारों तरफ इकट्ठा हो गये और पूछने लगे कि उसको इतना सारा हलवा कहाँ से मिला।

छज्जू की पत्नी ने यह सब देख कर छज्जू को मना किया कि वह किसी से भी हलवे की बात न करे। पर जब गाँव के बहुत सारे लोगों ने उससे हलवे के बारे में पूछा तो वह अपनी पत्नी की चेतावनी बिल्कुल ही भूल गया। उसने बड़े गर्व से कहा कि उसने वह हलवा स्वर्ग में खाया था।

यह सुन कर गॉव के दूसरे किसानों को लगा कि आज छज्जू पागल हो गया है। उन्होंने छज्जू को सलाह दी कि उसको वैद्य जी[30] को दिखाना चाहिये।

पर फिर धीरे धीरे उनको छज्जू की बात का विश्वास हो गया। एक एक कर के उन्होंने अपने जूते निकाले और छज्जू के चारों तरफ एक गोला बना कर बैठ गये। वे सब भी उसके साथ स्वर्ग जाना चाहते थे और हलवा खाना चाहते थे।

छज्जू ने अपनी सारी ज़िन्दगी में लोगों की इतना ध्यान कभी नहीं खींचा था। यह सब देख कर वह तो फूल कर कुप्पा हो रहा था कि लोग उसको इतनी इज़्ज़त दे रहे थे। बिना एक पल सोचे वह बोला कि वे सब उसके साथ स्वर्ग जा सकते थे।

वह खुद उस हाथी की पूँछ पकड़ लेगा और दूसरा आदमी पीछे से उसका कुरता पकड़ लेगा। तीसरा आदमी दूसरे आदमी का कुरता पकड़ लेगा और इस तरह से कई आदमी एक साथ स्वर्ग जा सकते थे।

यह तरकीब सुन कर तो सारे लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी और सब बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे। अब क्या था यह खबर तो सारे गॉव में आग की तरह फैल गयी।

उस दिन गॉव के सारे आदमी नदी में बहुत देर तक नहाये और उन्होंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने। न तो स्त्रियॉ जा रही थीं

[30] Vaidya Ji is the traditional doctors in India.

और न ही बच्चे जा रहे थे पर हलवा उन सबको चाहिये था। सो आदमियों ने कहा कि वे उनके लिये हलवा अपनी जेबों में भर कर ले आयेंगे।

जब उनसे यह कहा गया कि वे अपने साथ थैला ले जायें तो उन्होंने कहा कि वे थैला नहीं ले जा सकते थे क्योंकि वे अपने दोनों हाथ कुरता पकड़ने के लिये खाली रखना चाहते थे।

पर यह समस्या तब तक बनी रही जब तक किसी ने लटकाने वाले थैले के बारे में नहीं सोचा। और यह दिमाग में आते ही स्त्रियों ने बोरियों के साड़ियों के पुराने पाजामों के लटकाने वाले थैले सिलने शुरू कर दिये।

जब शाम हुई तो सारे लोग छज्जू के खेत के पास एक लाइन में खड़े हो गये। खुशी के मारे उनके दिल धड़क रहे थे और मुँह सूख रहे थे।

रात हुई। काफी अँधेरा हो गया। पहले तो गाँव के उस पार से जंगल से गीदड़ चिल्लाये पर जल्दी ही वे शान्त हो गये। यहाँ तक कि गाँव के कुत्ते भी शान्त थे। उन्होंने भी भौंकना बन्द कर दिया था।

सब कुछ शान्त था कि एकाएक सभी लोगों की साँस रुक सी गयी। एक चमकीला सफेद बादल आसमान से उतर रहा था। वह आ कर छज्जू के गोभी के खेत में उतर गया और उसमें से चाँदी का एक हाथी बाहर निकला।

लोग तब तक धीरज से शान्तिपूर्वक खड़े रहे जब तक हाथी ने पेट भर कर फूल गोभी खायी। उसके गोभी खाते ही छज्जू उसकी तरफ दौड़ा और उसने जा कर उसकी पूँछ पकड़ ली।

लोगों में कुछ भगदड़ मची क्योंकि हर आदमी छज्जू का कुरता पहले पकड़ना चाहता था। पर जल्दी ही वे सब लाइन में लग गये। सबने एक दूसरे का कुरता कस कर पकड़ लिया।

धीरे धीरे बादल ऊपर उठने लगा। उसके साथ उठा हाथी और हाथी के साथ उठे छज्जू जी और फिर एक एक कर के सारे गाँव वाले। सबसे पीछे था गाँव का सबसे मोटा आदमी।

स्वर्ग की यात्रा लम्बी थी। लोगों ने हलवे के लिये सारा दिन इन्तजार किया था। सो आधे रास्ते पहुँच कर उनका धीरज छूट गया। वह जो आखीर में सबसे मोटा आदमी था वह सबसे ज़्यादा उत्सुक था।

उसने अपने आगे वाले आदमी से पूछा कि क्या वहाँ पर हर आदमी के लिये काफी हलवा होगा। अब उस आदमी को तो क्योंकि पता नहीं था सो उसने अपने आगे वाले आदमी से पूछा, उसने अपने आगे वाले आदमी से पूछा।

यह खबर चलते चलते छज्जू तक पहुँची तो उसने कहा कि हाँ वहाँ सबके लिये काफी हलवा होगा। अब यह खबर वापस मोटे आदमी तक आयी।

कुछ देर तक तो वह चुप रहा पर फिर वह चुप नहीं रह सका। वह फिर बोला "छज्जू को ठीक ठीक बताना चाहिये कि वहाँ कितना हलवा होगा।

एक बार फिर यह सवाल ऊपर तक गया तो इस बार छज्जू ने कुछ झुँझलाते हुए जवाब दिया कि वहाँ हलवा काफी होगा लोग चिन्ता न करें। यह खबर फिर नीचे तक आयी और वह मोटा आदमी फिर कुछ देर चुप रहा।

पर वह फिर बहुत देर तक चुप नहीं रह सका। स्वर्ग की यात्रा लम्बी थी और खत्म होने पर ही नहीं आ रही थी। वह बहुत थक गया था और उसको अब भूख भी लग आयी थी। उसने फिर पूछा कि स्वर्ग में कितना हलवा खाया जा सकता था।

सवाल एक बार फिर ऊपर तक गया ओर जब तक वह छज्जू तक पहुँचा उसका धीरज छूट चुका था। उसने अपने दोनों हाथ दोनों तरफ फैला दिये।

वह चिल्ला कर यह बोलने ही वाला था कि "इतना" उसके दोनों हाथों से हाथी की पूँछ छूट गयी और वह और उसके साथ के सब लोग नीचे गिरने शुरू हो गये।

वह मोटा आदमी सबसे पहले नीचे गिरा और उसके ऊपर गिरे दूसरे लोग। गिरने की धम धम की आवाज हुई फिर सब शान्त हो गया।

कुछ देर तक तो वे सब वहॉ पड़े रहे। फिर वे उठे अपने कपड़ों की धूल झाड़ी और उस मोटे आदमी पर उसके इतने सारे सवाल पूछने पर गुस्सा होते हुए अपने अपने घर चले गये।

यही हलवा खाने के सपने का अन्त था। और यह हमें बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि उसके बाद वह हाथी फिर कभी नहीं देखा गया और लोगों को स्वर्ग का हलबा भी फिर कभी नहीं मिला।

18 खान के लिये मिठाई[31]

यह लोक कथा भारत के देहली क्षेत्र के आस पास की लोक कथाओं से ली गयी है। यह बहुत पुरानी बात नहीं है जब **1947** से पहले भारत पाकिस्तान बंगला देश सब भारत ही थे।

भारत की पश्चिमी सीमा अफगानिस्तान से मिलती थी और दोनों देशों में व्यापारिक सम्बन्ध बहुत अच्छे थे। इनमें से एक चीज़ जो अफगानिस्तान से भारत बहुत आती थी वह थे सूखे फल और मेवा – खास कर के सूखे फल जैसे किशमिश खूबानी आदि।

अफगानिस्तान के रहने वाले पठान कहलाते थे और वे वहुत सारे सूखे फल ले कर भारत आया करते थे। वे इधर जाड़ों में आते थे जब उनका अपना देश बर्फ से ढका रहता था। वे यहॉ आ कर रहते थे और अपना माल बेचते थे।

जब जाड़ा खत्म हो जाता था तो वे अपने देश वापस चले जाते थो और यहॉ का माल ले जा कर अपने देश में बेच दे देते थे जैसे कपड़ा और मसाले।

क्योंकि देहली एक मुख्य व्यापारिक जगह थी सो वे लोग देहली ही ज़्यादा आते थे।

[31] A Sweet For Khan – a folktale from Delhi, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/a_sweet_khan_indian_folktale.htm

वैसे तो वे बहुत ही नर्म दिल के लोग होते थे पर एक तो उनको गुस्सा वहुत जल्दी आता था और दूसरे वे पैसा पकड़ बहुत होते थे। यह कहानी एक ऐसे ही अफगानिस्तानी पठान की है।

अफगानिस्तान के कावुल शहर[32] में एक बार एक पठान सौदागर रहता था। हालॉकि उसका पूरा नाम खान हैदर खान था पर अफगानिस्तान के दूसरे लोगों की तरह से लोग उसको खान कह कर ही बुलाते थे।

काबुल के बाजार में खान की एक छोटी सी दूकान थी जहॉ वह मेवा बेचा करता था जैसे बादाम किशमिश सूखी खूबानी अंजीर आदि। सारी गर्मी तो वह ये सूखे फल वहॉ बेचता था पर जाड़ा आने से पहले पहले वह अपनी दूकान वहॉ बन्द कर देता था।

फिर वह बहुत सारे सूखे फल बॉधता और उनको बेचने के लिये भारत की तरफ चल देता था। जाड़े भर वह देहली में रहता था और सड़कों पर चक्कर काट कर अपना सामान बेचा करता था।

वह अपने पैसे के मामले बहुत ही सावधान था और अपने सामान का बहुत अच्छा सौदा करता था। किसी की जानकारी में खान ने कभी एक पैसा भी बर्बाद नहीं किया।

---

[32] Kabul is the capital of Afganistan.

खान छह फीट से भी ज़्यादा लम्बा था। हमेशा पगड़ी पहनता था और अपने सिर पर सुनहरे रंग के चाँद वाली[33] टोपी पहनता था। जिससे उसकी लम्बाई कुछ और वढ़ जाती थी।

वह ढीला ढाला सलवार कुरता पहनता था और उसके ऊपर कमर तक का एक कोट पहनता था। उसकी बड़ी बड़ी मूँछें थीं और उसकी लम्बी खुली दाढ़ी नीचे तक लटकती रहती। इस वेश में वह बहुत डरावना लगता था।

कुछ लोग उसको देख कर डरते भी थे खास कर के छोटे छोटे बच्चे। पर फिर भी खान के कुछ दोस्त बन गये थे। उन कुछ दोस्तों में से एक था एक लाला[34] जो कपड़ा बेचा करता था।

जब भी खान लाला की दूकान के सामने से गुजरता तो लाला उसको बात करने के लिये बुला लेता। वे अक्सर चाय समोसा[35] साथ साथ खाया करते थे और उनको एक दूसरे का साथ भी अच्छा लगता था।

एक दिन लाला ने खान के लिये एक खास मिठाई मँगवायी। वह पीला रंग लिये कत्थई रंग की मिठाई थी और गोल थी पर वह बीच में से आधी कटी हुई थी। वह इतनी सख्त थी कि उसमें उँगली

[33] The cap whose top part was pf golden color.

[34] Lala means a merchant

[35] Samosa is a popular North Indian snack most commonly eaten with tea.

नहीं घुस सकती थी। पर लाला ने उसको तोड़ा और तोड़ कर खान को खाने के लिये दी।

जब खान ने उसको मुँह में रखा वह तो उसको खा कर बहुत खुश हो गया। उसने तो ऐसी कोई चीज़ इससे पहले कभी खायी ही नहीं थी।

उसने तुरन्त ही उसकी बहुत तारीफ करनी शुरू कर दी सो लाला ने उसको और एक टुकड़ा तोड़ कर दिया। खान ने उसकी भी बहुत तारीफ की तो लाला ने फिर उसको एक और टुकड़ा दिया और फिर एक और... ।

इस तरह से खान वह मिठाई खाता ही चला गया और उसकी तारीफ करता चला गया। जब वह मिठाई खा कर खान का पेट भर गया तो उसने लाला से उसका नाम पूछा। लाला ने उसका नाम बताया "सोन हलवा"।

खान ने अपनी ऑखें बन्द कर के उस मिठाई के स्वाद का आनन्द लेते हुए कहा कि वह उसका नाम कभी नहीं भूलेगा।

खान ने लाला को उसकी मिठाई सोन हलवा के लिये कई बार धन्यवाद दिया और फिर बची हुई मिठाई की तरफ आखिरी बार नजर डालता हुआ वहॉ से चला गया।

पर वह वह मिठाई नहीं भूला। वह मिठाई थी ही इतनी स्वादिष्ट कि उसको भूलना आसान नहीं था। दिन रात वह मिठाई उसके दिमाग में घूमती रहती। यहॉ तक कि कभी कभी तो वह

उसके सपने में भी आती और उसकी उसको फिर से खाने की इच्छा होती।

अब खान को सोन हलवे का रंग उसकी शक्ल और साइज़ तो मालूम ही था पर उसको यह नहीं मालूम था कि वह उसको मिलेगी कहाँ। कि वह उसको कहाँ से खरीदे। उसने इस बारे में कभी लाला से भी बात नहीं की।

बस उसने अपनी एक आदत बना ली कि वह हर दूकान में झाँकता चलता कि शायद किसी दूकान में उसको वह सोन हलवा मिल जाये।

इस तरह से खान बहुत दिनों तक दूकानें झाँकता रहा। दूकानों में उसने बहुत सारी चीज़ें देखीं पर उसने सोन हलवा कहीं दिखायी नहीं दिया।

अब वह सोन हलवे की तरफ से कुछ नाउम्मीद सा होता जा रहा था कि एक दिन एक छोटी सी दूकान के सामने उसे वह मिल गया जो वह ढूँढ रहा था।

करीब करीब बीस टुकड़े जो उसको सोन हलवा जैसे लगे वह एक लकड़ी की थाली में रखे हुए थे। हालाँकि वह एक बहुत ही गन्दी सी दिखायी देने वाली दूकान थी पर फिर भी कम से कम उसकी पसन्द की मिठाई तो बेच रही थी।

मिठाई के एक तरफ झाडुओं का एक ढेर रखा हुआ था और दूसरी तरफ रस्सी के गोले रखे हुए थे। एक दो चूहा पकड़ने वाले जाल भी रखे हुए थे।

पर खान को इस बात से क्या मतलब था। उसने सोन हलवे का एक आधा गोला उठाया और उसे खरीदने के लिये दूकान के अन्दर पहुँच गया। उसने उसे चार आने[36] का खरीद लिया।

उसे ले कर खान जल्दी जल्दी चला। जितनी लम्बी उसकी टॉगें थीं उस हिसाब से तो वह बहुत जल्दी चल रहा था। चलते चलते वह बाजार के दूसरे कोने पर एक खुली जगह में आ गया।

वहॉ उस खुली जगह के चारों तरफ एक नीची दीवार बनी हुई थी सो आ कर वह उस नीची दीवार पर बैठ गया। खुश खुश उसने वह आधा गोला उठाया और उसमें अपने दॉत गड़ाये पर उसी समय उसने उसको थूक भी दिया।

यह सोन हलवा तो बहुत ही खराब था। खान ने कुछ पल इन्तजार किया और फिर उसको दोबारा चखा पर फिर थूक दिया। वह अभी भी उसको बहुत ही खराब लग रहा था।

बदकिस्मती से वह तो कुछ ज़्यादा ही खराब लग रहा था। खान यह सोच कर परेशान था कि लाला की दूकान पर तो यह

[36] Before 1957 an Indian Rupee was divided into 16 Anna. Later in 1957 it was decimalized. So four Anna means 25 Paisa or quarter of a Rupee.

मिठाई बहुत ही स्वादिष्ट लग रही थी फिर यहाँ यह इतनी खराब क्यों लग रही है।

अचानक इस सारे मामले पर खान को बहुत गुस्सा आ गया। पर उसने जब चार आने खर्च किये थे तो उसको वे पैसे तो वसूल करने ही थे। वह अपने पैसे बर्बाद नहीं करना चाहता था।

सो वह उस दीवार पर मजबूती से बैठ गया और उस हलवे का हर कौर अच्छी तरह से चबा कर खाने लगा हालाँकि उसका हर कौर उसको बहुत ही खराब लग रहा था।

तभी वहाँ से एक आदमी गुजरा। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि खान बहुत बुरे बुरे मुँह बना कर कुछ खाता जा रहा था जिससे उसके नाक और मुँह से सफेद बुलबुले निकल रहे थे।

यह देख कर वह आदमी खान पर चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या खा रहे हो। यह तो साबुन है। तुम यह साबुन क्यों खा रहे हो।"

उसके इस तरह से बीच में टोकने पर खान उस पर चिल्ला पड़ा। उसने उस आदमी से कहा कि वह गलत था। उसने उस चीज़ को खरीदने के लिये चार आने खर्च किये थे और वह अपने पैसे का पूरा पूरा इस्तेमाल करना चाहता था।

वह उनको किसी भी हालत में बर्बाद नहीं कर सकता था इसलिये उसने जो चीज़ खरीदी थी वह तो उसको खानी ही थी।

आखिर खान ने धीरे धीरे कर के वह सारा साबुन खा लिया। साबुन खा कर वह कई दिनों तक बीमार पड़ा रहा पर उसको यह सन्तोष था कि उसके चार आने बेकार नहीं गये थे।

उत्तर भारत में इस कहानी को लोग "खान क्या खाता अपना पैसा।" के नाम से सुनाते हैं।

19 बेवकूफ मगर[37]

बेवकूफ मगर की यह लोक कथा भारत के गुजरात प्रदेश में रहने वालों में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात ही कि गुजरात की एक नदी के किनारे एक जामुन का पेड़ था जिस पर एक बन्दर रहता था। वह बहुत ही खुशमिजाज और दयालु बन्दर था जिसको जामुन खाने बहुत अच्छे लगते थे और जो उस पेड़ पर बहुतायत से होते भी थे।

एक दिन एक भूखा मगर बन्दर के पास आया और बोला — "क्या मैं भी तुम्हारे इस पेड़ के मीठे मीठे फल खा सकता हूँ?"

बन्दर बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।" और तुरन्त ही कुछ जामुन तोड़ कर उसने भूखे मगर की तरफ फेंक दीं।

मगर ने जब वे जामुन खायीं तो उसको वे बहुत अच्छी लगीं। इसलिये वह अगले दिन उनको खाने के लिये फिर से बन्दर के पास लौटा और उससे फिर से वे जामुन खाने के लिये मॉगे। बन्दर ने फिर से उसे वे फल खाने के लिये फेंक दिये।

[37] The Foolish Crocodile – a folktale from Gujarat, India – Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/359/preview

अब क्या था मगर रोज उन फलों को खाने के लिये बन्दर के पास आने लगा।

एक दिन मगर ने बन्दर से पूछा — "बन्दर भाई तुम्हारे ये फल तो बहुत अच्छे हैं क्या इनमें से कुछ फल मैं अपने घर अपनी पत्नी के लिये भी ले जा सकता हूँ?"

अब तक क्योंकि बन्दर और मगर अच्छे दोस्त हो गये थे तो बन्दर ने मगर को अपने घर अपनी पत्नी के लिये भी कुछ फल ले जाने के लिये दे दिये। मगर ने बन्दर से वे मीठे फल ले कर उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वे फल ले कर अपने घर चला गया।

पर उसकी पत्नी कोई बहुत अच्छी मगर नहीं थी। वह एक जादूगरनी[38] मगर थी। वह हमेशा ही जंगल के दूसरे जानवरों के लिये कुछ न कुछ जाल फेंकने का ताना बाना बुनती रहती थी।

मगर की पत्नी ने अपने पति से पूछा कि उसको इतने मीठे फल कहाँ से मिले।

मगर ने उसको बताया — "मेरा एक बहुत ही प्यारा दोस्त है, एक बन्दर। वह इस नदी के दूसरी ओर एक जामुन के पेड़ पर रहता है वह मुझे यह फल रोज खिलाता है।"

अब मगर की पत्नी तो एक जादूगरनी थी और वह भी बहुत बुरी और नीच जादूगरनी। उसने एक पल को तो सोचा फिर वह

[38] Translated for the word "Witch"

बोली — "अगर बन्दर जामुन के पेड़ पर रहता है और ऐसे मीठे मीठे फल सारा दिन खाता है तो ज़रा सोचो कि उसका कलेजा कितना मीठा होगा। मुझे खाने के लिये इस बन्दर का कलेजा चाहिये और वह मुझे तुम ला कर दोगे।"

पति मगर बोला — "मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकता। मैंने तुम्हें अभी बताया कि यह बन्दर मेरा दोस्त है और मैं तुम्हें उसका कलेजा खाने नहीं दे सकता।"

चालाक मगर पत्नी ने फिर कुछ पल सोचा और फिर बोली — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं होता कि ये फल तुम किसी बन्दर से ले कर आये हो। मुझे तो लगता है कि तुम मेरे पीछे किसी और सुन्दर मादा मगर के चक्कर में पड़ गये हो। तुम मुझे धोखा दे रहे हो मुझे मालूम है।"

पति मगर ने उसको बहुत समझाया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया है और अपनी पत्नी के इलजाम लगाने पर बहुत दुखी हो गया।

उसने सोचा कि अब उसकी भलाई इसी में है कि वह बन्दर और जामुन के पेड़ से अब दूर ही रहे जब तक उसकी पत्नी ठीक हो जाये और वह अपने इस नीच प्लान को भूल जाये।

धीरे धीरे हफ्तों गुजर गये और मगर पत्नी ने अपने पति पर इलजाम लगाना नहीं छोड़ा कि वह किसी दूसरी मादा मगर से मिलता था हालाँकि वह जानती थी वह उस पर झूठा इलजाम लगा रही है।

वह कहती — "मै जानती हूँ कि अगर वह कोई बन्दर होता जो जामुन के पेड़ पर रहता तो तुम मुझे जरूर ही उसे पकड़ कर ला देते और मुझे उसका कलेजा खिला देते। अगर तुम मुझे प्यार करते होते तो।"

आखिर पत्नी मगर ने पति मगर को इस बात के लिये राजी कर ही लिया कि वह बन्दर के पास जाये और उसको पत्नी मगर के पास ले कर आये ताकि वह उसका कलेजा खा सके।

सो अगली शाम मगर जामुन के पेड़ के पास पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसको बहुत ही खराब लग रहा था। मगर को नीचे आया देख कर बन्दर ने पूछा — "अरे मगर भाई तुम इतने हफ्तों से कहाँ थे। मुझे तो इतने दिनों तक तुम्हारी बहुत याद आती रही।"

जैसा मगर कै पत्नी ने उसको सिखाया था मगर ने उसको वही जवाब दिया — "असल में मेरी पत्नी तुमको खाने पर बुलाना चाह रही थी ताकि वह तुम्हारे दिये जामुन के फलों का धन्यवाद कर सके पर हम लोग नदी के दूसरी तरफ रहते हैं।

मैं अपनी पत्नी से यही बहस करता रहा कि तुम तो पानी में तैर नहीं सकते अगर तुम्हें नदी पार करनी पड़ी तो तुम तो डूब जाओगे और मैं यकीनन यह नहीं चाहता कि तुम पानी में डूबो। तो तुमको मैं अपने घर कैसे ले जाऊँ।"

बन्दर बोला — "पर तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर नदी पार करा सकते हो। इस तरह से मैं तुम्हारे घर भी आ जाऊँगा और तुम्हारी पत्नी से भी मिल लूँगा।"

मगर इस बात पर राजी तो हो गया पर वह यह सोच सोच कर बहुत दुखी था कि वह अपने दोस्त से धोखा कर रहा था।

उधर बन्दर को इस बात का कुछ पता ही नहीं था कि उसका क्या होने वाला है वह खुशी खुशी पेड़ से कूदा और मगर की पीठ पर जा कर बैठ गया। मगर पानी में खिसक गया और मगर नदी पार अपने घर की तरफ चल दिया।

जब मगर पानी में तैर रहा था तो उसको इतना खराब लगा कि उसने सोचा कि वह अपने दोस्त को इतना बड़ा धोखा नहीं दे सकता वह उसको सच बता ही देता है।

सो वह बोला — "बन्दर भाई मैंने तुमसे जो कुछ भी कहा था वह सच नहीं बोला था। मेरी पत्नी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है और मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि वह तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है। तुमको उसने खाना खिलाने के लिये नहीं बल्कि तुम्हारा कलेजा खाने के लिये बुलाया है।"

यह सुन कर बन्दर पहले तो डर गया पर वह एक होशियार बन्दर था सो उसका दिमाग तेज़ी से चलने लगा। कुछ पल तो उसने सोचा पर फिर बोला — "पर मगर भाई यह बात तुम्हें मुझे पहले बतानी थी क्योंकि मैं तो अपना कलेजा जामुन के पेड़ पर ही छोड़

आया हूँ। अगर भाभी को मेरा कलेजा ही खाना है तो हमको उसे लाने के लिये उस पेड़ पर वापस जाना पड़ेगा।"

यह सुन कर तो मगर को बहुत आश्चर्य हुआ कि बन्दर अपना कलेजा उसकी पत्नी को इतनी जल्दी देने के लिये तैयार हो गया था। पर जब बन्दर के पास उसका कलेजा था ही नहीं और वह पेड़ पर रखा था तो वह क्या करता वह तुरन्त ही पेड़ की तरफ लौट पड़ा।

जैसे ही वे जामुन के पेड़ के पास पहुँचे बन्दर जितनी तेज़ी से हो सकता था उतनी जल्दी से मगर की पीठ से कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और उसकी सबसे ऊँची शाख पर जा कर बैठ गया।

जब उसे यकीन हो गया कि वह अब अपने दोस्त से सुरक्षित था तब उसने मगर की तरफ देखा और बोला — "तुम तो बहुत ही बेवकूफ मगर हो। अरे मेरा कलेजा तो मेरी छाती में धड़क रहा है और यह तो वहाँ हमेशा से ही धड़कता रहा है।

तुम्हारी बुरी नीच पत्नी को तो अब वह कभी खाने को नहीं मिलेगा। और अब हम तुम भी कभी नहीं मिलेंगे क्योंकि तुमने मुझे धोखा दिया है। बस अब तुम यहाँ से चले जाओ।"

यह सुन कर मगर अपने घर वापस चल दिया। जब तक वह अपने घर पहुँचा तब तक मगर को अपने किये पर सोचने के लिये काफी समय मिल गया। उसको अपने दोस्त को धोखा देने का बहुत दुख था। उसको अपने किये का अफसोस भी बहुत था।

जैसे ही वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि बन्दर कहाँ है। मगर बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि बन्दर ने मुझे धोखा दे दिया और अब वह अपने पेड़ से नीचे कभी नहीं आयेगा।"

पर मगर की पत्नी अपने पति की कहानी से सन्तुष्ट नहीं थी उसने अपने पति को अपने घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि जब तक वह ज़िन्दा है वह उस घर में कदम भी न रखे।

मगर ने अपनी पत्नी की तरफ से मुँह फेरा और अपनी उन सब चीज़ों को भूल कर जिन्हें वह कभी जानता था नदी के नीचे की तरफ तैरना शुरू कर दिया।

वह बहुत दुखी था और अकेला था। उसको यही पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा था पर उसको इतना जरूर पता था कि उसने उसी पल अपनी किस्मत को ताला लगा दिया था जब उसने अपने दोस्त को धोखा दिया था।

वह उस ॲधेरी उदास रात में तैरते हुए सोचता जा रहा था "मैं इसी का अधिकारी हूँ मुझे यही मिलना चाहिये था।
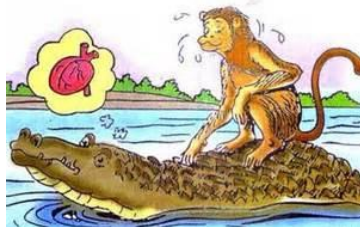
20 भूत जो भाग गया[39]

भूत की यह लोक कथा हिमाचल प्रदेश के कॉगड़ा क्षेत्र में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि कॉगड़ा जिले के एक गॉव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम था धनियॉ। उसकी दाल मसाले की दूकान थी जिसकी आमदनी से वह और उसकी पत्नी आराम से रह लेते थे। वह बहुत ही सीधा सादा था।

वह इतना सीधा था कि उसको रोजमर्रा की परेशानियों को भी हल करने में बहुत मुश्किल होती थी। और फिर जब कभी ऐसा होता तो उन परेशानियों का हल ढूॅढने के लिये वह अपने दोस्त कुलफी राम के पास भागा जाता।

कुलफी राम एक हाथ देखने वाला था। वह रोज एक आम के पेड़ के नीचे बैठता था और वहॉ लोगों के आने का इन्तजार करता जो उसके पास अपना भविष्य पूछने के लिये अपना हाथ दिखाने के लिये आते थे।

एक दिन जब कुलफी राम इस तरह से आम के पेड़ के नीचे बैठा अपने ग्राहकों का इन्तजार कर रहा था तो धनियॉ उसके पास दौड़ता हुआ आया। उस समय वह और दिनों से कुछ ज़्यादा ही

[39] The Ghost That Got Away – a folktale from HP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/folktale_himachal_pradesh_indian_folktale.htm

परेशान लग रहा था। उसको ऐसे आते देख कर कुलफी राम हॅस पड़ा। उसने उससे पूछा — "आज तुम्हारे ऊपर ऐसा कौन सा कहर टूट पड़ा कि तुम इतने परेशान लग रहे हो?"

धनियाँ बोला — "दोस्त मैं वाकई बहुत परेशान हूॅ क्योंकि मुझे अपनी ससुराल जाना है।"

यह सुन कर तो कुलफी राम और ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है तुमको तो खुश होना चाहिये। क्योंकि वहॉ जा कर तो तुम्हारी बहुत खातिरदारी होने वाली है।

वे लोग तुमको बहुत अच्छी तरीके से रखेंगे। तुम्हारी हर जरूरत का ख्याल रखने के लिये वे इधर से उधर भागे फिरेंगे।"

अब तक धनियाँ का धीरज छूट गया था। उसने कहा कि वह वहॉ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वहॉ जाते में उसको डर लगता था।

अब क्योंकि उसकी पत्नी उसके साथ तो जा नहीं रही थी तो उसको वहॉ अकेले ही जाना था। और उसको तो यह भी नहीं पता था कि वहॉ जा कर वह उनसे बात कैसे करेगा।

यह सुन कर कुलफी राम ने पहले तो अपना हाथ धनियाँ के हाथ पर ज़ोर से मारा और फिर थपथपाया फिर बोला — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो मैं तुम्हें सब बता दूॅगा कि वहॉ जा कर तुम्हें क्या कहना है क्या करना है।"

धनियाँ को अभी भी अपने ऊपर भरोसा नहीं था सो वह बोला कि अगर वह खुद उसके साथ चले तो बहुत अच्छा रहेगा। कुलफी राम को तो यह सुन कर बहुत अच्छा लगा और वे दोनों अगले दिन धनिया की ससुराल चल दिये।

रास्ते में कुलफी राम ने धनियाँ को बताया कि वहाँ जा कर उसको दो बातों का खयाल रखना है। पहली बात तो यह कि उसको वहाँ जा कर बहुत ज़्यादा बात नहीं करनी है। दूसरे वहाँ उसको बहुत ज़्यादा खाना नहीं है।

कुछ घंटे बाद वे दोनों धनियाँ की ससुराल आ पहुँचे। धनियाँ की पत्नी का पूरा परिवार उनकी अगवानी के लिये बाहर आ गया। धनियाँ की सास ने धनियाँ का हाथ जोड़ कर स्वागत किया।

धनियाँ का चेहरा धीरे धीरे लाल पड़ता जा रहा था पर कुलफी राम ने उसको बहुत बोलने से मना कर रखा था इसलिये उसने भी अपनी सास के स्वागत का जवाब केवल हाथ जोड़ कर ही दिया। वह बोला कुछ नहीं।

धनियाँ की बजाय कुलफी राम बोला कि धनियाँ इस लम्बी यात्रा से कुछ थक गया था सो उसको रात भर की नींद की जरूरत है।

सो तुरन्त ही वे रात के खाने के लिये ले जाये गये। वहाँ उनको नीचे फर्श पर बिछे तिनकों के एक मोटे आसन पर बिठाया गया और फिर उनको खाना परोसा गया।

खाना देख कर तो धनियाँ की आँखें फटी की फटी रह गयीं। खास कर के लाल लाल करारी पूरियाँ देख कर। वे पूरियाँ तो उसने दो पूरियाँ एक ही बार में खा लीं पर फिर उसको अपने दोस्त कुलफी राम की सलाह याद आयी तो उसको तो उसकी सलाह माननी ही थी।

सो दूसरी पूरी खाने के बाद जो कुछ भी उसको खाने के लिये दिया गया उसने हर वह चीज़ खाने के लिये मना कर दिया। हालाँकि खाने को मना करने का उसका मन बिल्कुल नहीं था फिर भी वह हर खाने की चीज़ को मना करता ही रहा।

उधर कुलफी राम बराबर खाता ही रहा और अपना हर कौर मजे ले ले कर खाता रहा।

खाना खाने के बाद दोनों दोस्तों को एक दूसरे कमरे में ले जाया गया जहाँ दो बिस्तर लगे हुए थे। इन बिस्तरों के गद्दे बहुत ही मुलायम थे और इतने आरामदेह थे कि वे दोनों उन पर लेटते ही सो गये।

पर आधी रात को धनियाँ की आँख खुल गयी। उसके पेट में भूख के मारे चूहे कूद रहे थे। वह बहुत भूखा था।

धनियाँ कुछ देर तक तो इस आशा में लेटा रहा कि शायद उसको नींद आ जाये पर कुछ देर बाद ही उसको पता चल गया कि इतनी भूख में वह सो नहीं पायेगा। जैसे जैसे समय गुजरता जा रहा था उसकी भूख बढ़ती जा रही थी।

आखिर वह उसको सह नहीं सका तो उसने अपने दोस्त को हाथ से हिला कर जगाया।

कुलफी राम कुछ नाराज सा तो हुआ पर उसने बिस्तर से उठ कर दरवाजा खोल कर इधर उधर देखा। उनके कमरे से घर का ऑगन दिखायी देता था।

ऑगन के उस पार एक कमरा था जो शायद घर का भंडारघर था क्योंकि उन लोगों ने घर की मालकिन को उस कमरे मे जा कर घी का डिब्बा लाते हुए देखा था। इस भंडारघर में खाने के लिये जरूर ही कुछ रखा होगा। पर इस कमरे के दरवाजे पर तो ताला भी लगा था।

कुलफी राम ने कुछ पल सोचा और बोला कि जब तक हम तुम्हारी सास को नहीं जगायेंगे तब तक रात के इस समय में तो हमें कोई खाना नहीं मिल सकता। पर धनियॉ ने तो शर्म के मारे उसके पास जाने से मना कर दिया।

इस पर कुलफी राम ने कहा कि फिर तो भंडारघर में जाना ही पड़ेगा और वहीं कुछ देखना पड़ेगा। अगर उनकी किस्मत अच्छी होगी तो शायद वहॉ उनको कुछ खाने को मिल जाये।

धनियॉ उस भंडारघर के एक रोशनदान से हो कर भंडारघर में घुसा। उसने एक रस्सी अपनी कमर में बॉधी कुलफी राम के कन्धे पर चढ़ा और रोशनदान से हो कर भंडारघर में उतर गया। कुलफी राम बाहर ही खड़ा रहा।

प्लान यह था कि जब धनियाँ पेट भर कर खा लेगा तो कुलफी राम उसकी रस्सी पकड़ कर खींच लेगा। इस प्लान के अनुसार धनिया भंडारघर में पहुँच गया।

पहले तो उसको वहाँ अँधेरे की वजह से कुछ दिखायी नहीं दिया। पर जब वह अँधेरे में कुछ देखने लायक हुआ तो उसको वहाँ कुछ शक्लें दिखायी दीं जैसे टीन के डिब्बे बक्से बोतलें बालटियाँ आदि।

वहाँ चावल और गेंहू के बोरे रखे थे पर खाने के लिये कुछ नहीं था। तभी धनियाँ को छत से लटकता मिट्टी का एक घड़ा दिखायी दे गया। उसको देख कर वह खुश हो गया शायद उसमें उसके खाने लायक कोई चीज़ हो।

सो धनियाँ एक बक्से पर खड़ा हो गया और अपना हाथ जितना ऊँचा ले जा सकता था ले गया पर फिर भी मुश्किल से वह उस घड़े की तली को ही छू सका।

फिर उसने कोने में खड़ी एक डंडी उठा ली और उसे उस घड़े पर मारी। उसकी मार से घड़े में दरार पड़ गयी और उसमें से किसी चीज़ की पतली सी धारा निकल पड़ी।

धनियाँ ने उस धारा से जो कुछ भी गिर रहा था खाने के लिये तुरन्त ही अपना मुँह खोल दिया। उसने उसका बड़ा सा घूँट सटका तो उसे पता चला कि वह तो शहद था।

कुछ मिनट तक धनियॉ उस घड़े के नीचे खड़ा रहा और शहद पीता रहा। जब उसने पेट भर कर शहद पी लिया तो अचानक ही उस घड़े का एक बड़ा सा टुकड़ा टूट गया और वह पतली सी धारा एक बहुत ही मोटी सी धारा में बदल गयी।

इससे पहले कि धनियॉ उस घड़े के नीचे से हटता उस घड़े का सारा शहद उसके ऊपर बिखर गया था। वह उसके बालों पर बिखर गया था। वह उसकी ऑखों और कानों पर से होता हुआ उसके कुरते तक चला गया था।

वह वहॉ से हटना चाहता था पर वह तो उसके पैरों के नीचे भी था। सो वह फर्श पर चिपक गया था। वह अपने दोस्त का नाम ले कर चिल्लाया तो कुलफी राम बोला कि वह चिन्ता न करे वह उसको बाहर निकाल लेगा।

पर यह कहना तो आसान था पर करना बहुत मुश्किल था। कुलफी राम एक पतला दुबला सा आदमी था जबकि धनियॉ इतना हल्का नहीं था। इसके अलावा धनियॉ के पैर शहद की वजह से फर्श पर चिपके हुए थे।

कुलफी राम ने उसको अपनी पूरी ताकत से खींचा पर वह धनियॉ के केवल पैर ही फर्श से उठा सका और वह भी केवल एकाध फुट। बस इतने में ही उसकी सॉस फूल गयी और धनियॉ धम्म की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा।

इस शोर से धनियॉ के ससुर की ऑख खुल गयी। वह धनियॉ की सास को ले कर भागा हुआ भंडारघर की तरफ आया।

उन दोनों को आते देखते ही कुलफी राम का तो दिल डूबने लगा। पर वह बहुत जल्दी सोचता था और जल्दी जवाब देता था। उसने अपनी उस हालत बचाने के लिये उनको एक कहानी बना कर सुनायी।

उसने कहा कि करीब पॉच साल से एक भूत मेरे पीछे पड़ा है। वह मेरे साथ तीर्थयात्रा पर जाना चाहता था पर एक समझदार आदमी होने के नाते मैंने उसको मना कर दिया।

पर उस भूत ने मेरा इस घर तक पीछा किया और अब मैं उसको यहॉ से बाहर निकालने के लिये अकेला रहना चाहता हूँ। नहीं तो अगर उस भूत को उन दोनों में से कोई भी पसन्द आ गया तो फिर वह यह घर छोड़ कर कभी नहीं जायेगा।

धनियॉ की सास डर गयी और उसने कुलफी राम को तुरन्त ही भंडारघर की चाभी दे दी और दोनों तुरन्त ही अपने कमरे में वापस चले गये।

कुलफी राम ने भंडारघर का दरवाजा खोला और धनियॉ को बाहर आने के लिये कहा।

शहद में डूबा हुआ सारा चिपचिपा और कुछ गुस्सा सा धनियॉ बाहर आया और एक और कमरे में यह सोचते हुए चला गया कि वह उसका कमरा था। पर वह उसका कमरा नहीं था उसमें तो रुई

भरी हुई थी जो उस परिवार के लिये रजाई बनाने के काम आने वाली थी।

बस जैसे ही वह उस कमरे के अन्दर गया वहाँ रखी हुई रुई उसके शहद लिपटे शरीर पर चिपक गयी। अब वह सचमुच में ही एक भूत जैसा लगने लगा।

उसके सास ससुर अपने कमरे के दरवाजे की झिरी में से यह सब तमाशा देख रहे थे। जब उन्होंने धनियाँ को रुई लिपटे देखा तो दोनों ने डर के मारे आपस में एक दूसरे को पकड़ लिया और अपना सिर छिपा कर वहीं खड़े रह गये। हिल भी न सके।

सो अब सब कुछ साफ था। कुलफी राम धनियाँ को पीछे वाले कुँए पर ले गया। धनियाँ ठीक से नहाया धोया अपने रुई वाले कपड़े मिट्टी में गाड़ दिये और अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो वह वैसा ही साफ सुथरा और भोला भाला लग रहा था जैसा कि वह पहले दिन जब वहाँ आया था तब लग रहा था।

एक बार फिर सुबह के खाने में उसने थोड़ा सा ही खाया पर लौटते समय गाँव के बाहर वाले किनारे पर की दूकान पर दोनों ने पेट भर कर दूध जलेबी खायीं। और फिर दोनों दोस्त हँसते हुए अपने अपने घर आ गये।

21 दो बेटियॉ[40]

दो बेटियॉ नाम की यह लोक कथा भारत के केरल प्रदेश में रहने वाली कुरवा जनजाति में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात ही कि केरल प्रदेश के एक गॉव में एक बूढ़ा रहता था। उसका घर एक पत्तों से छवायी हुई झोंपड़ी थी जिसके चारों तरफ नारियल के पेड़ लगे थे।

वह कुरवा जनजाति का था और अपनी जाति के दूसरे लोगों की तरह से वह एक गरीब और सीधा सादा आदमी था। इस आदमी के दो बेटियॉ थीं जो साधारण परिवारों में ब्याही थीं।

उसका बड़ा दामाद तो गरीब ही रहा पर उसके छोटे दामाद ने अपना एक बिजनैस शुरू कर दिया था जो जल्दी ही फलने फूलने लगा और वह कुछ ही दिनों में अमीर भी हो गया।

पर बूढ़े कुरवा और उसकी पत्नी को इस बात का पता नहीं था। वे लोग अपनी एक छोटी सी झोंपड़ी में रहते थे बाहर की दुनियॉ से बेखबर। वे अपना खेत जोतते थे और रोज दो वक्त चावल का सादा सा खाना खाते थे।

उनका बिस्तर भी बोरी का एक टुकड़ा होता था जिसको वे झोंपड़ी के फर्श पर फैला कर उस पर सो जाते थे। पर वे अपने इस

[40] The Two Daughters – a folktale from Kerala, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/the_two_daughters_indian_folktale.htm

रहने सहने से सन्तुष्ट थे। दुनियाँ के पैसे से उनको कोई मतलब नहीं था।

एक दिन कुरवा की पत्नी ने कहा — “हमने अपनी बेटियों की शादी तो कर दी पर हमको उनके बारे में कुछ पता नहीं है कि वे कैसे रह रही हैं।”

वे अपने माता पिता को देखने के लिये भी एक साल से ज़्यादा से नहीं आयी थीं। सो माँ ने पति से कहा कि उसको अपनी बेटियों को देखने के लिये जाना चाहिये।

बूढ़ा कुरवा यह सुनते ही राजी हो गया और वह अगले दिन सुबह सवेरे ही बेटी के गाँव चल पड़ा। उसके पास ले जाने के लिये कुछ था ही नहीं। बस एक छाता था और घर के पेड़ों पर लगे हुए कुछ प्लान्टेन थे।

उसकी बड़ी बेटी का गाँव उसके घर के ज़्यादा पास था केवल आधा दिन के चलने की दूरी पर। सो उसने पहले वहीं जाने का विचार किया।

कुरवा सुबह चल कर अपनी बेटी के घर दोपहर को पहुँच गया। उसने जा कर देखा कि वह तो उसी की जैसी झोंपड़ी में रह रही है। उसकी झोंपड़ी की छत भी पत्तों से छवाई हुई है। और वह छत उस झोंपड़ी के दरवाजे के बाहर तक आ रही है जिससे एक बरामदा सा बन गया है। इसी बरामदे में वह अपना खाना बनाती है।

जब कुरवा उसके घर पहुँचा तो वहाँ आग पर एक बर्तन में चावल उबल रहे थे। और उसकी बड़ी बेटी वहीं बैठी बैठी एक काशीफल काट रही थी जो उसकी झोंपड़ी के पीछे की तरफ लगी बेल पर से तोड़ा गया था।

उसने अपने पिता का बड़े प्यार से स्वागत किया। वे दोनों वहीं बरामदे में बैठ गये और दोनों ने चावल का खाना नमक काशीफल की सब्जी और भुनी हुई लाल मिर्च से खाया।

बूढ़े कुरवा ने गाँव के तालाब पर अपने हाथ मुँह धोये और फिर आराम से झोंपड़ी पर बिछी हुई एक बोरी पर आ कर सो गया।

अपनी बड़ी बेटी का घर इसको इतना अपना जैसा लगा कि वहाँ उसको बहुत अच्छा लगा और वहाँ उसने बड़ी शान्ति महसूस की।

अगली सुबह कुरवा वहाँ से चल दिया और दोपहर तक घर आ गया। कुरवा की पत्नी उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। कुरवा ने उसको बताया कि उनकी बड़ी बेटी अपने घर में बहुत खुश थी। वह बहुत खुशकिस्मत थी कि उसको इतना अच्छा घर मिला था।

फिर वे सारा दिन अपनी बड़ी बेटी की खुशकिस्मती के बारे में ही बात करते रहे।

कुछ दिन बीत गये कि कुरवा की पत्नी ने कुरवा को अपनी छोटी बेटी के घर जाने के लिये कहा और पता करने के लिये कहा कि वह उसके घर जा कर यह पता कर के आये कि वह अपने घर में खुश है नहीं या कोई चीज़ उसको परेशान तो नहीं कर रही।

एक बार फिर कुरवा अपनी बेटी के घर जाने के लिये तैयार हो गया। अगले दिन सुबह ही कुरवा ने अपना छाता उठाया और घर के पेड़ों के कुछ नारियल लिये और अपनी छोटी बेटी के घर रवाना हो गया।

छोटी बेटी के घर पहुँचते पहुँचते उसको शाम हो गयी। वहाँ जा कर उसने अपने दामाद का नाम ले कर उसके घर का पता पूछा तो लोगों ने उसको एक शानदार दिखायी देने वाले दुमंजिला मकान की तरफ इशारा कर दिया जिसमें लोहे का दरवाजा लगा हुआ था।

कुरवा ने तो उसको देखते ही अपना सिर हिलाया क्योंकि वह तो यह विश्वास ही नहीं कर सका कि वह मकान उसकी बेटी का हो सकता था। पर वह मकान तो उसकी बेटी का ही था।

अपने पिता को आया देख कर वह तुरन्त घर में से बाहर निकल कर आयी और उसका प्रेम से स्वागत किया। उसने उसको अन्दर ले जा कर एक कुर्सी पर बिठाया।

एक गद्दी उसकी कुर्सी पर उसके नीचे रखी थी दूसरी गद्दी उसके पीठ के पीछे रखी थी। क्योंकि उसने पहले कभी गद्दियाँ

इस्तेमाल नहीं की थीं सो उस कुर्सी पर बैठ कर उसको बहुत ही अजीब सा लग रहा था। उसने वे दोनों गद्दियाँ निकाल दीं।

जल्दी ही शाम के खाने का समय हो गया। कुरवा तो खाना खाने के लिये जमीन पर बैठ कर और प्लान्टेन[41] के पत्ते पर खाना खा कर खुश रहता।

पर वहाँ तो उसके लिये एक और कुर्सी उसका इन्तजार कर रही थी। और इससे भी बुरी बात तो यह थी कि खाना मेज पर लगाया जा रहा था।

वहाँ कोई प्लान्टेन का पत्ता नहीं था बल्कि वहाँ तो चमकती हुई स्टील की थालियाँ थीं जिनमें चमकता हुआ सफेद चावल भरा हुआ था। साथ में गर्म गर्म भाप उठते हुए खाने के कई कटोरे थे।

यह सब देख कर तो कुरवा की आँखें चौंधिया गयीं। उसने एक हरी मिर्च माँगी और मछली का भी केवल एक ही टुकड़ा लिया और चावल के ऊपर थोड़ा सा नमक छिड़क कर अपना खाना शुरू कर दिया।

पर उसकी बेटी और दामाद उससे और खाना लेने के लिये जिद करते रहे। उसने उस दिन एक खाने में इतना खाना खाया जितना कि वह दो दिनों में खाता।

---

[41] Plantain is a banana like fruit which is grown and eaten in tropical areas. It is different from banana in size, that it is bigger than that. See its picture above, but its tree is similar to a banana tree.

यह खाना बहुत अच्छा था और मसालेदार था। इसको खा कर वह अपने अन्दर कुछ बेचैनी महसूस करने लगा क्योंकि यह खाना वह कुछ ज़्यादा भी खा गया था।

कुरवा अपनी कुर्सी से उठ गया और उसकी बेटी उसको उसके सोने वाले कमरे तक ले गयी। उस कमरे के बीचोबीच एक पलंग पड़ा हुआ था। इस पलंग पर एक मसहरी[42] लगी हुई थी जो चार लकड़ी के डंडों से बॅधी हुई थी।

कुरवा को लगा कि वह उस मसहरी के ऊपर सोयेगा। लकड़ी के डंडों पर चढ़ना तो एक आदमी के लिये कोई मुश्किल काम नहीं था क्योंकि अपनी सारी ज़िन्दगी तो उसने नारियल के पेड़ों पर चढ़ने में बितायी थी। पर जब वह मसहरी के ऊपर लेटा तो मसहरी तो नीचे गिर गयी।

उसको तो कोई चोट नहीं आयी पर उसके गिरने से जो आवाज हुई उससे सारा घर भाग कर उसके कमरे में आ गया। लोगों ने किसी तरह से अपनी हॅसी दबायी। पर कुरवा ने उस पलंग पर फिर सोने की बहुत कोशिश की पर वह वहॉ नहीं सो पाया। बस या तो वह फर्श पर सोता या फिर कहीं नहीं।

अगले दिन सुबह बेचारा कुरवा अपने पिछले दिन की घटना से सॅभल चुका था। उसकी बेटी उसके कमरे में आयी और उसके लिये उसके दॉत साफ करने के लिये मंजन ले कर आयी।

[42] Translated for the word "Mosquito net". It is used to keep off the mosquitoes.

कुरवा को अपने दाँत साफ करने के लिये पेड़ की हरी डंडी इस्तेमाल करने की आदत थी सो उसने सोचा कि वह पाउडर खाने के लिये था सो उसने उस पाउडर को अपने मुँह में डाल लिया।

उस पाउडर के खाने से उसको बहुत ज़ोर की खाँसी आ गयी। उसकी बेटी फिर भागती हुई आयी और उसको कई गिलास पानी पिला कर ठीक किया।

अब तक कुरवा ने काफी कुछ देख लिया था। उसको लगा कि वह अब इससे ज़्यादा इस मकान में और नहीं रह सकता था। उसने अपना छाता उठाया और जल्दी से सबको नमस्ते कर के वहाँ से चल दिया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी उसका बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। वह उछल कर उसका स्वागत करने के लिये बाहर आयी और अपनी दूसरी बेटी का हाल पूछा कि वह कैसी है।

कुरवा ने अपने माथे से अपना पसीना पोंछा एक लम्बी साँस भरी और कहा — "हमारी छोटी बेटी का हाल ठीक नहीं है। वह बहुत बड़ी मुसीबत में है। उसके पास तो बैठने के लिये घास की एक चटाई भी नहीं है। सुबह सुबह वह एक अजीब से स्वाद का मुट्ठी भर पाउडर खाती है।

और जहाँ तक खाना खाने का सवाल है उसकी सब्जियाँ तो तेल में तैरती हैं और लोगों को वहाँ तब तक खाना पड़ता है जब तक उनका पेट न फटने लगे।"

उसकी पत्नी तो यह सुन कर सकते में आ गयी और उसकी तरफ देखती रह गयी।

कुरवा ने आगे कहा — "और रातें तो वहाँ और भी खराब हैं क्योंकि वहाँ लोगों को एक अजीब से बिस्तर पर चढ़ना पड़ता है। उस पर तो बस केवल एक बन्दर ही चढ़ सकता है।"

बूढ़े कुरवा और उसकी पत्नी ने अपनी अपनी बोरी बिछायी और सोने चले गये। पर उनके खयालों में उनकी छोटी बेटी ही घूमती रही जिसकी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी कि वह फर्श पर सो सकती।

22 सूअर इतने गन्दे क्यों[43]

यह लोक कथा भारत के मेघालय क्षेत्र की लोक कथाओं से ली गयी है। मेघालय भारत की पूर्वीय सीमा पर स्थित है। यहाँ जंगली जानवरों की लोक कथाऐं बहुत लोकप्रिय हैं।

हम सब जानते हैं कि सूअर बहुत गन्दे रहते हैं। पर ऐसा क्यों होता है। मेघालय के लोगों के पास इसका जवाब है। तो आओ पढ़ते हैं कि वे इसकी क्या वजह बताते हैं।

मेघालय के क्षेत्र में जंगल बहुत हैं जो हिमालय की तराई में फैले पड़े हैं और इसकी वजह से वहाँ बारिश बहुत होती है। और बारिश की वजह से वहाँ के पेड़ घास आदि भी बहुत हरे और चमकीले होते हैं।

एक समय में यहाँ बहुत सारे जानवर रहते थे जैसे चीते, हिरन, राइनो[44], खरगोश, जंगली भैंसे, जंगली सूअर आदि। उनमें चीता उन सबका राजा था और दूसरे सभी जानवर उससे डर कर रहते थे।

पर यह चीता एक बहुत ही अच्छा राजा था। वह सिवाय अपनी भूख मिटाने के किसी और जानवर को नहीं मारता था। जब

[43] Why Pigs Are So Dirty – a folktale from Meghalaya, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/33/folktale_meghalaya_indian_folktale.htm

[44] Rhinoceros – a big beast like a big bull. See its picture above.

उसका पेट भरा होता तो वह जंगल में बहुत ही आराम से चलता था। कभी कभी वह किसी गीत की धुन भी गुनगुनाता रहता। कभी कभी वह जंगल में अपने काम से जा रहे दूसरे जानवरों की तरफ देख कर मुस्कुरा भी देता।

एक दिन चीते ने एक जंगली भैंस मारी और उसको मन भर कर खाया। खाना खाने के बाद पानी पीने के लिये वह जंगल में एक तालाब पर गया।

इत्तफाक की बात कि वहीं एक छोटा मोटा सूअर भी पानी पीने के लिये आया। सूअर ने चीते को वहाँ पानी पीते देखा तो वह डर के मारे काँप गया। वह इस आशा में साँस रोक कर खड़ा हो गया कि चीता उसको देखेगा नहीं।

पर चीते ने उसको पहले ही देख लिया था। उसको देख कर चीते ने अपने होठ चाटे और सोचा कि इस सूअर को पकड़ना तो उसके लिये कोई मुश्किल काम नहीं होगा पर इसके लिये उसको उसे डराना नहीं चाहिये नहीं तो इस तालाब पर वह फिर नहीं आयेगा।

ऐसा सोचते हुए और यह बहाना बनाते हुए कि उसने सूअर को बिल्कुल नहीं देखा वह वहाँ से चुपचाप चला गया।

जब चीता सूअर की आँखों से बिल्कुल ओझल हो गया तब जा कर कहीं सूअर की साँस में साँस आयी। उसकी हिम्मत लौट आयी घमंड। उसी घमंड में उसने ज़ोर से कहा कि चीता वहाँ से इसलिये चला गया क्योंकि वह उससे डर गया था।

धीरे धीरे चीता बूढ़ा हो गया और कमजोर भी हो गया। सो एक चीता जो एक छोटे से सूअर से डर गया था उसको राजा के पद से इस्तीफा दे देना चाहिये। बल्कि अब तो उस सूअर को जंगल का राजा हो जाना चाहिये।

राजा बनने के लिये किसी भी जानवर का ताकतवर होना जरूरी है सो यह तय किया गया कि सूअर चीते से लड़े और अपनी ताकत दिखाये।

यह सोच कर ही कि जब वह राजा हो जायेगा तो उसके पास बहुत सारे नौकर होंगे सूअर उस तालाब के किनारे शान से चलने लगा। इत्तफाक से चीता भी वहाँ पानी पीने आया हुआ था। चीते को देख कर उसने चीते को इस तरह पुकारा जैसे किसी नौकर को पुकारते हैं।

खुशकिस्मती से उस समय चीते को पेट भरा हुआ था और वह अच्छे मूड में था इसलिये वह सूअर के बुलाने पर भी नहीं आया।

वह केवल थोड़ा सा गुर्राया और पीछे की तरफ मुँह कर के बोला कि अगर वह उससे लड़ना ही चाहता है तो वह दो दिन बाद उससे लड़ाई के लिये आ सकता था।

सूअर इस पर राजी हो गया और अपने आपको ताकतवर समझते हुए बहुत खुश हो गया। यह सब बताने के लिये खुशी खुशी वह अपने दोस्तों के पास जंगल में चला गया।

उसके सब दोस्त उसको खुश देख कर चौंक गये। उन्होंने उसकी खुशी की वजह पूछी तो सूअर ने अपनी पूँछ हिलाते हुए कहा कि अब उनको उसके साथ ज़्यादा इज़्ज़त से बर्ताव करना चाहिये क्योंकि वह अब उनका होने वाला राजा है।

यह सुन कर उसके दोस्तों को हॅसी आ गयी तो सूअर ने उनको सारी कहानी सुनायी। उसके सारे दोस्त तो उसकी तरफ बड़ी बड़ी ऑखों से देखते के देखते रह गये। उनको तो यह विश्वास ही नहीं हुआ कि उनके दोस्त ने चीते को लड़ने के लिये ललकारा था।

एक ने तो बल्कि उससे यह दोबारा भी पूछ लिया कि क्या वाकई उसने चीते को लड़ने के लिये ललकारा था।

तभी कुछ और जानवर आ गये तो उन्होंने बताया कि चीता उस समय भूखा नहीं था इस वजह से उसने सूअर को छोड़ दिया नहीं तो वह उसको तो उसी समय खा जाता।

उसके सारे दोस्त इस बात पर राजी हो गये कि यही बात ठीक हो सकती थी। जब सूअर ने देखा कि उसके सारे दोस्त ऐसा ही कह रहे हैं तो उसको भी लगा कि शायद उसके दोस्त ठीक कह रहे थे।

यह सोच कर तो वह डर के मारे कॉपने लगा। उसको अपने फैसले पर पछतावा होने लगा कि उसने चीते को लड़ने के लिये क्यों ललकारा। उसने निश्चय किया कि वह अब तालाब पर नहीं जायेगा।

पर उसके दोस्त अभी भी उससे राजी नहीं थे। वे बोले कि अब अगर चीते ने उसको तालाब पर नियत दिन और समय पर नहीं पाया तो वह तो सारे सूअरों से लड़ाई का ऐलान कर देगा। और वह तो गिन गिन कर सारे सूअरों को ढूॅढ ढूॅढ कर मार देगा। यह तो ठीक नहीं है। इसलिये अब यही अच्छा है कि वह अपने किये का सामना करे।

वह छोटा सूअर तो अब अपने ही मजाक से डर रहा था। उसने उनकी सहायता मॉगी तो उन्होंने उसको सलाह दी कि इस बारे में वे उसके लिये कुछ नहीं कर सकते उसको बाबा सूअर से सलाह लेनी चाहिये।

छोटा सूअर तुरन्त ही बाबा सूअर के पास पहुॅचा और जा कर उनको सारी कहानी बतायी।

बाबा सूअर उस समय अपना दोपहर का खाना खा रहे थे पर फिर भी उन्होंने छोटे सूअर को इस काम के लिये एक अच्छी डॉट पिलायी। छोटा सूअर उनके पैरों पर गिर पड़ा और उनसे उसको इस परेशानी से निकालने के लिये सहायता मॉगी।

तब बाबा सूअर उसके कान में फुसफुसाये कि इससे पहले कि वह चीते के पास जाये उसको अपने आपको जितना गन्दा वह कर सकता है कर लेना चाहिये।

छोटा सूअर तो बाबा सूअर की इस सलाह पर उछल पड़ा। उसने वैसा ही किया जैसा बाबा सूअर ने उससे करने के लिये कहा था।

चीते के पास जाने से पहले वह कीचड़ में खूब अच्छी तरह से लोटा और फिर अपने आपको सुखाया। वह फिर लोटा और फिर सुखाया। ऐसा उसने कई बार किया तो जब तक वह चीते के पास पहुँचा तब तक तो वह सूअर बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। वह तो बस गन्दगी का एक बहुत बड़ा ढेर लग रहा था।

चीता तो वहाँ पहले ही पहुँचा हुआ था। वह वहाँ अपने खाने का इन्तजार कर रहा था। पर जब उसने अपने सामने एक छोटे मोटे सूअर की बजाय गन्दगी के एक बड़े ढेर को देखा तो वह तो दंग रह गया। उसको उस सूअर को इतना गन्दा देख कर बहुत धक्का लगा।

उस छोटे सूअर ने उसको बताया कि वह वही सूअर था जिसके साथ उसको लड़ाई लड़नी थी। चीते ने सूअर की तरफ एक बार और देखा और नफरत से अपनी नाक सिकोड़ ली।

स्वादिष्ट सूअर खाने के उसके सब सपने चूर चूर हो गये थे। अब तो वह उससे बस छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोच रहा था। वह उस पर गरजा और उससे अपनी नजरों से दूर हो जाने के लिये कहा।

हालाँकि सूअर की टाँगें डर के मारे काँप रहीं थी पर फिर भी वह वहाँ से तुरन्त ही भाग लिया। भागा भागा वह सीधा बाबा सूअर के पास गया और दिल से उनका धन्यवाद किया।

उसके बाद जंगल के सारे सूअरों ने एक मीटिंग की और उसमें यह तय किया कि वे हमेशा गन्दे ही रहेंगे ताकि चीते को उनको खाने का लालच न आ सके।

और इसी लिये आज तक सारे सूअर इतने गन्दे रहते हैं।

23 आधा आधा[45]

यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह लोक कथा दो ऐसे लोगों की है जो एक ही गॉव में रहते थे और दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। एक का नाम था बन्ता सिंह और दूसरे का नाम था घंटा सिंह। ये आपस में एक दूसरे को पसन्द भी बहुत करते थे और एक दूसरे के साथ साथ ही रहते थे।

पर इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर था। घंटा सिंह एक चालाक और मौके का फायदा उठाने वाला आदमी था जबकि बन्ता सिंह एक बहुत ही ईमानदार और सीधा सादा आदमी था।

बन्ता सिंह हमेशा उन बातों को मान लेता था जो घंटा सिंह उससे कहता। वह घंटा सिंह के प्लान में कभी फायदे या नुकसान के बारे में नहीं सोचता था।

न तो बन्ता सिंह के पास ही ज़्यादा पैसा था और न घंटा सिंह के पास ही बहुत पैसा था। अब यह बात तो साफ है कि जब उनके पास ज़्यादा पैसा नहीं था तो उनके पास बहुत ज़्यादा सामान भी नहीं था।

[45] Fifty-Fifty – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/fiftyfifty_indian_folktale.htm

एक दिन घंटा सिंह के दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया प्लान आया सो उसने बन्ता सिंह से पूछा कि क्या वह उसके इस प्लान में उसका साथी बनेगा। जैसा कि हमेशा होता था बन्ता सिंह तुरन्त ही राजी हो गया।

घंटा सिंह ने कहा कि क्योंकि उनके पास बहुत सारा सामान तो है नहीं तो क्यों न वे अपने सामान को बॉट कर इस्तेमाल करें। वे अपना अपना सामान आपस में बराबर बराबर बॉट लेते हैं।

बन्ता सिंह ने इस विचार से खुश हो कर घंटा सिंह का हाथ इतने ज़ोर से पकड़ कर हिलाया कि उसका तो हाथ ही चटक गया।

घंटा सिंह ने एक पल सोचा और फिर बन्ता सिंह से कहा कि उनके पास तीन चीज़ें एक सी थीं। घंटा सिंह के पास एक गाय थी और बन्ता सिंह के पास एक अच्छा गरम कम्बल था और उसके घर के पीछे बेर[46] का एक पेड़ था। सो वे इन तीनों चीज़ों को आपस में बराबर बराबर बॉट लेंगे।

सीधा सादा बन्ता सिंह घंटा सिंह की चालाकी को भॉप भी नहीं सका और इस बॅटवारे पर राजी हो गया।

घंटा सिंह ने पहले ही सब बॅटवारा कर रखा था। उसने बन्ता सिंह से कहा कि गाय का आगे का हिस्सा बन्ता सिंह का होगा और उसके पीछे का हिस्सा वह खुद ले लेगा।

---

[46] Ber is called wood apple.

बेर के पेड़ का तना और जड़ बन्ता सिंह ले लेगा और वह अपना काम केवल उसके पत्ते और टहनियों से ही चला लेगा।

और जहाँ तक कम्बल का सवाल है बन्ता सिंह उसको दिन भर अपने पास रख सकता है क्योंकि दिन में घंटा सिंह को उसकी जरूरत नहीं थी।

यह सुन कर बन्ता सिंह ने उसके इस बॅटवारे का विरोध किया कि कम्बल तो वह भी इस्तेमाल करना चाहता था। इस पर चालाक घंटा सिंह बोला कि वह खुद उस कम्बल को केवल रात में ही इस्तेमाल करेगा सो वह उसे दिन में इस्तेमाल कर सकता है।

इस तरह से इस बॅटवारे के साथ पहले एक हफ्ता गुजरा। फिर दो हफ्ते गुजरे। और फिर धीरे धीरे एक महीना गुजर गया। अब बन्ता सिंह को लगने लगा कि घंटा सिंह के बॅटवारे में कहीं कुछ गलत है।

क्योंकि गाय का अगला हिस्सा उसके पास था तो यह उसका काम था कि वह सुबह सुबह उठे और उसको खाना खिलाये। उसके लिये कुँए से बालटी भर कर पानी भी लाये ताकि वह उसको दो बार ताजा पानी पिला सके।

अब क्योंकि गाय के पीछे का हिस्सा घंटा सिंह का था तो उसका काम उसको दुहने का था। वह रोज सुबह सुबह उसका एक बड़ा गिलास भर कर मखनी दूध पी जाता था। जबकि बन्ता सिंह को चाय का केवल एक छोटा सा गिलास ही मिल पाता।

जहाँ तक कम्बल का सवाल था वह बन्ता सिंह के बिस्तर पर सारा दिन ऐसे ही रखा रहता। वह दिन में तो उसको इस्तेमाल ही नहीं करता था क्योंकि वह सुबह सुबह ही उठ जाता और फिर सारे दिन अपने काम में लगा रहता। वह उसको कब इस्तेमाल करता।

जब रात होती तो घंटा सिंह उसको उसके पास से ले जाता और उसमें दुबक कर उसकी गर्मी में सो जाता। जबकि बन्ता सिंह को अपने आपको गर्म रखने के लिये रात घुटने पेट में घुसा कर गोला बन कर गुजारनी पड़ती।

बन्ता सिंह अपने पेड़ के बेर खाना चाहता था। महीनों तक उसने अपने पेड़ की सेवा की थी। उसके आस पास की बेकार की घास साफ की थी। उसकी जमीन जोती थी। जब भी उसको जरूरत थी उसको खाद दी थी पानी दिया था। उसके फल उसकी आँखों के सामने आ रहे थे।

पर जब पहले पहले बेर आये तो घंटा सिंह ने उनको तोड़ कर खा लिया। उसने बन्ता सिंह को एक बेर देना तो दूर उससे एक बार पूछा भी नहीं कि क्या वह बेर खायेगा।

इन सब घटनाओं से परेशान हो कर बन्ता सिंह घंटा सिंह से बहुत लड़ा। इस पर बेशर्म घंटा सिंह बोला कि ऐसा ही तय हुआ था कि बेर के पेड़ की टहनियाँ और पत्ते घंटा सिंह के थे। अब बेर तो टहनियों पर ही लगते हैं इसलिये फल उसी के थे।

बन्ता सिंह इस बात पर नाराज तो बहुत हुआ पर कर कुछ नहीं सका क्योंकि बॅटवारा तो ऐसे ही हुआ था। आखिर परेशान सा वह घूमने निकल गया। वह चलता गया चलता गया कि चलते चलते वह अपने गॉव के पास वाले जंगल के पास आ निकला।

वहॉ उसे एक साधु मिल गया जिसकी लम्बी लम्बी जटाऐं थीं और उसके सारे शरीर पर भस्म मली हुई थी। साधु ने बन्ता सिंह की तरफ देखा तो देखा कि वह बहुत दुखी सा चला आ रहा था।

साधु ने उससे उसके दुखी होने की वजह पूछी और उसने उसकी सहायता करने का वायदा भी किया अगर वह उसको अपने दुखी होने की वजह बता दे तो।

बन्ता सिंह ने उसको वे सारी घटनाऐं बता दीं जो पिछले कुछ दिनों में हुई थीं। सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने कहा कि घंटा सिंह ने उसको धोखा दिया है। उसको अपने दोस्त की बात नहीं माननी चाहिये थी।

तब उसने उसको बताया कि उसको क्या करना है और यह उसको घंटा सिंह को सबक सिखाने के लिये करना ही चाहिये।

सारा प्लान सुन कर बन्ता सिंह बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी घर वापस आया। जब शाम को दोनों दोस्तों ने खाना खा लिया तो घंटा सिंह सोने चला। बन्ता सिंह ने कम्बल उठाया उसको पानी में डुबोया और घंटा सिंह को दे दिया।

यह देख कर घंटा सिंह तो बस चीख ही पड़ा। उसका यह काम देख कर तो उसको बहुत गुस्सा आया। उसने गुस्से में भर कर बन्ता सिंह से पूछा कि उसने वह कम्बल पानी में क्यों भिगोया।

बन्ता सिंह ने ठंडे स्वर में जवाब दिया कि दिन में तो कम्बल उसका था सो वह उसका जो चाहे वह कर सकता था। चाहे वह पानी में भिगोये या सूखा रखे इससे उसे क्या मतलब।

घंटा सिंह तो यह देख सुन कर इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया।

वह यह सोचने लगा कि आज बन्ता सिंह को क्या हुआ था जो वह उससे ऐसा बर्ताव कर रहा था। पर वह कुछ बोला नहीं। वह बस सोते में बड़बड़ाता रहा हालाँकि वह सारी रात ठंड से काँपता रहा।

अगली सुबह घंटा सिंह उठा और जल्दी जल्दी गाय दुहने चला। अब बन्ता सिंह तो पहले ही जाग चुका था। उसने गाय को चारा भी खिला दिया था और ताजा पानी भी पिला दिया था पर फिर भी वह वहीं घूम रहा था।

घंटा सिंह ने अपने घुटनों के बीच बालटी रखी और गाय को दुहने के लिये बैठ गया। जब उसकी बालटी आधी भर गयी तो बन्ता सिंह ने घास के एक तिनके से गाय की नाक में गुदगुदी कर दी।

बन्ता सिंह के गुदगुदी करने से गाय कूद पड़ी। उसने घंटा सिंह की वालटी में अपनी लात मारी तो बालटी घंटा सिंह के मुॅह में जा कर लगी जिससे उसमें रखा दूध बिखर गया और उसका जबड़ा भी बुरी तरह जख्मी हो गया।

अब तो घंटा सिंह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह बन्ता सिंह पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। इस पर बन्ता सिंह फिर शान्ति से बोला कि गाय का अगला हिस्सा उसका अपना था वह वहॉ कुछ भी करे।

यह सुन कर घंटा सिंह फिर चुप रह गया वह तो कुछ बोल ही नहीं सका। उस सुबह वह अपना बड़ा गिलास भर कर दूध भी नहीं पी सका क्योंकि दूध तो करीब करीब सारा ही बिखर गया था। बालटी में बहुत थोड़ा सा दूध बचा था तो वह उसकी केवल एक छोटा सा गिलास चाय ही पी सका।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर चढ़ा तो घंटा सिंह बेर के पेड़ की तरफ चल दिया और उसकी एक डाल पर बैठ कर एक एक कर के उसके बेर खाने लगा। तभी अचानक बन्ता सिंह वहॉ कुल्हाड़ी ले कर आ गया और पेड़ का तना काटने लगा।

घंटा सिंह को बन्ता सिंह के इरादों का पता चल गया तो वह तो बहुत घबरा गया। उसने बन्ता सिंह से पूछा कि वह बेर के पेड़ का तना क्यों काट रहा था इससे तो वह गिर जायेगा।

बन्ता सिंह हँसा और बोला कि पेड़ का तना तो उसका अपना था वह उसका जो चाहे करे। घंटा सिंह उसको रोक नहीं सकता था।

आखिर घंटा सिंह को पता चल गया कि वह अपने दोस्त को धोखा नहीं दे सकता था। इसलिये उसने अपने इस बँटवारे में बदल कर ली। इस बार यह बँटवारा बन्ता सिंह ने किया और वह क्योंकि बहुत सीधा और एक न्यायपूर्ण आदमी था सो उसका बँटवारा भी न्यायपूर्ण था।

क्या था उसका बँटवारा? उसने कहा कि उसका कम्बल एक रात बन्ता सिंह इस्तेमाल करेगा और एक रात घंटा सिंह। गाय की देखभाल भी दोनों करेंगे और दूध भी दोनों आधा आधा बाँटेंगे।

बेर के पेड़ की देखभाल भी वे लोग दोनों एक साथ करेंगे। और फिर जब बेर के पेड़ पर फल आयेंगे तो उनको भी वे आधे आधे बाँट लेंगे।

घंटा सिंह ने इस बँटवारे को स्वीकार किया। वह बन्ता सिंह के साथ इस तरह से चीज़ें बाँटने पर बहुत खुश था। अब दोनों फिर से बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे। बँटवारा न्यायपूर्ण ढंग से ही करना चाहिये।

24 राक्षस के लिये काम[47]

यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा यह दिखाती है कि लालच किसी आदमी को कहॉ तक गिरा देता है।

पंजाब अपनी उपजाऊ जमीन और अपने अमीर किसानों के लिये बहुत मशहूर है। इस लोक कथा में एक अमीर किसान किस तरह लालची बन जाता है और फिर किस तरह अपने उस लालच की वजह से मुसीबत में फॅस जाता है यही बताया गया है।

यह लोक कथा यह भी बताती है कि जब कोई आदमी मुसीबत में फॅस जाता है तो कैसे उसको एक स्त्री उस मुसीबत से बाहर निकालती है – अपनी ताकत से नहीं बल्कि अपनी अक्लमन्दी से।

एक बार की बात है कि पंजाब के एक गॉव में शेरदिल नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बहुत ही अमीर आदमी था। उसके पास खेती के लिये कई एकड़ जमीन थी और इतने सारे जानवर थे कि उसको यही पता नहीं था कि वह उनका क्या करे।

शेरदिल ने अपने खेतों का काम करने के लिये भी सौ आदमी नौकरी पर रखे हुए थे। वह इतना अमीर जरूर था पर वह कंजूस भी बहुत था। वह नौकरों को खाना खिलाने के लिये और उनको

---

[47] Work For the Demon – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/punjabi_folktale_indian_folktale.htm

उनकी तनख्वाह देने के लिये ज़रा सा भी पैसा खर्च नहीं करना चाहता था।

शेरदिल की एक पत्नी थी जिसका नाम था गुलाबो। उसका स्वभाव शेरदिल के स्वभाव से बिल्कुल उलटा था। वह धीरज रखने वाली थी अच्छे स्वभाव की थी और बहुत अक्लमन्द थी।

जब भी कभी शेरदिल खर्चे के बारे में भुनभुनाता तो वह उसको डॉटते हुए कहती कि तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि हमको उनको पैसा नहीं देना चाहिये या हमको उनके खाने पर खर्च नहीं करना चाहिये।

वे लोग हमारे लिये सारे साल कितना काम करते हैं। इसलिये उनको उनकी तनख्वाह देने में तुमको परेशानी क्यों होती है। उनको उनकी तनख्वाह तो मिलनी ही चाहिये। बल्कि भगवान ने तुमको जो कुछ भी दिया है उसके लिये तुमको भगवान को धन्यवाद देना चाहिये।

पर गुलाबो की बातों का शेरदिल पर कोई असर नहीं पड़ता।

एक दिन शेरदिल अपना हिसाब किताब करने बैठा तो तुरन्त ही अपने नौकरों के ऊपर किये गये खर्चे के ऊपर भुनभुनाने लगा। वह बोला कि इस सारे काम के लिये वह केवल एक नौकर ही रखेगा। उसकी पत्नी ने उसके इस विचार का विरोध किया।

असल में उसके दिमाग में एक बहुत ही बुरा विचार आया था कि अपना काम करने के लिये वह इतने सारे नौकरों की बजाय एक

राक्षस रखेगा। वह उसका सारा काम कर देगा। जितना वह इस बारे में सोचता रहा उतना ही उसको यह विचार अच्छा लगता रहा।

आखिर शेरदिल ने उस साधु के पास जाने का अपना दिमाग बना ही लिया जो लोगों को ऐसा वरदान दे कर उनकी मुश्किलों को आसान बना दिया करता था। सो वह उस साधु के पास चल दिया।

शेरदिल को उस साधु के पास पहुँचने में दो दिन लग गये। उसकी झोंपड़ी एक घने जंगल में थी। जब शेरदिल उस साधु के पास पहुँचा तो वह ध्यान में बैठा हुआ था।

काफी देर के बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और शेरदिल को अपने सामने बैठा देख कर उससे पूछा कि वह वहाँ क्यों आया था और उसे क्या चाहिये था। शेरदिल ने उसको सिर झुकाया और अपने आने का मतलब बताया। साधु ने तुरन्त ही उसकी इच्छा पूरी कर दी।

उसने एक डंडी उठायी अपनी आँखें बन्द कीं कुछ शब्द बुड़बुड़ाये और वह डंडी जमीन में गाड़ दी। कुछ पल में ही उसमें से धुँए की एक पतली सी लकीर निकलनी शुरू हो गयी। धीरे धीरे वह धुँआ एक छोटा सा बादल बन गया और उसमें से बिजली कड़कने की सी आवाज होने लगी।

और उसमें से निकला एक नीले रंग का बहुत बड़ा सा राक्षस – इतना बड़ा जितना कि एक पीपल का पेड़ होता है।

वह राक्षस इतना भयानक लग रहा था कि शेरदिल उसको देख कर भागना चाह रहा था पर किसी तरह वह वहाँ रुका रहा।

राक्षस गरजा और उसने पूछा कि उसको वहाँ क्यों बुलाया गया है। जब साधु ने उसको पूरी बात बतायी तो राक्षस एक बार फिर गरजा और उसने पूछा कि क्या शेरदिल को उसके काम करने की शर्तों का पता था।

उसकी शर्त यह थी कि उसको दिन रात काम मिलना चाहिये। जिस समय भी उसको काम नहीं दिया गया तो वह शेरदिल को ही खा जायेगा।

शेरदिल यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला कि उसके पास तो इतना काम था कि उसको तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलेगी। फिर उसने राक्षस से कहा कि वह उसको उसके घर पहुँचा दे।

शेरदिल के मुँह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि राक्षस ने उसको उठाया अपने बाँये कान के पीछे रखा और आसमान में उड़ गया। इस डर से कि वह कहीं गिर न पड़े शेरदिल ने राक्षस का कान अपने दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ रखा था और बाहर झाँक रहा था।

धरती उसको बहुत सारे रंगों की एक गेंद सी लगी। उसने तो डर के मारे अपनी आँखें ही बन्द कर लीं। यकायक वह राक्षस नीचे

ऐसे उतरने लगा जैसे किसी ने हवा में अंडा फेंक दिया हो। पल भर में ही उसने शेरदिल को उसके घर की सीढ़ियों पर उतार दिया।

शेरदिल तो उसकी इस छोटी सी उड़ान से ही थक गया था सो वह घर के अन्दर अपनी पत्नी को देखने के लिये भागा। लेकिन वह खुश भी बहुत था सो खुशी में आ कर उसने उसको दिखाया कि वह क्या कर के आया था।

इससे पहले कि उसकी पत्नी उसके जवाब में कुछ कहती शेरदिल ने अपने सारे नौकरों को नौकरी से निकाल दिया और राक्षस को अपने खेत जोतने के लिये भेज दिया।

उसके बाद उसने कुछ जँभाइयाँ लीं और एक अच्छी सी नींद लेने के लिये अपने बिस्तर पर लेट गया। लेटते ही उसकी आँख लग गयी और वह सपना भी देखने लगा।

वह सपना देख ही रहा था कि किसी ने उसको कन्धे से पकड़ कर बहुत ज़ोर से हिलाया। जैसे ही उसने अपनी आँख खोलीं तो देखा कि राक्षस उसके ऊपर झुका खड़ा था और उससे और दूसरा काम पूछ रहा था।

शेरदिल तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सका। उसकी इतनी एकड़ जमीन थी और वह राक्षस उसे इतनी जल्दी जोत कर वापस आ गया था।

वह अपने घर की छत पर चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा कि वाकई उसने उसकी सारी जमीन जोत दी थी या नहीं। उसने देखा कि वाकई उसने उसकी वह सारी जमीन जोत दी थी।

सो उसने उसको उस मिट्टी में खाद ला कर मिलाने के लिये, बीज बोने के लिये और खेतों को पानी देने के लिये कहा। राक्षस तुरन्त ही वहाँ से गायब हो गया और शेरदिल फिर सो गया।

पर अभी उसने केवल दो चार खर्राटे ही मारे थे कि किसी ने उसे नींद से फिर जगा दिया। इस बार उसने उसे और ज़्यादा ज़ोर से जगाया और फिर से उसे और काम देने के लिये कहा क्योंकि उसने उसका पहले वाला दिया हुआ काम खत्म कर लिया था।

अब तक शेरदिल उससे कुछ तंग आ चुका था सो उसने उसको अपनी जमीन के चारों तरफ एक बाड़ लगाने के लिये कहा। राक्षस यह सुन कर फिर से वहाँ से चला गया पर शेरदिल अबकी बार उसके जाने के बाद सोया नहीं।

अपने रसोईघर की खिड़की से वह उसको लकड़ी और कुछ औजार इकट्ठे करता देखता रहा। उसने देखा कि वह एक के बाद एक लकड़ी काटता जाता और उनको हवा में उछालता जाता। वे लकड़ियाँ उछल उछल कर अपनी जगह पर लगती जातीं।

जैसे ही शेरदिल ने अपनी शाम की चाय पी वह राक्षस अपना काम खत्म कर के फिर उसके पास और काम माँगने आ पहुँचा था।

अबकी बार शेरदिल ने उसके लिये काम सोच कर रखा हुआ था। उसने कहा कि वह उसके खेत में बना तालाब खाली कर दे और उसको नदी के ताजा पानी से भर दे। राक्षस यह सुन कर यह काम करने भी चला गया।

रात होने से पहले पहले वह यह काम खत्म कर के आ गया और बोला कि उसने उसका कहा वह काम कर दिया अब उसको कोई और काम दिया जाये।

अब शेरदिल को अपने पास कोई काम दिखायी नहीं दे रहा था सो वह बोला कि अब वह कुछ आराम कर ले। इस पर राक्षस बड़ी ज़ोर से एक भयानक हॅसी हॅसा और बोला कि उसने तो कभी आराम किया ही नहीं वह नहीं जानता कि आराम क्या होता है।

इतनी देर में शेरदिल को इतनी हिम्मत आ गयी थी कि वह उससे यह कह सका कि अब वह अगली सुबह तक के लिये आराम करना चाहता था सो तब तक वह उसके खेतों की रखवाली करे ताकि जंगली जानवर उसके खेतों में न घुस सकें और उसके खेत बर्बाद न कर सकें।

राक्षस तो उसके खेतों की रखवाली करने चला गया पर शेरदिल की ऑख सारी रात एक पल को भी नहीं झपकी। वह यही सोचता रहा कि वह कल सुबह उसको क्या काम देगा।

सुबह होने से पहले उसने अपनी पत्नी को उठाया और रोते हुए उसे अपनी परेशानी बतायी। गुलाबो ने उसको तसल्ली दी कि वह

बिल्कुल चिन्ता न करे और सब कुछ उसके ऊपर छोड़ दे। वह सब ठीक कर देगी।

जैसे ही सूरज निकला राक्षस ने शेरदिल के घर का दरवाजा ज़ोर ज़ोर से पीटना शुरू किया और चिल्लाया "मुझे और काम दो।"

गुलाबो ने बहुत ही ज़रा सा दरवाजा खोला और उसकी झिरी में से बाहर झाँका। राक्षस को देख कर वह दरवाजे के बाहर निकली और उससे बोली — "देखो सामने यह कुत्ता जा रहा है इसकी पूँछ टेढ़ी है ज़रा इसकी पूँछ सीधी कर दो।"

राक्षस झुका और उसकी पूँछ पकड़ कर उसकी पूँछ सीधी करने के लिये उसको एक झटका दिया तो उसकी पूँछ उस समय तो सीधी हो गयी पर जैसे ही उसने उसको छोड़ा तो वह फिर से टेढ़ी हो गयी।

राक्षस ने उसकी पूँछ फिर से पकड़ कर उसको झटका दिया तो वह एक बार फिर सीधी हो गयी। वह उसको पाँच मिनट तक पकड़े रहा पर फिर जब उसने उसको छोड़ा तो वह फिर से टेढ़ी हो गयी।

ऐसा उसने कई बार किया पर कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं हुई। कुत्ता भी इतनी देर तक उसको अपनी पूँछ से खेलते देखता रहा। पर अचानक उसका धीरज छूट गया। वह उछल कर राक्षस पर कूद पड़ा।

दोनों एक दूसरे के पीछे भागने लगे राक्षस उसकी पूँछ पकड़ने के लिये और कुत्ता उसके ऊपर भौंकते हुए उसको काटने के लिये।

यह सब घंटों तक चलता रहा। आखिर राक्षस कुत्ते को पकड़ने की कोशिश करते करते थक गया। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि वह उसको दिया गया काम नहीं कर पाया था सो वह अपने आपसे शर्मिन्दा भी था।

उसमें अब शेरदिल के परिवार के सामने आने की हिम्मत नहीं थी सो वह उसी जंगल में जा कर छिप गया जहाँ से वह आया था।

राक्षस के जाने के बाद शेरदिल और उसकी पत्नी ने चैन की साँस ली। शेरदिल ने अपने सारे नौकरों को वापस बुला लिया और नौकरी शुरू करने से पहले खूब अच्छा खाना खिलाया। और फिर उसके बाद कभी उनकी तनख्वाह और खाने के बारे में शिकायत नहीं की।
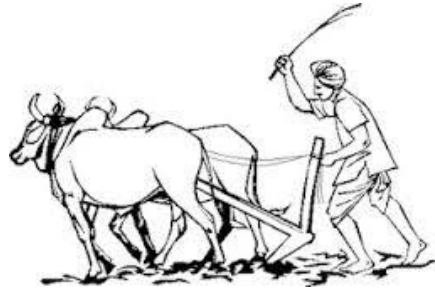
25 छिपी हुई घाटी[48]

यह लोक कथा भारत के सिक्किम प्रदेश की लोक कथाओं से ली गयी है जो वहॉ की लैपचा जनजाति[49] में कही सुनी जाती हैं। ये लोग यहॉ बहुत पुराने आये हुए हैं और कंचनजंगा के ढाल पर आ कर बस गये हैं।

और बहुत सारी जनजातियों के लोगों की तरह से ये लोग भी कहानियॉ कहना सुनना बहुत पसन्द करते हैं। जाड़ों के मौसम में ये लोग आग के पास इकट्ठा हो कर बैठ जाते हैं और फिर कई विषयों पर कहानियॉ कहते सुनते हैं।

इनकी बहुत सारी कहानियॉ दुनियॉ बनाने, लैपचा लोग कैसे जन्मे, मौसम, प्राकृतिक चीज़ों और भूतों और राक्षसों की होती हैं। इनकी यह कहानी बहुत पुरानी है और यह खास तरीके से उन लोगों में कही सुनी जाती है जो शुरू शुरू में सिक्किम में आ कर बसे थे।

यह कहानी उन लोगों में केवल मुॅह से ही कह कर पीढ़ी दर पीढ़ी दी जाती रही है।

सो लेपचा लोग कंचनजंगा की ढालू पहाड़ियों पर रहते हैं और वहॉ की पहाड़ियों की चोटियों को बड़े आश्चर्य से देखते हैं।

---

[48] The Secret Valley – a folktale from Sikkim, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/sikkimese_folktale_indian_folktale.htm

[49] Lepcha Tribe of Sikkim, India

उनका विश्वास है कि कंचनजंगा देवताओं और आत्माओं का घर है इसलिये बहुत पवित्र है। उनका यह भी विश्वास है कि कंचनजंगा की पहाड़ियों के पीछे एक छिपी हुई घाटी है जिसका नाम मायैल[50] है और इस घाटी में उन लोगों के पुरखे रहते हैं।

सैंकड़ों साल हो गये हैं पर इनका अभी भी यही विश्वास है कि वे लोग अभी भी वहॉ रह रहे हैं। वहॉ कोई नहीं जा सकता क्योंकि राक्षस मायैल के रास्ते की रक्षा करते हैं और वे वहॉ से किसी को नहीं गुजरने देते।

इसके अलावा उस रास्ते पर एक बहुत बड़ा पत्थर भी पड़ा हुआ है जिसे कोई आदमी नहीं हटा सकता।

एक समय था जब उनके ये पुरखे इस घाटी में आया करते थे जहॉ आजकल लैपचा लोग रहते हैं। वे इन लोगों में मिलते थे और उनकी खुशी और दुख में शामिल होते थे।

पर अब वे ऐसा नहीं करते क्योंकि वे समझते हैं कि लैपचा की नयी पीढ़ी अब उतनी पवित्र और अच्छी नहीं रही जैसी कि उसको होनी चाहिये।

जब उन पुरखों का आना रुक गया तो वे सब बहुत दुखी हुए। वे अपने पुरखों को ढूँढते रहे पर वे उनको कहीं मिले ही नहीं। सैंकड़ों सालों तक वे उनके आने की आशा करते रहे।

[50] Mayel

एक दिन एक बहादुर लैपचा दूर जंगल में शिकार करने के लिये गया तो वहाँ वह एक नदी के पास आया। उस नदी में एक पेड़ की एक शाख बहती चली आ रही थी।

बजाय इसके कि उस शाख पर पत्तियाँ लगी होतीं उसने देखा कि उस पर तो नीली–हरे रंग की सुइयाँ लगी हुई थीं और उसकी छाल ऐसी थी जैसे सोने की हो।

वह नौजवान जानता था कि ऐसा कोई पेड़ वहाँ घाटी में तो नहीं था जिसकी वह शाख होती सो उसने सोचा कि वह शाख जरूर ही मायैल से आयी होगी। और इसका मतलब यह भी था कि वह पेड़ नदी के ऊपर की तरफ था।

उसने अपना शिकार का थैला वहीं जंगल की जमीन पर रखा और शिकार को भुला कर वह उस नदी के ऊपर की तरफ पहाड़ी पर चढ़ने लगा। वह नदी के साथ साथ ऊपर चढ़ता जा रहा था। हालाँकि यह सब उसको इतना अच्छा लग रहा था कि वह कई दिनों तक चढ़ता रहा पर थका नहीं।

इस समय में उसने जंगल पार किया बर्फ से ढकी कई पहाड़ियाँ पार कीं। कई दिनों तक चलने के बाद वह एक खुली जगह में आ निकला। इस खुली जगह के बीच में एक झील थी। झील के चारों तरफ उस लैपचा नौजवान ने बहुत सारे सफेद पंख देखे।

उनको देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वे सफेद पंख किस चिड़िया के हो सकते थे।

उसने अपना चलना जारी रखा और आखीर में वह चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरी एक हरी चमकती घास से भरी घाटी में पहुँच गया। यह जगह ही मायैल थी – लैपचा लोगों के पुरखों की जगह।

जिस समय वह नौजवान उस घाटी के पहले मकान तक पहुँचा तो सूरज डूब रहा था। उसने उस मकान का लकड़ी का मोटा सा दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला।

वह उसको अन्दर ले गयी। उसने उसको एक कालीन पर बिठाया। फिर वह उसके पैर धोने के लिये गर्म पानी ले कर आयी।

बाद में जब उसने आराम कर लिया तो उसने उसको सादे से भुने हुए अनाज, फल और दूध का खाना खिलाया जिससे उसका पेट भर गया।

तभी वहाँ पर एक बूढ़ा आ गया। नौजवान लैपचा को पता चला कि वह बूढ़े पति पत्नी वहाँ उस मकान में अकेले ही रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था।

वह नौजवान लैपचा उस कालीन पर लेट गया और बहुत जल्दी ही सो गया। वह सुबह होने तक गहरी नींद सोता रहा। सुबह उसकी आँख बच्चों के खेलने की आवाज से खुली।

वह अपने बिस्तर से बाहर निकला तो उसने देखा कि एक लड़का और एक लड़की उस घर के चारों तरफ खेल रहे हैं। उसने सोचा कि वे उनके पड़ोसी के बच्चे होंगे और वे बूढ़ा और बुढ़िया दोनों खेतों पर काम पर गये होंगे।

पर जब उसने बच्चों से पूछा कि तुम कौन हो तो वे बहुत ज़ोर से हॅस पड़े। वे बोले कि वे तो वे बूढ़ा और बुढ़िया थे जिनसे वह कल रात मिला था।

यह सुन कर तो वह नौजवान बहुत ही परेशान हो गया। उसकी तो कुछ समझ में ही नहीं आया कि वे क्या कह रहे थे और वह क्या सुन रहा था।

बच्चों ने उसे बताया कि उनकी दुनियॉ किस तरह काम करती थी। सुबह वे लोग बच्चे बन जाते थे। दोपहर तक वे बड़े हो जाते थे और शाम तक फिर बूढ़े हो जाते थे। पर अगली सुबह वे फिर बच्चे बन जाते थे। हमेशा वे इसी तरह रहते थे।

वह नौजवान लैपचा उस घाटी में वहॉ सात दिन तक रहा। वह वहॉ चारों तरफ घूमा चारों तरफ के दृश्य देखे उसने उस तरह के पेड़ों का एक पूरा जंगल देखा जिसकी हरी–नीली सुइयॉ थीं और सोने की छाल थी।

सुबह शाम उसने आसमान में इधर से उधर उड़ते हुए उन चिड़ियों के झुंड देखे जिनके सफेद पंख थे।

सात दिन बीतने के बाद बुढ़िया ने उससे कहा कि अब उसको अपनी दुनियॉ में वापस चले जाना चाहिये क्योंकि साधारण दुनियॉ का कोई भी साधारण आदमी वहॉ नहीं रह सकता था।

उसके वहॉ से आते समय उस बुढ़िया ने उसको कई तरह के अनाजों के बीज दिये और कहा कि अगर वह उन बीजों को जमीन

में बो देगा तो हमेशा ही उसको लोगों के खाने के लिये काफी रहेगा। पर इनको उसे ठीक समय पर बोना चाहिये।

नौजवान ने पूछा कि यह उसको कैसे पता चलेगा कि इनको बोने का ठीक समय क्या है कि तभी सफेद पंखों वाली चिड़ियों का एक झुंड ऊपर आसमान में उड़ता गया।

वह बुढ़िया उन चिड़ियों को देख कर मुस्कुरायी और बोली कि वह ठीक समय पर सफेद पंखों वाली चिड़ियों का एक झुंड उधर भेजेगी वही उन बीजों के बोने का ठीक समय होगा।

लैपचा लोगों का विश्वास है कि इस तरह से उनको अनाज के दाने मिले। आज तक भी जब भी कभी वे सफेद पंखों वाली चिड़ियें आसमान में उड़ते देखते हैं तो उनको पता चल जाता है कि उनके अनाज बोने का समय आ गया।

जब वे बीज बो चुकते हैं तब वे मायैल के अपने पुरखों की प्रार्थना करते हैं कि वे उनको उनके बीजों की अच्छी पैदावार दें।

26 जौनपुर का काज़ी[51]

बहुत पहले उत्तर प्रदेश में मौलवी साहब या काज़ी बहुत ही मुख्य आदमी हुआ करते थे। मौलवी साहब अक्सर बच्चों को प्राइमरी स्कूलों में पढ़ाया करते थे। उत्तर प्रदेश में मौलवी लोगों की कई लोक कथाऐं मशहूर हैं। ऐसे ही एक मौलवी साहब की लोक कथा हम यहाँ तुम्हारे लिये दे रहे हैं।

एक बार एक मौलवी साहब थे जो एक गाँव के स्कूल में बच्चों को पढ़ाया करते थे। हालाँकि वह स्कूल बहुत छोटा सा था। केवल एक कमरे का और उसमें मुट्ठी भर बच्चे पढ़ते थे। पर मौलवी साहब की उस सारे गाँव में इज़्ज़त बहुत थी।

गाँव वाले समझते थे उनको सब कुछ आता था सो जब भी उनको कुछ पूछना होता था तो वह उसका जवाब पाने के लिये उन्हीं के पास आते थे। इससे उनको बहुत घमंड हो गया और वह अपने आपको उस गाँव का सबसे अच्छा टीचर समझने लगे।

अगर उनसे कोई किसी भी बात पर बहस करता तो मौलवी साहब उसको इतना विश्वास दिलाते कि उसको उनकी बात माननी ही पड़ती।

[51] Qazi of Jaunpur – a folktale from UP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/uttar_pradesh_folktale_indian_folktale.htm

एक दिन मौलवी साहब अपने एक विद्यार्थी से बहुत नाराज हो गये। उन्होंने उसके कान पकड़े और उसको खूब मारा और बोले — “अगर जितनी मेहनत मैंने तेरे साथ की है उससे आधी भी मेहनत किसी गधे के साथ की होती तो वह भी आदमी बन जाता।”

उसी समय जुम्मन नाम का एक आदमी उनके स्कूल के सामने से गुजर रहा था। उसने मौलवी साहब के ये शब्द उस स्कूल की खिड़की से आते सुने।

जुम्मन एक मजदूर था और बेचारा बहुत गरीब था। वह दूसरे लोगों का सामान इधर से उधर ले जा कर अपना गुजारा करता था जैसे ईंटें, गेहूँ के बोरे, चावल, सब्जियाँ आदि।

इस सामान को ले जाने के लिये उसके पास एक गधा था। उसका यह गधा बहुत ही सुस्त था और काम बिल्कुल नहीं करना चाहता था। सो जब मौलवी साहब को उसने यह कहते सुना कि थोड़ी ही मेहनत से वह एक गधे को आदमी बना सकते हैं तो वह बहुत खुश हुआ।

उसने सोचा कि वह अपना गधा ला कर मौलवी साहब को दे देगा और वह उसको आदमी बना देंगे। तब वह गधा उसके बेटे की तरह काम करेगा। उसका बुढ़ापा सुधर जायेगा और खुशी से बीतेगा।

सो अगले दिन वह अपना गधा ले कर मौलवी साहब के पास पहुँचा और उनसे प्रार्थना की कि वह उसके गधे को आदमी बना

दें। पहले तो मौलवी साहब की समझ में नहीं आया कि वह गधे को आदमी कैसे बना सकते हैं पर जब जुम्मन ने उनको पिछले दिन की घटना बतायी तो उनकी समझ में आ गया कि मामला क्या था।

अब मौलवी साहब इतने बेवकूफ भी नहीं थे उन्होंने सोचा कि यह तो कुछ पैसे बनाने का अच्छा मौका है सो उन्होंने जुम्मन से कहा — "भाई एक गधे को आदमी बनाना आसान नहीं है।

उसके लिये मुझको कुछ खास चीज़ें चाहिये जिनको मैं कूट पीस कर तैयार करूँगा जिसमें मुझे हफ्तों लग जायेंगे। इसके अलावा उसमें पैसा भी काफी लगेगा। तब कहीं जा कर मैं किसी गधे को आदमी बना सकता हूँ।"

जुम्मन को तो एक बेटा चाहिये था सो वह मौलवी साहब की हर शर्त मानने को तैयार हो गया। मौलवी साहब ने उससे सौ रुपये माँगे तो जुम्मन ने तुरन्त ही उनको सौ रुपये निकाल कर भी दे दिये। मौलवी साहब ने जुम्मन से वे रुपये ले कर रख लिये और उससे बारह दिन बाद आने के लिये कहा।

जुम्मन सब कुछ बिल्कुल पक्का कर लेना चाहता था सो उसने कहा कि वह पन्द्रह दिन बाद आयेगा।

उधर मौलवी साहब ने भी जुम्मन का एक दो दिन तो इन्तजार किया कि शायद जुम्मन कहीं अपना मन न बदल ले पर जब चार पॉच दिन तक भी जुम्मन उनके पास नहीं आया तो उन्होंने उस गधे को पचास रुपये में बेच दिया।

उन रुपयों से उन्होंने अपने लिये कुछ नये कपड़े खरीदे जूते खरीदे और पूरे हफ्ते दावत उड़ायी।

पन्द्रह दिन के बाद जुम्मन वापस आया और उसने मौलवी साहब से अपने गधे के बारे में पूछा तो मौलवी साहब ने कुछ बात बना दी। उन्होंने कहा कि उस गधे को आदमी बनाने के लिये उन्होंने काफी सारी चीज़ें मिला दी थीं सो अब वह गधा केवल आदमी ही नहीं बल्कि जौनपुर का काज़ी बन गया है।

यह खबर सुन कर तो जुम्मन के खुशी का पारावार न रहा। वह तो एक बदला हुआ आदमी लगने लगा। वह तो तन कर खड़ा हो गया और बोला "मैं जौनपुर जा रहा हूँ अपने बेटे से मिलने।"

और यह कह कर वह पलटा और वहाँ से बाहर सड़क पर निकल गया।

जब वह जौनपुर पहुँचा तो वह वहाँ के काज़ी से मिलने के लिये तैयार हुआ। उसने काज़ी की कचहरी का रास्ता ढूँढा और दरवाजे पर खड़े दरबानों को पीछे छोड़ता हुआ सीधा अन्दर चला गया।

वहाँ का काज़ी उस समय दो दूकानदारों के बीच का झगड़ा सिलटा रहा था। जुम्मन सीधा वहाँ जा कर काज़ी के सामने खड़ा हो गया। कुछ मजाक सा करते हुए जुम्मन ने काज़ी से पूछा कि अब उसको गधे से काज़ी बन कर कैसा लग रहा था।

इस सवाल से तो काज़ी बहुत गुस्सा हो गया और उससे पूछा कि वह कौन था। जब दरबानों ने उसको पकड़ने की कोशिश की

तो उसको पकड़ना तो उनके लिये बहुत मुश्किल हो गया। वह वहाँ से बच कर भाग गया।

पर वह एक बार फिर से काज़ी के सामने गया और उससे फिर से पूछा कि उसको गधे से काज़ी बनने में कैसा लग रहा है। काज़ी की समझ में तो यह बिल्कुल ही नहीं आया कि वह कह क्या रहा था सो उसने उसको फिर पकड़वा दिया। वह रात उसने जेल में काटी।

पर इससे मामला तो नहीं सुलझता था सो अगले दिन वह फिर काज़ी की कचहरी लौटा और काज़ी से बोला — "अरे बेवकूफ गधे तुझको आदमी बनाने से क्या फायदा तुझको तो गधा ही रहना चाहिये था।"

अब तक काज़ी को पता चल गया था कि यह आदमी कोई पागल था सो उसने भी उससे कुछ मजाक करने की सोची। उसने जुम्मन से पूछा कि वह क्या चाहता था। जुम्मन ने तुरन्त कहा मुझे पाँच सौ रुपये चाहिये।

काज़ी ने उसको एक थैला दिया और अपनी कचहरी से जाने के लिये और फिर वहाँ कभी न आने के लिये कह कर उसको बाहर निकलवा दिया।

जुम्मन ने भी वह थैला लिया और अपने गाँव चला गया। गाँव जा कर उस पैसे से उसने एक और गधा खरीद लिया और अपना पहले वाला काम शुरू कर दिया।

भला हो उस जौनपुर के काज़ी का कि जिसकी सहायता से अब जुम्मन और उसकी पत्नी ने अपनी बाकी की ज़िन्दगी आराम से गुजारी। इसका मतलब है कि जुम्मन की कोशिश बेकार नहीं गयी।

List of Stories of the Book "Folktales of India-1"

1. The Tiger in the Well
2. The Blind Men and the Elephant
3. The Hare That Ran Away
4. The Jackal and the Alligator
5. The Lion Makers
6. The Magis of Friendship
7. The Monkey and the Crocodile
8. Ox Who Won the Bet
9. The Quarreling Quails
10. The Turtle Who could Not Stop Talking
11. All For a Paisa
12. The Elephants and the King of Mice
13. The King and the Foolish Monkey
14. A Panchtantra Story
15. Unwanted Guest
16. Stone Lion
17. A Trip to Heaven
18. A Sweet For Khan
19. The Foolish Crocodile
20. The Ghost That Gor Away
21. The Two Daughters
22. Why Pigs Are So Dirty
23. Fifty-Fifty
24. Work For the Demon
25. The Secret Valley
26. Qazi of Jaunpur

List of Stories of the Book “Folktales of India-2”

1. Story of a Cat and a Hen
2. Story of a Dog and a Goat
3. Story of a Tortoise and Monkeys
4. A Widow and Her son
5. Story of a Hedgehog and a Deer
6. Man and a Monkey
7. Girl Who Married a Monkey
8. The Magician Nar
9. Magic Wrap
10. Story of a Story-teller
11. Naughty Tiger
12. The Fox and the Crocodile
13. Adventure by Midnight
14. The King and Tuntuni
15. Eight Royal Trees
16. Table Turned
17. Guru Paramarth and His Five Foolish Disciples

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen **Shuk Saptati.**
No 29
By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 **Tales of Four Darvesh**
No 24
By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23
By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ

1872 **Indian Antiquary 1872**
No 34
A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 **Indian Fairy Tales**
No 30
By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1884 **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 **Folk-tales of Kashmir.**
No 11
By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 **Folktales of Bengal.**
No 4
By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
वंगाल की लोक कथाऐं

1890 **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 **Indian Nights' Entertainment**
No 32
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

Folktales of India in Hindi

2022 **Bharat Ki Lok Kathayen-1**. Collected and Translated by Sushma Gupta.
2022 **Bharat Ki Lok kathayen-2**. Collected and Translated by Sushma Gupta.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022